कुरिंजि

वर्ष 2024

कार्यालय गृह पत्रिका

रजत जयंती विशेषांक

भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT

25 वाँ अंक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा -II), तमिलनाडु एवं पुदुचेरी
लेखापरीक्षा भवन, 361 अण्णा सालै, तेनामपेट, चेन्नई- 600018

हिन्दी दिवस 2023 के अवसर पर अध्यक्षीय भाषण देते हुए प्रधान महालेखाकार श्री.को.प. आनंद

कार्यालय की गृह पत्रिका कुरिंजि 2023 (24वां अंक) का विमोचन

हिन्दी दिवस समारोह 2023 कार्यक्रम का आनंद लेते हुए कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारीगण

वर्ष 2022-23 में श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए रोलिंग शील्ड प्राप्त करते एएमजी-III के उप महालेखाकार

हिन्दी पखवाड़ा 2023 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेता

कुरिंजि परिवार

मुख्य संरक्षक श्री को.प. आनंद
प्रधान महालेखाकार

मार्गदर्शक श्री अब्राहम जुदाह शेफ़ास ए
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

सलाहकार श्रीमती जे.पुष्पलता
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

संपादक मंडल श्रीमती वी.चित्रा, हिंदी अधिकारी
श्रीमती डी.पी.लेखा, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक
श्री अभिषेक, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
श्री मोहन प्रकाश,कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
श्री जितेन्द्र कुमार जायसवाल, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

****

अंक पचीसवाँ

प्रकाशक कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), तमिलनाडु एवं पुदुचेरी

टिप्पणी संपादक मंडल को पत्रिका में छपी रचनाओं में व्यक्त रचनाकारों के विचार से सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

रचनाकार स्वयं अपनी रचनाओं की मौलिकता के लिए उत्तरदायी हैं ।

अनुक्रमणिका

क्र.स.	रचना के नाम	रचनाकार सुश्री/श्री/श्रीमती	पृष्ठ संख्या
1.	संरक्षक का सन्देश	प्रधान महालेखाकार	
2.	संपादक की कलम से	हिंदी अधिकारी	
3.	कीळडी	श्रीमती जे. पुष्पलता	1
4.	अमृत काल का भारत- सर्वांगीन विकास की ओर	श्रीमती वी.चित्रा	5
5.	मुंशी प्रेमचंद- बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार	श्रीमती डी पी लेखा	8
6.	छुट्टियाँ	श्रीमती आर. श्रीविद्या	10
7.	संघ के शासकीय कार्यों में राजभाषा हिन्दी की स्थिति	श्री अभिषेक	11
8.	संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी	श्री मोहन प्रकाश	14
9.	सरकारी क्षेत्र में ऑडिट का महत्व	श्री हेमवंती नंदन शर्मा	18
10.	धर्म – वर्तमान उपयोगिता	श्री राकेश कुमार	20
11.	दफ्तर के तनावपूर्ण कामकाज में योग का महत्व	श्री भानुप्रताप सिंह	22
12.	अगर आप भाग्यशाली हैं, तो एक पालतू जानवर आपके जीवन में प्रवेश करेगा !!!	श्रीमती विजयलक्ष्मी रविकुमार	25
13.	दो कुत्ते	श्री गगन कुमार तंवर	26
14.	जल संरक्षण	श्रीमती वी. एम. बिन्दु	28
15.	बेवजह किसी का मज़ाक ना उड़ाए	श्री पवन कुमार	30
16.	एक छोटी बच्ची की कहानी	श्री पवन कुमार	32
17.	नज़र नहीं, नज़रिया बदलिए	श्रीमती वी.राधा	34
18.	नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति	श्रीमती जी. संगीता	36
19.	बच्चों को अपना समय ज़रूर दें	श्री जितेन्द्र कुमार जायसवाल	38
20.	एक बच्चे की बुद्धिमता	श्रीमती सुबश्रीबाला	40

21.	लोगों की पहचान	श्री राजीव कुमार	41
22.	समय और सत्य का मूल्य	श्री गिरीश कुमार	43
23.	भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी का महत्व	श्री श्रीराम	45
24.	मीडिया में हिंदी: बदलते परिप्रेक्ष्य और भाषा की भूमिका	श्री वेद ब्यास बादल	48
25.	बेटियों का नसीब	श्री विजय कुमार	51
26.	जीवन बदलने वाली बातें	श्रीमती वी. रूक्मणी	53
27.	गौर से सुना जाए	श्री संजीव कुमार गिरी	54
28.	लाडली बिटिया	श्री अविनाश कुंदन	55
29.	मंजिल दूर नहीं	श्री अविनाश कुंदन	56
30.	मुझे संभालना	श्रीमती आर. श्रीविद्या	57
31.	विचार कीजिए	श्रीमती आर. श्रीविद्या	58
32.	दफ्तर का समय	श्री देवेन्द्र कुमार	59
33.	मानवता की राह	श्रीमती वी.राधा	61
34.	पहेलियाँ	श्रीमती वी.राधा	62
35.	दोस्ती	श्रीमती मंगलांबिगै	63
36.	"सीख अपनों की"	सुश्री रजनी कुमारी	64
37.	स्त्री, पुरुष और समाज	सुश्री गीतांजली शर्मा	66
38.	मैं हूँ हिंदी	श्रीमती खुशबू कुमारी	68
39.	माँ का हाथ	श्री श्रीनिवास प्रभु	69
40.	पहेलियाँ	श्रीमती आर. श्रीविद्या	70
41.	जिन्दगी जी के तो देखो	श्री विजय कुमार	71

प्रधान महालेखाकार का संदेश

हिंदी गृह पत्रिका कुरिंजि के 25वें अंक के प्रकाशन पर आप सभी को हार्दिक बधाई। राजभाषा हिंदी के प्रोत्साहन की दिशा में कुरिंजि पत्रिका हमारे कार्यालय का एक सामूहिक प्रयास है। इसमें प्रकाशित सभी रचनाओं के माध्यम से रचनाकार अपने चिंतन और अनुभवों को अभिव्यक्त करते हैं । पत्रिका के माध्यम से हिन्दी मे कार्य करने हेतु और अधिक सकारात्मक वातावरण तैयार हो सकेगा। राजभाषा हिंदी में सरकारी काम करना हमारा संवैधानिक दायित्व ही नहीं बल्कि हमारा कर्तव्य भी है। हिंदी केवल अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं बल्कि हमारी संस्कृति का प्रतिबिंब भी है।

कुरिंजि विगत 25 वर्षों से इस कार्यालय द्वारा प्रकाशित की जा रही है पत्रिका की यह यात्रा कार्यालय के पदाधिकारियों के हिंदी के प्रति प्रेम व लगाव को दर्शाता है। मुझे यह साझा करने में खुशी हो रही कि कुरिंजि के 24 वे अंक को नराकास चेन्नई द्वारा प्रेरणा पुरस्कार दिया गया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह यात्रा आगे भी जारी रहेगी। कार्यालय के पदाधिकारी पत्रिका के प्रति अपना स्नेह बनाए रखेंगे तथा अपनी रचनाओं के माध्यम से अपना योगदान करते रहेंगे।

कुरिंजि के नूतन अंक को सभी को समर्पित करते हुए आप सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

(को .प. आनंद)
प्रधान महालेखकार (लेखपरीक्षा- II)
तमिलनाडु एवं पुदुचेरी, चेन्नई

संपादक की कलम से

कार्यालय की वार्षिक गृहपत्रिका कुरिंजि के पच्चीसवें अंक सुधी पाठकों के कर कमलों में समर्पित करते हुए मुझे हर्षानुभूति हो रही है। इस अवसर पर है मुझे आप सब से यह साझा करते हुए प्रशन्नता हो रही है कि कुरिंजि पत्रिका के पिछले (चौबीसवाँ अंक) अंक को नराकस, चेन्नै की ओर से आयोजित पत्रिका प्रतियोगिता में प्रेरणा पुरस्कार प्राप्त हुआ है। आप सभी के अतुलनीय सहयोग से ही यह संभव हो सका है। कार्य की निरंतरता अपने आप में सफलता का प्रतीक है।

पाठकों के पत्रों में सम्मिलित प्रशंसा के शब्दों में निहित भावों से रचनाकारों को प्रेरणा एवं हमें अपने लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर होकर पत्रिका को और भी आकर्षक व प्रभावी बनाने में सहयोग प्राप्त होता है । आशा है कि आगे भी यह सहयोग बना रहेगा।

पत्रिका के माध्यम से कर्मचारियों को अपने सृजनात्मक एवं साहित्यिक पप्रतिभा की अभिव्यक्ति का सुअवसर मिलता है। जिससे अनेक छिपी प्रतिभाएं परिलक्षित हुई हैं। इसके फलस्वरूप रचनाकारों ने विभिन्न विषय एवं पहलुओं पर सरल और सुबोध रूप से अपना विचार व्यक्त किया है। अनुरोध है कि आप अपनी प्रतिक्रिया अवश्य प्रेषित कर इस पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास में अनवरत अपना महत्वपूर्ण योगदान देते रहेंगे।

पत्रिका के सफल सम्पादन के लिए सभी रचनाकारों एवं पत्रिका प्रकाशन में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से योगदान देने वाले सभी कार्मिकों को हार्दिक धन्यवाद देती हूँ।

आशा है कि पाठकों को पत्रिका का यह अंक रुचिकर लगेगा एवं पूर्व की भांति कुरिंजि को आपका स्नेह मिलता रहेगा।

वी चित्रा
हिन्दी अधिकारी

आपके अभिमत

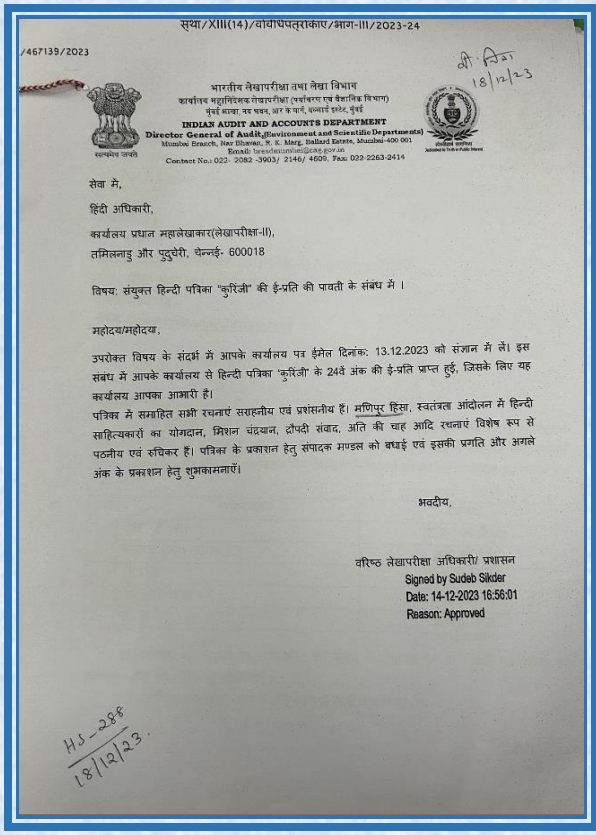

स्था/XIII(14)/वोवाचेपत्राकाए/भाग-III/2023-24

/467139/2023

भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग)
मुंबई शाखा, नव भवन, आर के मार्ग, बल्लार्ड एस्टेट, मुंबई

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
Director General of Audit,(Environment and Scientific Departmental)
Mumbai Branch, Nav Bhavan, R. K. Marg, Ballard Estate, Mumbai-400 001
Email: bseedmumbai@cag.gov.in
Contact No.: 022- 2082 -3903/ 2146/ 4609. Fax: 022-2263-2414

सेवा में,

हिंदी अधिकारी,

कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखापरीक्षा-II),

तमिलनाडु और पुदुचेरी, चेन्नई- 600018

विषय: संयुक्त हिन्दी पत्रिका "कुरिंजी" की ई-प्रति की पावती के संबंध में ।

महोदय/महोदया,

उपरोक्त विषय के संदर्भ में आपके कार्यालय पत्र ईमेल दिनांक: 13.12.2023 को संज्ञान में लें। इस संबंध में आपके कार्यालय से हिन्दी पत्रिका 'कुरिंजी' के 24वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, जिसके लिए यह कार्यालय आपका आभारी है।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। मणिपुर हिंसा, स्वतंत्रता आंदोलन में हिन्दी साहित्यकारों का योगदान, मिशन चंद्रयान, द्रौपदी संवाद, अति की चाह आदि रचनाएं विशेष रूप से पठनीय एवं रुचिकर हैं। पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को बधाई एवं इसकी प्रगति और अगले अंक के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएँ।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ प्रशासन
Signed by Sudeb Sikder
Date: 14-12-2023 16:56:01
Reason: Approved

HS-288
18/12/23

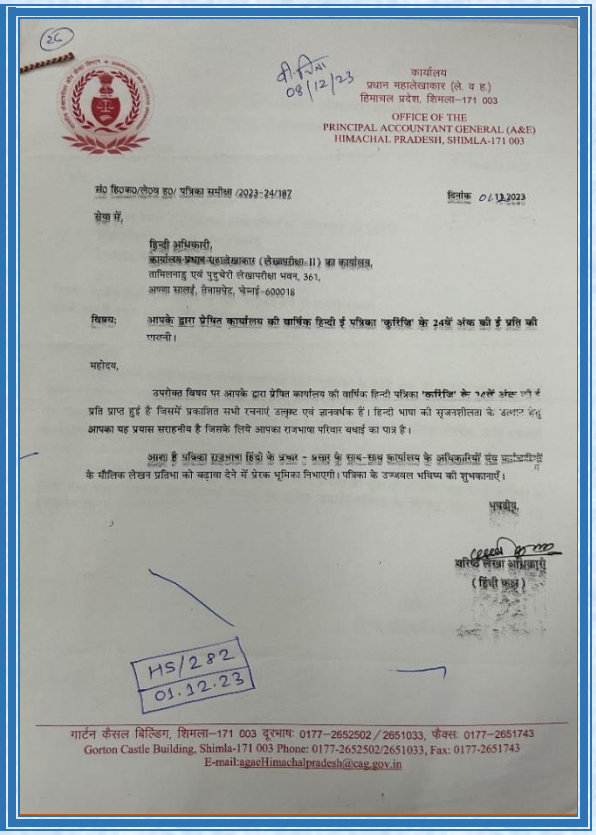

कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.)
हिमाचल प्रदेश, शिमला–171 003

OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E)
HIMACHAL PRADESH, SHIMLA-171 003

सं० हि0का0/ले0प0 हु0/ पत्रिका समीक्षा /2023-24/187 दिनांक 01.12.2023

सेवा में,

हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय,
तमिलनाडु एवं पुदुचेरी लेखापरीक्षा भवन, 361,
अन्ना सालई, तेनामपेट, चेन्नई-600018

विषय: आपके द्वारा प्रेषित कार्यालय की वार्षिक हिन्दी ई पत्रिका 'कुरिंजि' के 24वें अंक की ई प्रति की पावती।

महोदय,

उपरोक्त विषय पर आपके द्वारा प्रेषित कार्यालय की वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'कुरिंजि' के 24वें अंक की ई प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। हिन्दी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है जिसके लिये आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है।

आशा है पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार - प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं प्रशिक्षार्थियों के मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी
(हिंदी कक्ष)

HS/282
01.12.23

गार्टन कैसल बिल्डिंग, शिमला–171 003 दूरभाष: 0177–2652502 / 2651033, फैक्स: 0177–2651743
Gorton Castle Building, Shimla-171 003 Phone: 0177-2652502/2651033, Fax: 0177-2651743
E-mail:agaeHimachalpradesh@cag.gov.in

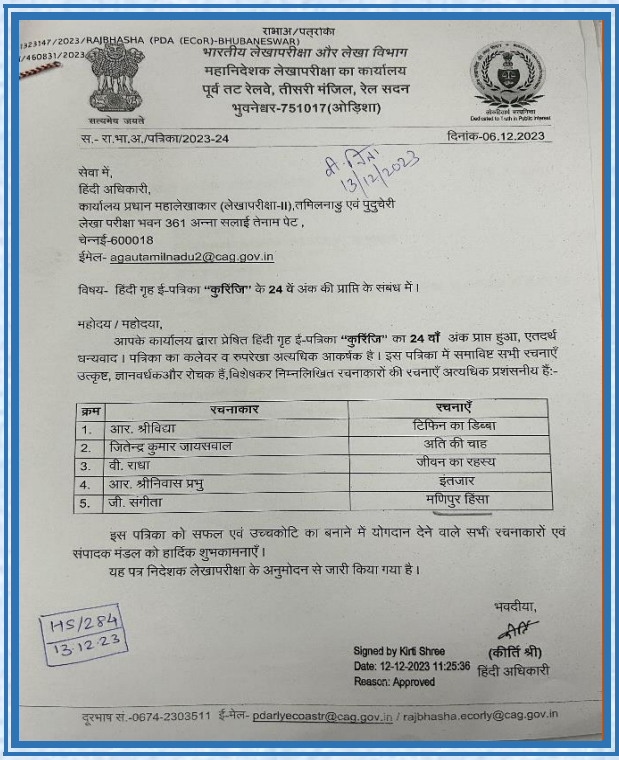

राभाअ/पत्राचार
/323147/2023/RAJBHASHA (PDA (ECoR)-BHUBANESWAR)
/460831/2023

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन
भुवनेश्वर-751017(ओड़िशा)

स.- रा.भा.अ./पत्रिका/2023-24 दिनांक-06.12.2023

सेवा में,
हिंदी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II),तमिलनाडु एवं पुदुचेरी
लेखा परीक्षा भवन 361 अन्ना सलाई तेनाम पेट ,
चेन्नई-600018
ईमेल- agautamilnadu2@cag.gov.in

विषय- हिंदी गृह ई-पत्रिका **"कुरिंजि"** के **24** वें अंक की प्राप्ति के संबंध में ।

महोदय / महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी गृह ई-पत्रिका **"कुरिंजि"** का **24 वाँ** अंक प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद । पत्रिका का कलेवर व रूपरेखा अत्यधिक आकर्षक है । इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धकऔर रोचक हैं,विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ अत्यधिक प्रशंसनीय हैं:-

क्रम	रचनाकार	रचनाएँ
1.	आर. श्रीविद्या	टिफिन का डिब्बा
2.	जितेन्द्र कुमार जायसवाल	अति की चाह
3.	वी. राधा	जीवन का रहस्य
4.	आर. श्रीनिवास प्रभु	इंतजार
5.	जी. संगीता	मणिपुर हिंसा

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि का बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

यह पत्र निदेशक लेखापरीक्षा के अनुमोदन से जारी किया गया है।

भवदीया,

(कीर्ति श्री)
हिंदी अधिकारी

Signed by Kirti Shree
Date: 12-12-2023 11:25:36
Reason: Approved

HS/284
13.12.23

दूरभाष सं.-0674-2303511 ई-मेल- pdarlyecoastr@cag.gov.in / rajbhasha.ecorly@cag.gov.in

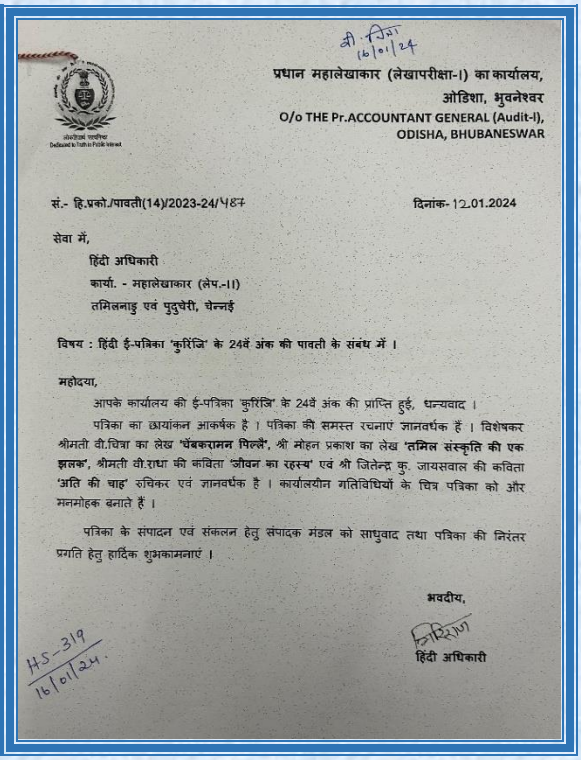

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) का कार्यालय,
ओडिशा, भुवनेश्वर
O/o THE Pr.ACCOUNTANT GENERAL (Audit-I),
ODISHA, BHUBANESWAR

सं.- हि.प्रको./पावती(14)/2023-24/५४४ दिनांक- 12.01.2024

सेवा में,
हिंदी अधिकारी
कार्या. - महालेखाकार (लेप.-II)
तमिलनाडु एवं पुदुचेरी, चेन्नई

विषय : हिंदी ई-पत्रिका 'कुरिंजि' के 24वें अंक की पावती के संबंध में ।

महोदया,

आपके कार्यालय की ई-पत्रिका 'कुरिंजि' के 24वें अंक की प्राप्ति हुई, धन्यवाद ।

पत्रिका का छायांकन आकर्षक है । पत्रिका की समस्त रचनाएं ज्ञानवर्धक हैं । विशेषकर श्रीमती वी.चित्रा का लेख **'चेंबकरामन पिल्लै'**, श्री मोहन प्रकाश का लेख **'तमिल संस्कृति की एक झलक'**, श्रीमती वी.राधा की कविता **'जीवन का रहस्य'** एवं श्री जितेन्द्र कु. जायसवाल की कविता **'अति की चाह'** रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक है । कार्यालयीन गतिविधियों के चित्र पत्रिका को और मनमोहक बनाते हैं ।

पत्रिका के संपादन एवं संकलन हेतु संपादक मंडल को साधुवाद तथा पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीय,

हिंदी अधिकारी

HS-319
16/01/24

कीळडी

श्रीमती जे. पुष्पलता

व.लेप.अ

कीळडी तमिलनाडु राज्य में शिवगंगा और मदुरै शहर के बीच स्थित एक पुरातात्विक स्थल है। कीळडी को भारत में सबसे महत्वपूर्ण पुरातात्विक खोजों में से एक माना जाता है, जो प्राचीन तमिल सभ्यता और इसके सांस्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक पहलुओं पर प्रकाश डालती है। 300 ईसा पूर्व से सन् 300 तक संगम युग की पुरावशेष की खोज के कारण इस स्थान ने महत्वपूर्ण ध्यान आकर्षित किया है।

प्राचीन तमिल संस्कृति के शहरीकरण और व्यापार प्रथाओं संबंधित समझ में कीळडी के योगदान इसके सबसे उल्लेखनीय पहलुओं में से एक है। कीळडी पर रोमन पुरावशेष की उपलब्धता से यह स्पष्ट है कि कीळडी के लोग रोमन साम्राज्य सहित अन्य क्षेत्रों के साथ व्यापार में लगे हुए थे। कीळडी ने तमिल संस्कृति और भाषा की निरंतरता में भी महत्वपूर्ण रुचि जगाई है। इस क्षेत्र का इतिहास संगम काल से भी पुराना होने का प्रमाण है । यह सक्रिय अनुसंधान का क्षेत्र बना हुआ है, चालू खुदाई से वहाँ पनपी प्राचीन सभ्यता के बारे में और भी अधिक जानकारी मिलने की उम्मीद है। कीळडी के निष्कर्षों ने दक्षिण भारत के इतिहास के बारे में लंबे समय से चली आ रही धारणाओं को चुनौती दी है, विशेषकर संगम युग के दौरान शहरीकरण और साक्षरता की स्तरीय सीमा के बारे में, जिसके कारण यह राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय महत्व का स्थल बन गया है।

कीळडी की खुदाई के प्रत्येक चरण ने प्राचीन तमिल सभ्यता, विशेषकर संगम युग के महत्वपूर्ण पहलुओं को उजागर करने में योगदान दिया है। प्रारंभिक निष्कर्षों में मिट्टी के बर्तनों के टुकड़े, टेराकोटा की मूर्तियाँ, मोती और उपकरण शामिल हैं, जो कीळडी के निवासियों के रोजमर्रा के जीवन की एक झलक पेश करते हैं । कुछ मिट्टी के बर्तनों पर पाई गई तमिल ब्राह्मी लिपि इस युग के साक्षरता का प्रमाण है। चरण 2 में उत्खनन से ईंटों की शहरी नियोजन संरचनाएँ प्राप्त हुई है। इसने दुनिया को एक जटिल जल निकासी प्रणाली से परिचित कराया, जो एक सुव्यवस्थित बस्ती तथा लोहे के औजारों और अन्य पुरावशेषों की खोज लोगों की उन्नत शिल्प कौशल का प्रमाण है । कई उत्कीर्ण बर्तनों की खोज से तमिल ब्राह्मी लिपि की संभाव्यता की भी पुष्टि होती हैं। रोमन पुरावशेष, जैसे सिक्के और एम्फ़ोरा (भंडारण जॉर), रोमन साम्राज्य के साथ कीळडी के व्यापारिक संबंधों को दर्शाते हैं।

बड़ी संख्या में तांबे की वस्तुएं, तकली ,बर्तनों के टुकडे जैसे पुरावशेषों का अनावरण किया गया है। उत्खनन के दौरान प्राप्त तमिल ब्राह्मी लिपि से उत्कीर्ण बर्तनों के द्वारा साक्षरता और लेखन प्रणाली का प्रमाण मिलता है, जबकि सोने के गहनों की खोज ने इसकी संपत्ति और समृद्धि की ओर इशारा किया। आवासीय

संरचनाओं और जल निकासी प्रणालियों और घरेलू गतिविधियों से संबंधित अन्य कलाकृतियों की खोज हुई, जिससे कीळडी के निवासियों के दैनिक जीवन का प्रमाण प्राप्त हुआ है। मिट्टी के बर्तनों के टुकड़े और पत्थर के औजार भी पाए गए। मिट्टी के बर्तनों, सिक्कों और औजारों ने प्राचीन सभ्यता की सामाजिक तथा आर्थिक संरचना को एक साथ जोड़ने में मदद की । 18,000 से अधिक कलाकृतियों की खोज की जा चुकी है , जिससे कीळडी भारत के सबसे महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थलों में से एक बन गया। प्राप्त आवासीय और औद्योगिक संरचनाएँ, बस्ती के लेआउट की अधिक विस्तृत तस्वीर पेश करती हैं जो कीळडी के शहरीकरण, व्यापार और सांस्कृतिक प्रथाओं को समझने और बस्ती की ऐतिहासिक समयरेखा को परिष्कृत करने में योगदान करते हैं।

पुरावशेषों को प्रदर्शित करती कीळडी संग्रहालय के विभिन्न प्रकार की गैलेरियों से कीळडी पुरातात्विक स्थल पर उजागर प्राचीन तमिल सभ्यता का परिज्ञान परिलक्षित होता हैं। कीळडी संग्रहालय के कुछ प्रमुख गैलेरीयों में से कृषि और जल प्रबंधन गैलरी कृषि पद्धतियों और परिष्कृत जल प्रबंधन प्रणालियों पर केंद्रित है जो कीळडी में बसे लोगों की आजीविका का अभिन्न अंग थे। खेती के उपकरण और उपकरण जैसे हल, दरांतीऔरअन्य कृषि उपकरण, फसल की खेती मॉडल और त्रिविम प्रदर्शन (डाइअरैम) इस क्षेत्र में खेती की जाने वाली फसलों के प्रकारों प्राचीन तमिल लोगों की कृषि प्रथाओं को दर्शाते हैं। अनाज और खाद्य पदार्थों के भंडारण के लिए उपयोग किये गए भंडारण जार और अन्न भंडार अधिशेष उपज के संरक्षण और प्रबंधन के प्रमाण प्रदान किए हैं। जल निकासी प्रणालियों और सिंचाई चैनलों के डिजाइन और कार्यान्वयन भी शामिल है। वर्षा जल संचयन गैलरी प्राचीन काल में उपयोग की जाने वाली वर्षा जल संचयन तकनीकों को प्रदर्शित करती है, जिसमें दिखाया गया है कि कैसे उस समुदाय ने अर्ध-शुष्क वातावरण में जल संसाधनों का कुशलतापूर्वक प्रबंधन किया।

लाल मिट्टी के विविध बर्तनों के पुरावशेषों मुख्यतः रोजमर्रा की घरेलू और संभवतः अनुष्ठानिक कार्य हेतु उपयोग किए गए भंडारण जार, खाना पकाने के बर्तन, महीन और मोटे मिट्टी के बर्तन आदि प्रदर्शित की गई हैं। ये कलाकृतियाँ प्राचीन कुम्हारों के कौशल और रचनात्मकता को प्रदर्शित करती हैं। चित्रों से सजाए गए मिट्टी के बर्तनों में जटिल डिजाइन और पैटर्न बनाने के लिए प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया जाता था। तमिल ब्राह्मी लिपि से उत्कीर्ण मिट्टी के बर्तनों का प्रदर्शन सिरेमिक उद्योग के कलात्मक पहलुओं तथा सजावटी तकनीकों पर प्रकाश डालता हैं। पके हुए बर्तन, जटिल डिजाइनों से सजाए गए बड़े सिरेमिक बर्तन जिनका उपयोग उनके अंत्येष्टि प्रथाओं में किया जाता था, उन्हें महत्वपूर्ण खोजों में गिना जा रहा है । यह गैलरी मिट्टी के बर्तन बनाने संबंधित संवादात्मक या मल्टीमीडिया डिस्प्ले प्रदान करती है जहां आगंतुक प्राचीन मिट्टी के बर्तन बनाने की तकनीकों के वीडियो या सिमुलेशन देख सकते हैं। बुनाई और मोती गैलरी प्राचीन तमिल सभ्यता की समृद्ध वस्त्र परंपराओं और मनके से बनाने वाली कलाकृतियों के शिल्प कौशल को प्रदर्शित करती है, जो संगम युग के दौरान बुनाई और मनका उत्पादन से संबंधित सांस्कृतिक प्रथाओं को दर्शाती है। लूम मॉडल और बुनाई उपकरण जैसे स्पिंडल, बॉबिन और अन्य बुनाई उपकरण विभिन्न प्रकार के कपड़े बनाने के

लिए कपडे उत्पादन में शामिल तकनीक और शिल्प कौशल की एक झलक प्रदान करती हैं। आगंतुकों को उस समय के फैशन और कपड़ों की प्रथाओं को समझने में मदद करने के लिए मूल निवासियों द्वारा पहने गए पारंपरिक वस्त्रों के चित्र रखे गए हैं। गैलरी विभिन्न प्रकार के कपड़ों के सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व को भी दर्शाती है जिसमें विशेष अवसरों या समारोहों में पहने जाने वाले कपडे भी शामिल हैं। मनके बनाने में उपयोग किए जाने वाले कच्चे माल जैसे अर्ध-कीमती रत्नों, कांच, टेराकोटा, हाथी दांत और सीप के नमूने को इस विवरण के साथ प्रदर्शित किए गए हैं कि उन्हें कैसे प्राप्त और संसाधित किया गया था। यह मोतियों को आकार देने, पॉलिश करने और ड्रिल करने के लिए उपयोग की जाने वाली जटिल तकनीकों पर भी प्रकाश डालता है।

यह गैलरी बीड-मेकिंग कार्यशाला के माध्यम से संवादात्मक अनुभव प्रदान करती है, जो आगंतुकों को मल्टीमीडिया प्रेजेंटेशन के सहारे मोती बनाने या बुनाई पैटर्न बनाने में अपना हाथ आजमाने का अवसर प्रदान करती है। समुद्री व्यापार गैलरी प्राचीन तमिल सभ्यता के आर्थिक और सांस्कृतिक विकास में समुद्री व्यापार की महत्वपूर्ण भूमिका को प्रदर्शित करती है। यह गैलरी व्यापक समुद्री व्यापार नेटवर्क को दर्शाती है जो कीळडी और दुनिया के अन्य क्षेत्रों को जोड़ती थी। महत्वपूर्ण समुद्री व्यापार मार्गों संबंधित विस्तृत नक्शे और मॉडल हैं जो कीळडी को रोमन साम्राज्य, दक्षिण पूर्व एशिया और मध्य पूर्व के प्रमुख बंदरगाहों से जोड़ते हैं । यह कावेरीपट्टिनम (पूम्पुहार) जैसे प्राचीन तमिल बंदरगाह शहरों के लेआउट, संरचना और व्यस्त गतिविधियों को भी दर्शाता है। कीळडी और अन्य तमिल क्षेत्रों से निर्यात किए गए प्राथमिक सामानों के नमूने, जिनमें कपडे, मसाले, मोती, हाथी दांत और अर्ध-कीमती रत्न शामिल थे, जिनकी विदेशी बाजारों में अत्यधिक मांग थी और इस क्षेत्र की समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

प्राचीन तमिल सभ्यता की संपत्ति और महानगरीय प्रकृति और दूर की संस्कृतियों के साथ इसके संबंधों को प्रतिबिंबित करने के लिए रोमन सिक्के, कांच की चीजें और एम्फ़ोरा (बड़े भंडारण जार) जैसी विभिन्न आयातित कलाकृतियाँ भी प्रदर्शित किए गए हैं। इस गैलरी में प्रदर्शित रोमन कलाकृतियाँ, जैसे कि सिक्के, मिट्टी के बर्तनऔरअन्य वस्तुएं रोमन साम्राज्य और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के साथ व्यापार संबंधों के ठोस प्रमाण प्रदान करती हैं, जिसमें तमिल क्षेत्र में नए कला रूपों, प्रौद्योगिकियों और विचारों की शुरूआत संबंधित पुरावशेषों भी शामिल है। तमिल व्यापारियों द्वारा उपयोग किए गए प्राचीन जहाजों और नौकाओं के मॉडल जो लंबी दूरी के समुद्री मार्गों को जोडने में सक्षम थे, उस समय की उन्नत जहाज निर्माण तकनीकों और सामग्रियों को प्रदर्शित करते हैं।

पॉसटाइम गैलरी मनोरंजक गतिविधियों, खेलों और सांस्कृतिक प्रथाओं की खोज के लिए समर्पित है जो प्राचीन तमिल समाज में दैनिक जीवन का एक अभिन्न अंग हैं। यह गैलरी सामाजिक संपर्कों, रचनात्मकता और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों पर प्रकाश डालते हुए मूल निवासियों ने अपना ख़ाली समय कैसे बिताया, इसका विवरण भी प्रदान करती है । बोर्ड गेम्स में पारंपरिक बोर्ड गेम जैसे पल्लंगुळी (एक मंकला प्रकार का खेल), आडू पुली आटम (बाघों और बकरियों से जुड़ा एक रणनीति खेल) के पुनर्निर्माण और प्रदर्शन शामिल

हैं। पारंपरिक बोर्ड गेम के लिए उपयोग किए जाने वाले पासा और खेल की चीजें टेराकोटा, शेल या हाथी-दांत जैसी सामग्रियों से बनाए गए थे।

इस गैलरी में आमतौर पर तमिल कविता में प्रख्यात प्रेम, युद्ध और प्रकृति के विषयों पर लिखि प्रसिद्ध संगम कविताएँ शामिल हैं, जो तमिल लोगों की समृद्ध साहित्यिक परंपरा का प्रमाण बनता है। इस गैलरी में "विल्लू पाट्टू" (कहानी कहने) का एक मॉडल भी है जिसमें महाकाव्य कहानियों, मिथकों और ऐतिहासिक घटनाओं को अक्सर सरल संगीत वाद्ययंत्रों के साथ प्रस्तुत किया जाता है, जो मौखिक परंपरा के महत्व को दर्शाता है।

कीळडी के पुरातात्विक निष्कर्ष, जिसमें इसकी कलाकृतियाँ, शिलालेख और बस्ती- पैटर्न शामिल हैं, इसके निवासियों के दैनिक जीवन, शिल्प कौशल और सामाजिक संगठन में अमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। इतिहासकारों और पुरातत्वविदों के अथक प्रयत्न के माध्यम से, कीळडी न केवल ऐतिहासिक रुचि की एक साइट के रूप में उभरी है, बल्कि दक्षिण भारतीय इतिहास को समझने की कुंजी के रूप में उभरी है। कीळडी में चालू अनुसंधान और संरक्षण प्रयास समकालीन समाज को अपनी प्राचीन जड़ों से जोड़ने में अपने महत्व पर ज़ोर देते हैं। यदि हम इन प्राचीन अवशेषों की खोजने और समझाने के प्रयास जारी रखते हैं तो कीळडी निस्संदेह ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विद्वता की आधारशिला रहेगी, जो अतीत की हमारी समझ और वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों पर इसके प्रभाव को समृद्ध करेगी।

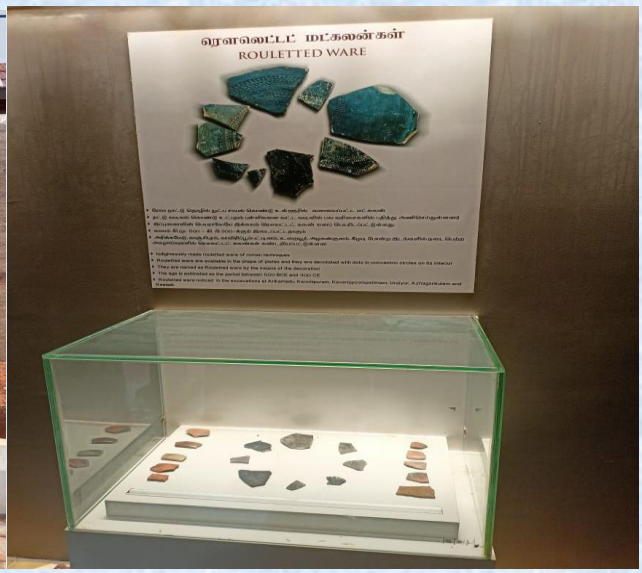

अमृत काल का भारत- सर्वांगीन विकास की ओर

श्रीमती वी.चित्रा
हिंदी अधिकारी

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने वर्ष 2021 में भारत के 75 वें स्वतंत्रता दिवस पर पहली बार अपने संबोधन में अमृत काल शब्द का प्रयोग किया था। अपने संबोधन में उन्होंने कहा "अमृत काल का लक्ष्य भारत और उसके नागरिकों को समृद्धि की नई ऊँचाइयों पर ले जाना है। अगले पच्चीस साल भारत का स्वर्णिम काल है। किसी भी राष्ट्र के जीवन में, इतिहास राष्ट्र को अपनी विकास यात्रा में तेजी से आगे बढने का अवसर देता है।" भारत में अभी अमृत काल चल रहा है और यह भारत के इतिहास का वह काल है जब देश एक लंबी छलाँग लगाने जा रहा है। एक अखंड भारत का निर्माण करना जहाँ सुविधाओं का स्तर गाँवों और शहरों को विभाजित न करें, एक निष्पक्ष भारत का निर्माण करना जहाँ सरकार नागरिकों के जीवन में अनावश्यक हस्तक्षेप न करें, एवं दुनिया के आधुनिक और अत्याधुनिक इंफ्रास्ट्रक्लर के साथ एक महान भारत का निर्माण करना अमृत काल का लक्ष्य है।

भारत निम्नलिखित क्षेत्रों में विकास की ओर तेज़ी से बढ़ रहा है।

<u>समाज के गरीबों और वंचितों के लिए योजनाएं :</u>

1. स्वच्छ भारत मिशन के तहत दूरे छोटे-छोटे गाँवों में भी करोड़ों शोचालयों का निर्माण किया गया है और इसमें शत -प्रतिशत का लक्ष्य हासिल करने तक यह काम जारी रहेगा। यह महिलाओं के सशक्तिकरण में एक बहुत महत्वपूर्ण कड़ी है।
2. कोविड़ -19 के दौरान भी 3 करोड़ से अधिक महिलाओं को वित्तीय सहायता प्रदान की गई।
3. प्रधानमंत्री (पीएम) आवास योजना के तहत 3 करोड़ से अधिक शहरी और ग्रामीण मकानें बनाए गए हैं।
4. सौभाग्य योजना के तहत देश दूरस्त गाँव जहाँ कुछ साल पहले तक बिजली की पहुँच नहीं थी में भी सभी घरों को बिजली कनेक्शन उपलब्ध कराया गया है और लक्ष्य प्राप्त कर लिया गया है।
5. जल जीवन मिशन के अंतर्गत हर घर में नल से पानी पहुंचाने का लक्ष्य की आगे बढ़ रहे हैं और जल्द ही इस लक्ष्य की प्राप्ति में सफलता प्राप्त हो जाएगा।
6. अनुसूचित जाति / जनजाति और अन्य पिछड़े वर्ग में आने वाले समुदायों को सशक्त करने के लिए स्टैंड अप इंडिया योजना के तहत वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है।
7. स्ट्रीट वेंडर आत्मनिर्भर निधि के तहत करोड़ो की राशि स्वीकृत की जा रही है ।

किसानों के लिए कल्याण योजनाएं

1. कृषि बजट में 5.6 गुणा से अधिक की वृद्धि की गई हैं।
2. कृषि सिंचाई योजना के तहत करोड़ों की राशि आबंटित की गई है।
3. न्यूनतम समर्थन मूल्य में 50% से अधिक की वृद्धि को गई हैं। दालों की खरीद पर भी न्यूनतम समर्थन मूल्य में वृद्धि की गई है।
4. कुल उर्वरक अनुदान में भी वृद्धि की गई है।

5 किसानों को मुद्रा स्वास्थ्य कार्ड वितरित किए गए हैं।

6. किसान क्रेडिट कार्ड के माध्यम से किसानों को ऋण जारी किए गए है।
7. फसल बीमा योजना के तहत लाभार्थियों को करोड़ों की राशि वितरित किए गए हैं।

स्वास्थ्य योजनाएं:-

1. भारत में कई आयुष्मान भारत स्वास्थ्य और कल्याण केंद्र स्थापित किए गए हैं।
2. सस्ती दवाएं उपलब्ध कराने के लिए जन औषधी केंद्रों एवं अमृत फार्मोसियों का निर्माण किया गया है।
3. कई नए एम्स और अन्य मेडिकल कॉलेजों का निर्माण किया गया है।
4. बीमारियों से बचाव के लिए कई गर्भवती माताओं और बच्चों का टीकाकरण किया गया है।

विदेश नीति और राष्ट्रीय सुरक्षा :-

1. आत्मनिर्भर डिफेंस के तहत रक्षा निर्यात में वृद्धि हुई है।
2. रक्षा स्टार्टअप के लिए रु 500 करोड़ स्वीकृत।

इंफ्रास्ट्रक्चर की गति और मानक

1. सड़क परिवहन और राजमार्ग बजट में 500% की वृद्धि
2. ग्रामीण सड़क संपर्क 99% कवरेज तक पहुँच गया है।
3. केन्द्र सरकार ने 35 केन्द्रीय सरकारी विभागों को जोड़ने वाला गतिशक्ति मिशन शुरु किया है।
4. मेट्रो कनेक्टिविटी बढ़ाई गई है।

5-राजमार्ग निर्माण की गति बढ़ गई है।

6. विश्वस्तरीय वंदे भारत ट्रेनों के 15 देन गतिमान हैं।
7. 74 हवाई अड्डों का संचालन शुरू किया गया है।
8. 111 जलमार्गों को राष्ट्रीय जलमार्ग घोषित किया गया है।

भारत का तकनीकी कौशल :-

1. भारत ने एक साथ 104 उपग्रहों को लॉन्च करके एक अटूट विश्वरिकार्ड बनाया ।
2. यूपीआई लेनदेन की संख्या में वृद्धि हुई है।
3. इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या दोगुने से अधिक दर्ज की गई है।
4. ग्रामीण डिजिटल साक्षरता अभियान के तहत कई उम्मीदवारों का प्रमाणन।
5. भारतीय रूपे कार्ड के जरिए भारत के पहले ग्लोबल पेमेंट नेटवर्क से जुड़ चुके हैं।

6. JAM त्रिमूर्ति की सफलता अभूतपूर्व है (जनधन, आधार और मोबाइल) अधिकांश भारतीय वयस्क, आधार धारक हैं और एक विशिष्ट और संरक्षित पहचान के वाहक हैं। आधार के उपयोग के कारण, सामाजिक और आर्थिक प्रगति लाने में सूचना और संचार प्रौद्योगिकियां महत्वपूर्ण रही है जिसमें सरकारें समानता और विवरणात्मक न्याय से सम्बंधित चिंताओं को दूर करने हेतु कड़ी मेहनत कर रही है।

7. भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या दोगने से अधिक दर्ज की गयी है।

8. कई भारतीय रूपए कार्ड के जरिए भारत के पहले ग्लोबल पेमेंट नटवर्क से जुड़ चुके है।

<u>पर्यावरण और स्थिरता</u>

1. सौर ऊर्जा की स्थापित क्षमता में वृद्धि।
2. भारत के पास दुनिया की सबसे बड़ी स्थापित नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता।
3. कृषि पम्पों को सोलराइज करके किसानों को स्वच्छ ऊर्जा उपलब्ध करवाई जा रही है।
4. ऊर्जा बचत के प्रोत्साहन देने के लिए उजाला योजना के अंतर्गत एल ई डी बल्ब वितरित किए गए।
5. दुनिया की पहली अंतर-महाद्वीपीय वनीय जीव ट्रांसलोकेशन परियोजना प्रोजेक्ट लॉन्च की गयी।
6. हरित हाइड्रोजन ईंधन के उत्पादन में सहायता करने के लिए राष्ट्रीय हाइड्रोजन मिशन की घोषणा की गयी।

मुंशी प्रेमचंद- बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार

श्रीमती डी पी लेखा
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

प्रेमचंदजी हिंदी साहित्य के बुहमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार थे। वे हिंदी साहित्य के बेहतरीन उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार के रूप में जाने जाते हैं। मुंशी प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 में उत्तर प्रदेश के वाराणसी के लमही नामक गाँव में हुआ था। उनका वास्तविक नाम धनपत राय था। प्रेमचंदजी पहले नवाब राय के नाम से उर्दू में लिखा करते थे।

हिंदी साहित्य मे प्रेंमचंद युग भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और समाज सुधार संबंधी आंदोलनों का काल था। अंग्रेज़ी शासन और शिक्षा एवं सभ्यता के प्रभाव से हमारे समाज में व्याप्त कुरितियों, अंधविश्वासों एवं धार्मिक आडंबरों के खिलाफ विद्रोह से एक नवीन चेतना और गौरव की भावना का उदय हो रहा था। प्रेमचंदजी का साहित्य सामाजिक जागरूकता के प्रति प्रतिबद्ध था। उनका साहित्य आम आदमी का साहित्य है। अंग्रेज़ी सरकार ने उनका पहला कहानी संग्रह 'सोजे वतन ' को रोक लगा दिया, तब उन्हें नवाब राय का नाम छोड़ना पड़ा।

प्रेमचंदजी ने हिंदी साहित्य को अपनी कृतियों के रूप में अमूल्य निधि दी है, जो समाज को नई दिशा देने का काम करता है। उन्होंने हिंदी भाषा का आधुनिकीकरण कर साहित्य में नई राह प्रशस्त किया, यह सराहनीय है। प्रेमचंद ने पारंपरिक, रोमांटिक और पौराणिक विषयों से हटकर जीवन से जुड़ी विषयों पर लिखा और वास्तविक घटनाओं को कहानी से जोड़ा । अपनी यथार्थवादी रचनाओं से समाज को एक नई दिशा दी । अपने लेखन के माध्यम से इन्होंने ग्रामीण इलाकों में रहने वाले लोगों की समस्याओं को उजागर किया, गरीबी, असमानता, छुआ-छूत, महिला सशक्तिकरण जैसे सामाजिक मुद्दों पर लिखा और बदलाव को प्रेरित किया। प्रेमचंद जी के उत्कृष्ट रचनाओं से प्रभावित होकर बंगाल के विख्यात उपन्यासकार शरदचंद्र चट्टोपाध्याय ने इन्हें 'उपन्यास सम्राट' की उपाधि दी थी ।

प्रेमचंद जी साहित्य को समाज का दर्पण मानते थे । उन्होंने समाज में व्याप्त ज्वलंत समस्याओं को देखा, जिसमें वह स्वयं रह रहे थे और उन्हें अपने उपन्यासों की विषयवस्तु बनाया । प्रेमचंद का पहला उपन्यास 'सेवासदन' था। सेवासदन में नारी जीवन की समस्याओं के साथ-साथ समाज के धर्माचार्यों , सुधारकों के पाखंड व ढोंग का पर्दा फाश किया है, उनकी चरित्र हीनता, खोखले आदर्श को चित्रित किया है।

निर्मला,गबन, रंगभूमि, कर्मभूमि, प्रेमाश्रम ,कायाकल्प , गोदान आदि प्रेमचंदजी के अन्य प्रमुख उपन्यास हैं। 'निर्मला' में बेमेल विवाह की समस्या को प्रदर्शित किया था। 'गबन' में आभूषण की लालसा के बारे में चित्रित किया गया है। 'प्रेमाश्रम' तथा 'कायाकल्प' में प्रेमचंद ने हिंदू-मुस्लिम एकता तथा धार्मिक विद्वेष की समस्या को अंकित किया है। महात्मा गांधीजी के असहयोग आंदोलन का इन पर असर पड़ा। इसी भावना को लेकर प्रेमचंदजी ने 'कर्मभूमि' उपन्यास की रचना की। 'गोदान' प्रेमचंद का वह उपन्यास है जिसे कृषक जीवन का महाकाव्य कहा गया है और प्रेमचंदजी के सबसे लोकप्रिय उपन्यास भी है। 'गोदान' में भारतीय किसानों के शोषण और उनके संघर्ष की

कहानी है। वे उनकी पीड़ा, शोषण , कठिनाइयों से भली-भांति अवगत थे और चाहते थे कि जमीनदारी प्रथा समाप्त हो जो किसानों के शोषण के लिए बहुत कुछ उत्तरदायी थीं।

प्रेमचंदजी ने अपने पात्रों में अंतर्द्वंद एवं मनोवैज्ञानिकता का समावेश करके उन्हें कल्पना लोक से उतारकर यथार्थ के धरातल पर स्थापित किया है। अत: मुंशी प्रेमचंद को 'हिंदी उपन्यास सम्राट' कहना सर्वथा उचित है।

प्रेमचंदजी की कहानियो में विषय और शिल्प की विविधता देखने को मिलती है। उन्होंने मानव जीवन के सभी वर्गों के साथ-साथ पशु-पक्षियों को भी अपनी कहानियों में मुख्य पात्र के रूप में सहेजा है। उनकी कहानियों में मज़दूरों, स्त्रियों, किसानों , दलितो आदि की समस्याओं को गंभीरता के साथ चित्रित किया गया है। उन्होंने समाज-सुधार, स्वाधीनता संग्राम, देश प्रेम आदि विषयों से संबंधित अनेकों कहानियां लिखी हैं। प्रेमचंद की प्रमुख कहानियों में पंच परमेश्वर, पूस की रात, कफ़न, ईदगाह, ठाकुर का कुआँ, बड़े भाई साहब, बूढ़ी काकी आदि प्रमुख हैं।

प्रेमचंद जी एक संवेदनशील कहानीकार ही नहीं थे, बल्कि वे जागरूक नागरिक व संपादक भी थे। पत्रकारिता की महत्ता को स्वीकार कर उन्होंने 10 मार्च 1930 को 'हंस' पत्रिका के प्रकाशन का शुभारंभ किया । प्रेमचन्द के सम्पादकत्व में यह पत्रिका हिन्दी की प्रगति में अत्यन्त सहायक सिद्ध हुई। प्रेमचन्द ने 'जागरण' , माधुरी जैसे पत्र-पत्रिकाओं का संपादन भी किया था । प्रेमचंद ने नाटक के क्षेत्र में भी अपना अमिट छाप छोड़ा है। जिनमें संग्राम, कर्बला, प्रेम की वेदी प्रमुख हैं।

साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंदजी का योगदान अतुलनीय है। उन्होंने कहानी और उपन्यास के माध्यम से लोगों को साहित्य से जोड़ने का काम किया। उनके द्वारा लिखे गए उपन्यास और कहानियां आज भी प्रासंगिक है । इस महान साहित्यकार का निधन 8 अक्तूबर 1936 को हुआ। लेकिन अपनी कृतियों के माध्यम से अब तक जीवित है ।

****

"जीनन का वास्तविक सुख,
दूसरों को सुख देने में है
उनका सुख लूटने में नहीं " - मुंशी प्रेमचंद

छुट्टियाँ

श्रीमती आर. श्रीविद्या
व.लेप.अ.

छुट्टियाँ हर किसी के जीवन का बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है, खास कर बच्चों के लिए। चाहे जितने भी बड़े हो जाएं बचपन में बिताए छुट्टियों के दिन हमेशा यादगार रहते हैं । हम में से कुछ लोग छूटियों के दौरान आराम करते हैं, कोई मनोरंजन करता है कोई अपने बचे हुए काम को पूरा करता है, कोई अपनों या दोस्तों से मिलने निकाल पड़ता है या उन्हे घर पर बुला लेता है और कोई अपने शौक पूरा करने में इसका उपयोग करते हैं। छुट्टी हमें मानसिक और शारीरिक बल प्रदान करता है । छुट्टियाँ मजेदार होती हैं खासकर गर्मी की छुट्टियाँ जो लंबी होती हैं । साल भर इसका इंतजार रहता है। छात्रों की तरह कर्मचारी भी अवकाश की प्रतीक्षा करते हैं। कर्मचारी लंबे सप्ताहांत पर नजर रखते हैं । नए साल का कलेंडर आते ही कर्मचारी उस साल की छुट्टियाँ देखना शुरु करते हैं । बच्चे और पुरुष तो खेलने में, देर तक सोने में, अच्छे खाने को आराम से खाने में , दोस्तों से गप्पे मारने में, फिल्म या मनोरंजन में बिताते हैं । लेकिन स्त्रियों को छुट्टियों में और अधिक कार्य होता है। स्त्रियों की अधिकांश छुट्टियाँ घर संभालने में, अच्छा -अच्छा खाना पकाने एवं परोसने में, सफाई में निकल जाती है, इसके अलावा अगर समय बचता है तो परिवार के साथ समय बिताना, उनके इच्छा की पूर्ति करने में छुट्टियाँ बीत जाती हैं।

समय के साथ साथ, छूट्टी मनाने की तरीके भी बदल रहे है। पहले तो छुट्टियाँ अपने परिवार और दोस्तों के साथ जुड़ने की बढ़िया समय होता था। सभी मिलकर नाना-नानी या दादा-दादी के घर पर गर्मी की छुट्टियाँ मनाते थे। माताएँ भी थोड़ा आराम करती थी। पहले गर्मी की छुट्टियों में सगे संबंधियों के साथ मिलकर रहना, गाँव मे आराम से छुट्टियाँ मनाना, साथ साथ खेलना, नदी मे साथ नहाना, मंदिर जाना, फिल्म देखना, बाहर घूमना इत्यादि होता था अब वो सिर्फ यादें बन गई है।

अब संयुक्त परिवार के बिखर जाने से छोटे परिवारों में तो बच्चे छुट्टियों मे समर कैंप में जाते हैं। स्कूल की किताबें न सही, दूसरे पाठ्यक्रम या अन्य कक्षाओं में भाग लेते है। अब गर्मी की छुट्टियों में बच्चों का एक हफ्ता भी बाहर जाना मुश्किल हो गया है। आजकल माता-पिता दोनों काम पर जाने से बच्चों की छुट्टियाँ घर पर ही बीत जाती हैं। शहरों में मॉल संस्कृति के आगमन से, बच्चे फन सिटी में अपनी छुटी मनाना पसंद करते हैं। थीम-पार्क, समुद्र तट पर जाना अच्छे होटल मे खाना, अच्छे सिनेमाघर में फिल्म देखने में रुची बढ़ गई है। इन सबके बावजूद, छुट्टी तो छुट्टी है। भाग दौड़ की जिन्दगी में छुट्टी थोड़ा मन और तन को विश्राम और आनंद प्रदान करती है। परिवार के सदस्य मिलकर समय बिता सकते है। जो भी शौक हो, उसके प्रति समय देकर पूरा कर सकते है। सभी उम्र के व्यक्तियो का हमेशा छुट्टियों का इतजार रहता है।

संघ के शासकीय कार्यों में राजभाषा हिन्दी की स्थिति

श्री अभिषेक

क. अनुवादक

भारत एक बहुभाषी देश है, जहाँ अनेक भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं। भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को आधिकारिक दर्जा प्राप्त है, लेकिन इनमें से हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है। भारत सरकार ने संविधान के अनुच्छेद 343 के अंतर्गत हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में मान्यता दी है। इसका उद्देश्य भारत के संघीय शासन व्यवस्था में एक सामान्य भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग कर, शासकीय कार्यों को सरल, सुगम और व्यापक रूप से समझने योग्य बनाना है। इसके साथ ही अंग्रेज़ी को सहायक राजभाषा के रूप में मान्यता दी गई है, जो हिन्दी के साथ साथ शासकीय कार्यों में प्रयुक्त होती है।

संविधान द्वारा हिन्दी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिए जाने के बाद, यह अपेक्षा की गई थी कि सरकारी कार्यों में हिन्दी का प्रयोग बढ़ेगा और अंग्रेज़ी की निर्भरता कम होगी। हालांकि, वास्तविक स्थिति में हिन्दी के प्रयोग को लेकर कुछ चुनौतियाँ और अवरोध उत्पन्न हुए हैं, जो इस प्रक्रिया को पूर्ण रूप से लागू करने में बाधक बने हुए हैं।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के समय से ही हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने की माँग उठी थी। महात्मा गांधी और अन्य राष्ट्रवादी नेताओं ने हिन्दी को सम्पर्क भाषा मानते हुए इसे राष्ट्रीय एकता के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया। संविधान सभा में भी हिन्दी को राजभाषा बनाने को लेकर गहन चर्चा हुई थी। अंततः, 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को राजभाषा के रूप में अपनाया गया और इसे हिन्दी दिवस के रूप में मनाने की परंपरा शुरू हुई।

भारतीय संविधान का अनुच्छेद 343 स्पष्ट रूप से कहता है कि "संघ की राजभाषा देवनागरी लिपि में हिन्दी होगी।" इसके साथ ही, अनुच्छेद 344 के अंतर्गत राजभाषा आयोग का गठन किया गया, जो समय-समय पर राजभाषा हिन्दी के प्रयोग और विकास के बारे में सरकार को सलाह देता है। अनुच्छेद 351 भी महत्वपूर्ण है, जो हिन्दी के विकास की बात करता है। यह अनुच्छेद कहता है कि संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार करे, उसका विकास करे ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। इसका उद्देश्य है कि हिन्दी में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली का विकास हो और यह अन्य भारतीय भाषाओं के साथ सम्पर्क भाषा के रूप में उभर सके।

संविधान द्वारा हिन्दी को राजभाषा का दर्जा देने के बावजूद, शासकीय कार्यों में हिन्दी के प्रयोग की स्थिति संतोषजनक नहीं रही है। शासकीय कार्यालयों, मंत्रालयों और विभिन्न संघीय एजेंसियों में अभी भी अंग्रेज़ी का वर्चस्व अधिक देखने को मिलता है। विशेषकर तकनीकी और उच्च प्रशासनिक कार्यों में अंग्रेज़ी की प्रमुखता बनी हुई है। भारत में अंग्रेज़ी को एक वैश्विक भाषा के रूप में देखा जाता है, जिसका व्यापारिक, वैज्ञानिक और तकनीकी क्षेत्रों में व्यापक उपयोग है। सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों के प्रशिक्षण अधिकतर अंग्रेज़ी में होते है, जिससे शासकीय कार्यों में इसका प्रयोग बढ़ा हुआ है।

शासकीय कार्यों में हिन्दी के प्रयोग के लिए आवश्यक प्रशिक्षण और संसाधनों की कमी भी एक बड़ा कारण है। कई सरकारी अधिकारियों को हिन्दी में दक्षता प्राप्त नहीं है, जिससे वे अंग्रेज़ी का अधिक उपयोग करते हैं। हिन्दी में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली का विकास अवश्य हुआ है, लेकिन इसे व्यवहार में उतारना कठिन होता है। जटिल शब्दों के कारण सरकारी दस्तावेज़ और रिपोर्ट हिन्दी में तैयार करने में परेशानी होती है। कई बार अंग्रेज़ी के शब्दों का सीधे हिन्दी में अनुवाद किया जाता है, जो प्रायः अटपटे और कठिन समझे जाते हैं।

भारत के विभिन्न राज्यों में स्थानीय भाषाएँ और बोलियाँ प्रमुख रूप से प्रयोग होती हैं। दक्षिण भारतीय राज्यों, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र और पंजाब जैसे राज्यों में हिन्दी के प्रति विशेष झुकाव न होने के कारण, शासकीय कार्यों में अंग्रेज़ी का प्रयोग अधिक होता है। हिन्दी को संघीय स्तर पर एक सामान्य भाषा के रूप में स्थापित करने में यह एक बड़ी चुनौती रही है।

हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार ने समय-समय पर कई योजनाएँ और नीतियाँ लागू की हैं। राजभाषा अधिनियम के अंतर्गत यह प्रावधान किया गया कि सरकारी कार्यालयों में हिन्दी का प्रयोग धीरे-धीरे बढ़ाया जाएगा। इसके साथ ही, यह भी स्पष्ट किया गया कि अंग्रेज़ी का प्रयोग सहायक भाषा के रूप में तब तक जारी रहेगा, जब तक हिन्दी पूरे देश में पूरी तरह से स्वीकृत और समझी जाने लगे। सरकार ने राजभाषा विभाग की स्थापना की जिसका उद्देश्य हिन्दी के कार्यालयीन प्रयोग को बढ़ावा देना और इस संदर्भ में नीतियों का निर्माण और क्रियान्वयन करना है और हिन्दी के प्रसार और सरकारी कार्यों में इसके प्रयोग को प्रोत्साहित करना है। यह विभाग नियमित रूप से समीक्षा करता है कि किन कार्यालयों और मंत्रालयों में हिन्दी का प्रयोग बढ़ रहा है और कहां पर कमी है। इसके लिए राजभाषा विभाग प्रत्येक वर्ष वार्षिक कार्यक्रम जारी करता है जिसमें उस वर्ष के लिए लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं।

सभी सरकारी कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग की निगरानी और उसे प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न स्तरों पर राजभाषा कार्यान्वयन समितियाँ गठित की गई हैं। ये समितियाँ कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग की स्थिति पर नजर रखती हैं और इसे बढ़ावा देने के लिए सुझाव देती हैं।

सरकारी कर्मचारियों के लिए विशेष हिन्दी प्रशिक्षण कार्यक्रम जैसे हिन्दी शिक्षण संस्थान द्वारा प्रबोध, प्रवीण, प्रज्ञा एवं पारंगत पाठ्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिनमें उन्हें हिन्दी में कार्य करने की दक्षता प्राप्त होती

है। इसके साथ ही, हिन्दी में टंकण और कंप्यूटर पर कार्य करने हेतु प्रशिक्षण की भी व्यवस्था की जाती है, ताकि सरकारी कर्मचारी हिन्दी में शासकीय कार्यों को संपन्न कर सकें। इन हिन्दी प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होने पर सरकार द्वारा नकद प्रोत्साहन पुरस्कार भी दिए जाते है।

सरकार हर साल 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाती है और उस दौरान हिन्दी पखवाड़ा आयोजित करती है, जिसमें सरकारी कार्यालयों और विभागों में हिन्दी से संबंधित प्रतियोगिताएँ, सेमिनार और कार्यशालाएँ आयोजित की जाती हैं। इसका उद्देश्य सरकारी कर्मचारियों को हिन्दी के प्रति जागरूक करना और इसके प्रयोग को बढ़ावा देना है।

सरकार ने ई-गवर्नेंस के क्षेत्र में भी हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहित किया है। कई सरकारी पोर्टल और वेबसाइटें अब हिन्दी में भी उपलब्ध हैं, जिससे आम जनता के लिए शासकीय सेवाओं का लाभ उठाना सरल हो गया है। डिजिटलीकरण के इस युग में हिन्दी में सामग्री की उपलब्धता बढ़ रही है, जिससे इसका प्रयोग भी बढ़ रहा है।

हालांकि सरकारी नीतियों और योजनाओं के माध्यम से हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहित किया जा रहा है, वर्तमान समय में शासकीय कार्यों में हिन्दी का प्रयोग बढ़ा है, लेकिन यह अभी भी अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँच सका है।

भारतीय न्यायिक और विधायी कार्यों में अंग्रेज़ी का प्रयोग अधिक होता है। उच्च न्यायालय और सर्वोच्च न्यायालय में अभी भी अंग्रेज़ी प्रमुख भाषा बनी हुई है, जिससे न्यायिक प्रक्रिया में हिन्दी का प्रयोग सीमित है। हालाँकि, कुछ राज्यों में स्थानीय अदालतों में हिन्दी का प्रयोग बढ़ा है, लेकिन राष्ट्रीय स्तर पर इसे अभी भी अधिक स्वीकृति नहीं मिली है।

विज्ञान, तकनीकी और चिकित्सा जैसे क्षेत्रों में हिन्दी का प्रयोग सीमित है। इन क्षेत्रों में अंग्रेज़ी की प्रधानता है और हिन्दी में सामग्री और पाठ्यक्रमों की कमी है। यह भी एक बड़ी चुनौती है, जो हिन्दी के व्यापक प्रयोग को बाधित कर रही है। हिन्दी के प्रयोग के प्रति समाज में जागरूकता बढ़ाई जानी चाहिए। इसके लिए विभिन्न प्रचार-प्रसार माध्यमों का उपयोग किया जा सकता है, जिससे हिन्दी के महत्व को समाज के सभी वर्गों तक पहुँचाया जा सके। हिन्दी के प्रसार में राज्य सरकारों का सहयोग भी महत्वपूर्ण है। विशेषकर उन राज्यों में, जहाँ हिन्दी का प्रयोग कम है, वहाँ पर हिन्दी के प्रति जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता है।

संघ के शासकीय कार्यों में हिन्दी की स्थिति में धीरे-धीरे सुधार हो रहा है, लेकिन इसे पूर्ण रूप से लागू करने के लिए अभी भी अनेक चुनौतियाँ हैं। सरकार ने हिन्दी के प्रसार और उसके प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए अनेक नीतियाँ और कार्यक्रम शुरू किए हैं, लेकिन इनका प्रभाव उम्मीद अनुरूप नहीं रहा है। हिन्दी को एक व्यापक शासकीय भाषा के रूप में स्थापित करने के लिए समाज, सरकार और प्रशासन को मिलकर प्रयास करने की आवश्यकता है। इससे न केवल शासकीय कार्यों में पारदर्शिता और सुगमता आएगी, बल्कि भारत की सांस्कृतिक एकता को भी बल मिलेगा।

सम्पर्क भाषा के रूप में हिंदी

श्री मोहन प्रकाश
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

हिंदी, भारतीय उपमहाद्वीप की एक प्रमुख भाषा है, जो विभिन्न संस्कृतियों और भाषाओं का संगम बिंदु है। यह भाषा न केवल भारत में बल्कि विश्वभर में एक महत्वपूर्ण सम्पर्क भाषा के रूप में उभरी है। सम्पर्क भाषा वह भाषा होती है जिसका उपयोग विभिन्न भाषा -भाषी समुदाय आपस में संवाद के लिए करते हैं। हिंदी ने इस भूमिका को न केवल भारत के भीतर बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी निभाया है।

हिंदी भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन गई है। हिंदी भाषा का विकास प्राचीन भारतीय भाषाओं के मिश्रण से हुआ है। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और अन्य स्थानीय भाषाओं के प्रभाव ने हिंदी को आकार दिया। साहित्यिक भाषा स्वरुप में हिंदी के विकास में विशेष रूप से अमीर खुसरो का महत्वपूर्ण योगदान है। इसके बाद भक्ति आंदोलन के दौरान संत कवियों ने लोकभाषा हिंदी का उपयोग किया। इस अवधि में हिंदी की विविध बोलियाँ विकसित हुईं, जैसे अवधी, ब्रज, मैथिली, मगही, भोजपुरी संथाली और मारवाड़ी।

ब्रिटिश काल के दौरान, हिंदी ने अपनी स्वतंत्रता आंदोलनों की मुख्य भाषा के रूप में पहचान बनानी शुरू की। अंग्रेज़ों के शासन में हिंदी को लगभग पूरे भारत की एक औपचारिक भाषा के रूप में मान्यता मिलने लगी। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हिंदी भाषा का उपयोग संचार, जन जागरूकता और आंदोलन के प्रचार के लिए किया गया। कई प्रमुख नेताओं ने हिंदी में लेखन और भाषण दिए, जिससे यह भाषा एक आम मंच के रूप में उभरी। महात्मा गांधी, पंडित नेहरू और अन्य स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी का उपयोग भारतीय जनता को जागरूक करने और राष्ट्रीय आंदोलन को समर्थन देने के लिए किया। हिंदी ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतीय समाज के विभिन्न हिस्सों को एकजुट करने में योगदान दिया, जिससे यह कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता आंदोलनों में हिंदी का महत्वपूर्ण स्थान था। इस समय की हिंदी साहित्यिक रचनाएँ स्वतंत्रता संग्राम के उत्साह, राष्ट्रीय भावना और सामाजिक सुधारों को प्रदर्शित करती हैं।

हिंदी कवियों ने अपने काव्य के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरणा और सामाजिक जागरूकता फैलाने का कार्य किया। कवि रामधारी सिंह 'दिनकर', सुभद्राकुमारी चौहान और महादेवी वर्मा जैसी हस्तियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से देशभक्ति और स्वतंत्रता के विचारों को प्रसारित किया।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हिंदी पत्रकारिता ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पत्र-पत्रिकाओं जैसे 'यंग इंडिया' (महात्मा गांधी द्वारा संपादित), 'कल्याण' और 'प्रजा' ने स्वतंत्रता आंदोलन की खबरें और विचार प्रस्तुत किए और जनता को जागरूक किया। स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में कई उपन्यास और कहानियाँ लिखी

गईं, जिनमें सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों को दर्शाया गया। विशेष रूप से प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों और कहानियों में सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं को उजागर किया, जिससे वे स्वतंत्रता संग्राम के प्रतीक बन गए।

नाटककारों ने भी स्वतंत्रता संग्राम के विचारों को अपने नाटकों में समाहित किया। विशेष रूप से विजयदान देथा और चंद्रधर शर्मा गुलेरी जैसे लेखकों ने अपने नाटकों के माध्यम से राष्ट्रवाद और स्वतंत्रता के विचारों को उजागर किया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हिंदी भाषा और साहित्य में सुधार की दिशा में भी काम किया गया। हिंदी साहित्य ने समाज में बदलाव और आधुनिकता की दिशा में योगदान किया, जिससे यह भाषा व्यापक जनसमूह में प्रभावी हो सकी। इन सभी योगदानों ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हिंदी को एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली भाषा बना दिया, जिसने न केवल स्वतंत्रता आंदोलन को प्रेरित किया बल्कि समाज में जागरूकता और एकता को भी बढ़ावा दिया।

इस तरह हिंदी की उपयोगिता सम्पर्क भाषा के रूप में सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक ,प्रशासनिक उपयोग, वाणिज्य ,उद्योग, सामाजिक मीडिया और मनोरंजन जैसे विविध क्षेत्रों में महत्वपूर्ण रही है। यह भाषा लोगों के बीच संवाद और समझ को आसान बनाती है, जिससे सामाजिक एकता को बढ़ावा मिलता है। हिंदी में प्रकाशित सामग्री और अभियानों के माध्यम से समाज में स्वास्थ्य, शिक्षा और सुरक्षा जैसे मुद्दों पर जागरूकता फैलाने का कार्य किया गया है।

हिंदी साहित्य, कविता और नाटक ने भारतीय सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित और समृद्ध किया है। हिंदी फिल्में और संगीत भी भारतीय संस्कृति के महत्वपूर्ण हिस्से हैं और विश्वभर में भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देते हैं। हिंदी भाषा में त्योहारों, परंपराओं और सांस्कृतिक आयोजनों की प्रस्तुतियाँ होती हैं, जो सांस्कृतिक धरोहर को बनाए रखने में मदद करती हैं।

हिंदी कई राज्यों में शिक्षा का मुख्य माध्यम है, विशेषकर उत्तर भारत के कई हिस्सों में। हिंदी माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र अपनी मातृभाषा में अधिक सहजता और दक्षता के साथ शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। हिंदी में कई किताबें, शोध पत्र और शैक्षिक सामग्री उपलब्ध हैं जो शिक्षण और अध्ययन को सरल बनाती हैं। हिंदी भारत सरकार की आधिकारिक भाषा है और लगभग सभी सरकारी दस्तावेज, फॉर्म और सेवाएँ हिंदी में उपलब्ध हैं। इससे सरकारी कार्यवाही और सेवाएँ आम जनता के लिए अधिक सुलभ होती हैं।

हिंदी में सरकार द्वारा जारी की जाने वाली सूचनाएँ और निर्देश लोगों तक आसानी से पहुँचते हैं, जिससे प्रशासनिक कामकाज में पारदर्शिता और प्रभावशीलता बढ़ती है। व्यापारिक संवाद, विज्ञापन और मार्केटिंग सामग्री में हिंदी का उपयोग बढ़ रहा है जिससे कंपनियों को व्यापक भारतीय बाजार तक पहुँचने में मदद मिलती है। ग्राहक सेवा, हेल्पडेस्क और उत्पाद जानकारी हिंदी में उपलब्ध होने से उपभोक्ताओं के लिए सुविधाजनक होता है।

हिंदी का उपयोग औद्योगिक जगत में संवाद और व्यापारिक वार्तालाप में किया जाता है, विशेषकर उन क्षेत्रों में जहाँ हिंदी भाषी श्रमिक और प्रबंधन में होते हैं। हिंदी में विषयवस्तु और संवाद सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स जैसे फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम आदि पर व्यापक रूप से उपलब्ध हैं। यह भाषा, डिजिटल संवाद और संपर्क को सरल बनाती है। हिंदी में ब्लॉग और व्लॉग (वीडियो ब्लॉग) के माध्यम से लोग अपनी विचारधारा, ज्ञान और अनुभव साझा करते हैं, जो सोशल मीडिया के प्रभावशाली हिस्से के रूप में उभर रहे हैं।

हिंदी सिनेमा (बॉलीवुड) और हिंदी टीवी शो भारतीय मनोरंजन उद्योग का एक प्रमुख हिस्सा हैं। ये दुनिया भर में बड़े पैमाने पर देखे जाते हैं और हिंदी भाषा के प्रचार में भी योगदान देते हैं। हिंदी संगीत (गाने और भजन) भी भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय दर्शकों में लोकप्रिय है, जो सांस्कृतिक और भावनात्मक संवेग को व्यक्त करता है।

भारतीय संविधान के अनुसार, हिंदी को एक प्रमुख भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है और इसे सरकारी कार्यों, शिक्षा और मीडिया में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। यह भाषाई एकता और समन्वय को बढ़ावा देती है।

हिंदी केवल भारत में ही नहीं, बल्कि विश्वभर में भी एक महत्वपूर्ण भाषा बन गई है। भारतीय डायस्पोरा के कारण, हिंदी विभिन्न देशों में फैल गई है। अमेरिका, यूके, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में हिंदी भाषी समुदायों की संख्या बढ़ रही है। इस प्रकार हिंदी का वैश्विक प्रसार और महत्व बढ़ रहा है।

हिंदी को सम्पर्क भाषा के रूप में और अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए शैक्षिक पहल, सांस्कृतिक प्रचार, तकनीकी और डिजिटल माध्यम विभिन्न प्रयास भी किए जा रहे हैं। कई अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों और शैक्षिक संस्थानों में हिंदी की पढ़ाई की जाती है। इससे हिंदी की वैश्विक स्थिति मजबूत होती है और इसे एक अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में मान्यता मिलती है।

हिंदी सिनेमा, संगीत और साहित्य के माध्यम से भारतीय संस्कृति का प्रचार और प्रसार किया जा रहा है। यह हिंदी को विश्वभर में पहचान दिलाने में सहायक है। इंटरनेट और डिजिटल मीडिया के माध्यम से हिंदी का प्रसार बढ़ा है। हिंदी में सामग्री की उपलब्धता बढ़ने से अधिक लोग हिंदी का उपयोग करने लगे हैं।

हालांकि हिंदी को सम्पर्क भाषा के रूप में महत्वपूर्ण स्थान मिला है, लेकिन हिंदी के सामने समाज में भाषाई विविधता, भाषा का संरक्षण जैसी कुछ चुनौतियाँ भी हैं।

भारत की भाषाई विविधता के कारण हिंदी को सभी क्षेत्रीय भाषाओं के साथ संवाद करने में कठिनाई हो सकती है। विभिन्न भाषाओं और बोलियों के बीच समझ और समन्वय की आवश्यकता होती है।

साथ ही हिंदी के समृद्ध साहित्य और सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करना आवश्यक है। इसके लिए हिंदी की शिक्षा और प्रचार-प्रसार में निरंतर प्रयास करना होगा।

हिंदी ने सम्पर्क भाषा के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और यह भारतीय समाज की एकता और विविधता का प्रतीक है। इसकी ऐतिहासिक यात्रा, सामाजिक प्रभाव और वैश्विक प्रसार इसे एक महत्वपूर्ण भाषा बनाते हैं। हिंदी के विकास और प्रचार के लिए निरंतर प्रयास आवश्यक हैं ताकि यह भविष्य में भी एक प्रभावशाली सम्पर्क भाषा के रूप में आगे बढ़ सके।

हिंदी को सम्पर्क भाषा के रूप में भूमिका भारतीय समाज को जोड़ने और वैश्विक मंच पर एक पहचान दिलाने में सहायक रही है। इसके निरंतर विकास और संरक्षण से यह भाषा आगे भी अपनी प्रभावशाली भूमिका निभाती रहेगी।

सरकारी क्षेत्र में लेखापरीक्षा का महत्व

हेमवंती नंदन शर्मा
स.लेप.अ.

सरकारी प्रबंधन और प्रशासन का मुख्य उद्देश्य समाज के कल्याण को बढ़ावा देना है। इसके लिए विभिन्न योजनाओं, परियोजनाओं और सेवाओं को लागू किया जाता है। इन परियोजनाओं और योजनाओं का प्रभावी ढंग से संचालन सुनिश्चित करने और जनधन के दुरुपयोग को रोकने के लिए लेखापरीक्षा अनिवार्य है। सरकारी लेखापरीक्षा की प्रक्रिया न केवल वित्तीय पारदर्शिता को बढ़ावा देती है, बल्कि यह सरकारी कार्यों की प्रभावशीलता और दक्षता को भी सुनिश्चित करती है।

सरकारी लेखापरीक्षा का मुख्य उद्देश्य वित्तीय अभिलेखों और लेन-देन की सटीकता की जांच करना है। यह सुनिश्चित करता है कि सरकारी धन का उपयोग सही ढंग से और निर्धारित नीतियों के अनुसार किया गया है। इसके अलावा, लेखापरीक्षा सार्वजनिक धन के दुरुपयोग और धोखाधड़ी को भी रोकता है। लेखापरीक्षा किसी भी प्रकार के वित्तीय दुरुपयोग, घोटाले या भ्रष्टाचार को उजागर करता है। लेखापरीक्षा रिपोर्ट के माध्यम से प्रबंधन को सुधार की दिशा में सुझाव प्राप्त होते हैं, जिससे कार्यप्रणाली में सुधार होता है।

लेखापरीक्षा प्रक्रिया की शुरुआत योजना और तैयारी से होती है। इसमें लेखापरीक्षा के क्षेत्र और दायरे को परिभाषित किया जाता है और लेखापरीक्षा की कार्यप्रणाली तय की जाती है। लेखापरीक्षा संबंधित अधिकारियों और कर्मचारियों से साक्षात्कार करते हैं और वित्तीय दस्तावेजों की समीक्षा करते हैं। लेखापरीक्षा के दौरान वित्तीय विवरणों को एकत्र किया जाता है और उनका विश्लेषण किया जाता है ताकि किसी भी विसंगति की पहचान की जा सके। लेखापरीक्षा के बाद एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार की जाती है, जिसमें पाए गए दोषों और सुधार के सुझाव शामिल होते हैं।

लेखापरीक्षा सरकारी वित्तीय लेन-देन की सटीकता की पुष्टि करता है और वित्तीय पारदर्शिता को बढ़ावा देता है। भ्रष्टाचार और वित्तीय दुरुपयोग को उजागर करने में मदद करता है, जिससे सरकारी संस्थाओं में विश्वास बढ़ता है। लेखापरीक्षा के दौरान मिले सुझावों और रिपोर्ट के आधार पर प्रशासनिक सुधार किए जाते हैं, जिससे सरकारी सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार होता है। पारदर्शी और प्रभावी लेखापरीक्षा से जनता के बीच सरकारी संस्थाओं के प्रति विश्वास बढ़ता है। कई बार लेखापरीक्षा के लिए आवश्यक संसाधनों की कमी होती है, जिससे प्रक्रिया की गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है। भ्रष्टाचार के दबाव का सामना करना पड़ सकता है, जिससे निष्पक्षता प्रभावित हो सकती है। लेखापरीक्षा की प्रक्रिया में समय की कमी हो सकती है,

जिससे रिपोर्टिंग और विश्लेषण में विलम्ब हो सकता है। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए आवश्यक है कि लेखापरीक्षा प्रक्रिया को और अधिक प्रभावी बनाया जाए, संसाधनों की उचित व्यवस्था की जाए और अधिकारियों को भ्रष्टाचार के खिलाफ सख्त निर्देश दिए जाएँ।

सरकारी लेखापरीक्षा सरकारी क्षेत्र में वित्तीय पारदर्शिता, दक्षता और प्रभावशीलता को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह न केवल सरकारी धन के दुरुपयोग को रोकता है बल्कि प्रशासनिक सुधारों को भी बढ़ावा देता है। सही तरीके से की गई लेखापरीक्षा प्रक्रिया से सरकारी संस्थाओं में विश्वास बढ़ता है और सार्वजनिक सेवा में सुधार होता है। इसलिए सरकारी लेखापरीक्षा को एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में देखा जाना चाहिए जो शासन के प्रभावी और पारदर्शी संचालन को सुनिश्चित करता है।

धर्म – वर्तमान उपयोगिता

श्री राकेश कुमार
स.लेप.अ.

धर्म मानव इतिहास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है और समय के साथ इसके स्वरूप और प्रभाव में परिवर्तन हुए हैं। प्राचीन काल से ही धर्म ने समाज को नैतिकता, आस्था और आध्यात्मिकता के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया है। धर्म का शाब्दिक अर्थ होता है "धारण करना"। इसका तात्पर्य है वे सिद्धांत और नियम जिनका पालन करके व्यक्ति अपने जीवन को सही मार्ग पर रख सकता है। धर्म केवल पूजा-पाठ या ईश्वर में आस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक व्यापक जीवन पद्धति है जो नैतिकता, सदाचार और सामाजिक कर्तव्यों का समुच्चय है। प्राचीन समय में धर्म ने समाज में शांति और सद्भाव बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। लोगों के आचार-व्यवहार, संबंधों और जीवनशैली को दिशा देने के लिए धर्म एक आवश्यक मार्गदर्शक रहा है। लेकिन वर्तमान समय में धर्म की भूमिका और उसकी उपयोगिता को लेकर विभिन्न मत और दृष्टिकोण उभर कर सामने आए हैं। इस बात में कोई शंका नहीं है कि आज से कई सौ वर्षों पहले धर्म की उपयोगिता रही होगी। वैज्ञानिक समझ के आभाव में उस वक्त सभी समस्याओं, प्रश्नों और घटनाओं का संबंध किसी अलौकिक शक्ति से जोड़ दिया जाता था और कहीं ना कहीं धर्म की उत्पत्ति भी इन्हीं कारणों से हुई है।

वर्तमान समय में धर्म की स्थिति जटिल और बहुआयामी हो गई है। वैश्वीकरण, विज्ञान और तकनीकी प्रगति और सामाजिक परिवर्तनों के साथ धर्म की भूमिका भी बदलती नजर आ रही है। एक ओर, धर्म का समाज के विभिन्न क्षेत्रों में सकारात्मक उपयोग हो रहा है, तो दूसरी ओर इसके दुरुपयोग की घटनाएं भी सामने आ रही हैं। वर्तमान में धर्म की उपयोगिता ये है कि कठिन समय में मनुष्य थोड़ा हौसला पा लेता है, विकट परिस्थितियों से सामना करने के लिए साहस जुटा लेता है। आज के समय में धर्म का सबसे बड़ा योगदान समाजिक एकता और शांति को बनाए रखना है। विभिन्न धर्मों के अनुयायी सामाजिक सेवा के क्षेत्र में सक्रिय हैं। चाहे वह धार्मिक संस्थाओं द्वारा गरीबों के लिए भोजन और आश्रय की व्यवस्था हो, या फिर शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं का प्रसार, धर्म समाज को संबल प्रदान करने का एक महत्वपूर्ण साधन बना हुआ है। साथ ही, धर्म के नैतिक सिद्धांत आज भी लोगों को सही और गलत के बीच का भेद समझाने में मदद करते हैं। समाज में नैतिकता और सदाचार का प्रचार-प्रसार करने में धर्म की भूमिका महत्वपूर्ण है। धर्म के माध्यम से व्यक्ति को यह सिखाया जाता है कि समाज में दूसरों के साथ कैसे व्यवहार करना चाहिए, दूसरों की सहायता कैसे करनी चाहिए और जीवन में सही मार्ग पर कैसे चलना चाहिए।

वर्तमान में जब दुनिया में ज्यादातर समस्याएं धर्मों के विषाक्त स्वरूप के कारण है तो यह बात समझने में अब कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए कि धर्म मानव निर्मित एक व्यवस्था मात्र है ना कि ईश्वरीय शक्ति या

संदेश द्वारा स्थापित कोई अंतिम सत्य। किसी भी व्यवस्था में जब समय के अनुकूल परिवर्तन नहीं आता तब उसका स्वरूप विषाक्त हो जाता है । अनेक सामाजिक परिवर्तनों की ही देन है कि आज बहुत हद तक हर वर्ग सम्मान पूर्ण जीवन जीने में सक्षम है। लेकिन अधिकाशं धर्मों में बहुत अधिक जरूरी बदलाव नहीं आए हैं। इसके अनेक कारण रहे है जैसे कि भय, असुरक्षा, राजनीति और धर्म से जुड़े तमाम तरह के व्यवसाय। वर्तमान समय में धर्म का दुरुपयोग एक गंभीर समस्या बन गई है। कट्टरपंथ, धर्म के नाम पर हिंसा और साम्प्रदायिकता ने धर्म की सकारात्मक छवि को धूमिल किया है। कुछ समूह धर्म का उपयोग अपने स्वार्थी उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कर रहे हैं, जिससे समाज में विभाजन और तनाव की स्थिति उत्पन्न हो रही है। ऐसे में धर्म के वास्तविक संदेश और मूल्यों को समझना और उनका सही ढंग से अनुपालन करना आवश्यक हो गया है।

धर्म बहुत व्यक्तिगत है, एक बेहतर जीवन जीने में और एक बेहतर व्यक्ति बनने में सहायक हो सकता है परंतु अगर वो आपको उन्मादी बनाए, किसी तरह की श्रेष्ठता का एहसाह करवाए , किसी वर्ग या व्यक्ति के प्रति घृणा का भाव उत्पन करें तो वह एक बहुत बड़ी सामाजिक, भौगोलिक और वैश्विक समस्या बन जाती है। तार्किक होकर सोचे तो आसानी होगी, वैज्ञानिक समझ बढ़ेगी और समाज अपनी पूरी क्षमता से आगे बढ़ेगा लेकिन कुछ लोग आपसे ये नहीं चाहते क्योंकि असुरक्षा में जीने वाले लोगों पर नियंत्रण बहुत आसान है और इस तरह से शक्ति उनके हाथों हमेशा के लिए रहेगी। बहुत जरूरी हो जाता है कि हम इस सब से बचें और सामूहिक रूप से एक तर्कशील समाज बने। धार्मिक विचार जिस से रूढ़िवादिता, साम्प्रदायिकता और अंधविश्वास को बढ़ावा मिले उसकी एक प्रगतिशील समाज में कोई भूमिका नहीं होनी चाहिए और उसकी जगह समाज में करुणा,स्नेह, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और पर्यावरण के प्रति जागरूकता जैसे मूल्यों को प्रोत्साहित करने की ज्यादा जरूरत है।

धर्म की वर्तमान उपयोगिता के परिप्रेक्ष्य में यह प्रश्न उठता है कि भविष्य में धर्म की क्या भूमिका होगी। इसके उत्तर के लिए हमें यह समझना होगा कि धर्म एक स्थायी और अपरिवर्तनीय सत्य है, जो सदियों से समाज का मार्गदर्शन करता आया है। भविष्य में भी धर्म की उपयोगिता बनी रहेगी, लेकिन इसके स्वरूप में परिवर्तन आ सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि धर्म के वास्तविक संदेश और मूल्यों को समझा जाए और उसे समाज के कल्याण के लिए उपयोग किया जाए। धर्म और विज्ञान, धर्म और राजनीति और धर्म और सामाजिक जीवन के बीच संतुलन बनाकर ही हम एक बेहतर समाज का निर्माण कर सकते हैं।

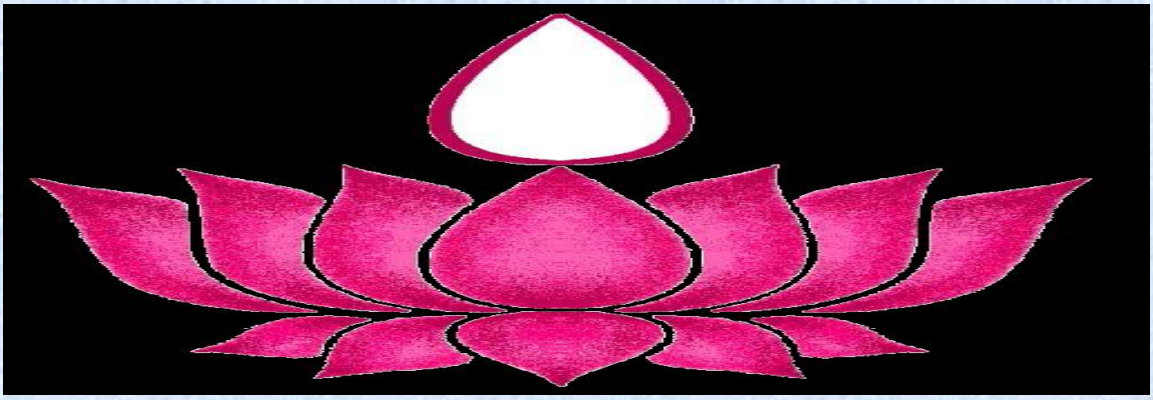

दफ्तर के तनावपूर्ण कामकाज में योग का महत्व

श्री भानुप्रताप सिंह
स.लेप.अ.

आज की तेज़-रफ्तार दुनिया में, दफ्तर का कामकाज अक्सर तनावपूर्ण हो जाता है। लंबे कामकाजी घंटे, फ़ाइलों की डेडलाइन्स और लगातार बढ़ती ज़िम्मेदारियों के बीच, मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इस तनाव को कम करने और कामकाजी जीवन को बेहतर बनाने के लिए योग एक प्रभावी समाधान साबित हो सकता है।

योग जो प्राचीन भारतीय अनुशासन का हिस्सा है, शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को संतुलित रखने में मदद करता है। योग के विभिन्न आसनों और प्राणायाम (सांस लेने की तकनीकें) का अभ्यास करने से तनाव कम होता है, मन को शांति और शरीर को ताजगी मिलती है। योग अभ्यास से मानसिक स्थिति में सुधार होता है, जिससे निर्णय लेने और ध्यान केंद्रित करने की क्षमता बढ़ती है। इससे कामकाजी दक्षता में भी वृद्धि होती है। लंबी बैठकों और कंप्यूटर के सामने काम करने के कारण अक्सर पीठ, गर्दन और कंधों में दर्द होता है। योग आसनों से मांसपेशियों को खींचने और तनाव कम करने में मदद मिलती है, जिससे शारीरिक आराम मिलता है। योग में प्रयुक्त प्राणायाम और ध्यान तकनीकें मन को शांत करने में मदद करती हैं। ये तकनीकें तनाव हार्मोन को नियंत्रित करती हैं और शरीर को आराम देती हैं।

दफ्तर के माहौल में योग को अपनाने के लिए काम के दौरान थोड़े-थोड़े समय के लिए योगा ब्रेक्स लेना फायदेमंद हो सकता है। यह कर्मचारियों को शारीरिक और मानसिक रिफ्रेशमेंट प्रदान करता है। दफ्तरों में नियमित योग-कार्यशालाएं आयोजित की जा सकती हैं। ये कार्यशालाएं कर्मचारियों को योग के लाभों और आसनों के सही तरीके से परिचित कराती हैं। कुछ दफ्तर योगा कोर (विशेष योग प्रशिक्षण) का आयोजन भी कर सकते हैं, जिसमें कर्मचारियों को विशेष तकनीकें और आसन सिखाए जाते हैं जो दफ्तर के माहौल के लिए उपयुक्त होते हैं।

योग केवल शारीरिक स्वास्थ्य को ही नहीं बल्कि मानसिक स्थिति को भी सशक्त बनाता है। योग के नियमित अभ्यास से कर्मचारियों की उत्पादकता बढ़ सकती है, कामकाजी माहौल में सकारात्मकता आ सकती है और कुल मिलाकर जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो सकता है। इसलिए हर दफ्तर को योग को अपने कार्यशैली का हिस्सा बनाना चाहिए, ताकि कर्मचारियों को एक स्वस्थ और खुशहाल कामकाजी जीवन मिल सके।

हमारी तेज़-रफ्तार दुनिया में, जहां हर पल एक नई चुनौती और तनाव से भरा हुआ है, योग एक ऐसा साधन बन गया है जो शांति और संतुलन की ओर ले जाता है। आधुनिक जीवन की दवाब भरी दिनचर्या, निरंतर बदलते सामाजिक और पेशेवर परिदृश्य ने मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को एक नई दिशा दी है। ऐसे में योग, प्राचीन भारतीय परंपरा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा, एक प्रभावशाली समाधान के रूप में उभरा है।

योग का इतिहास हजारों वर्षों पुराना है। इसकी जड़ें भारतीय संस्कृति में गहराई से समाहित हैं। योग शब्द संस्कृत के "युज" से निकला है, जिसका मतलब है "जोड़ना" या "संघटन करना"। यह आत्मा और शरीर, मन और चेतना के बीच एक सुसंगत संबंध स्थापित करने की प्रक्रिया है। प्राचीन योगी और ऋषियों ने योग को शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिए एक व्यापक पद्धति के रूप में विकसित किया। महर्षि पतंजलि ने अपने "योग सूत्र" में योग के विभिन्न पहलुओं को विस्तार से वर्णित किया। आज योग की विभिन्न शाखाएं जैसे हठ योग, राज योग और कर्म योग, आधुनिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को संबोधित करती हैं।

हमारी दुनिया का गति इतनी तेजी से बढ़ रही है कि अक्सर हमें अपने शरीर और मन के संकेतों की अनदेखी करनी पड़ती है। तकनीकी उन्नति, व्यस्त कार्य शेड्यूलऔरसामाजिक अपेक्षाओं के कारण तनाव और चिंता एक आम समस्या बन गई हैं। इस परिस्थिति में, योग हमें शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद कर सकता है।

हमारी जीवनशैली की गतिशीलता, जैसे लंबे समय तक बैठे रहना या असंतुलित आहार, शरीर को कमजोर कर सकती है। योग आसनों के माध्यम से हम मांसपेशियों को मजबूत कर सकते हैं, लचीलेपन को बढ़ा सकते हैं और शरीर की ताकत को बेहतर बना सकते हैं। सूर्य नमस्कार, वीरभद्रासन और ताड़ासन जैसे योग आसन, शरीर को सक्रिय और ताजगी से भरपूर रखते हैं। जीवन की भागदौड़ में मानसिक तनाव आम हो गया है। योग प्राणायाम (सांस की प्रथाएँ) और ध्यान तकनीकों के माध्यम से मन की शांति और मानसिक स्थिरता को बढ़ावा देता है। प्राणायाम, जैसे अनुलोम-विलोम और कपालभाति, मानसिक तनाव को कम करने और एकाग्रता बढ़ाने में सहायक होते हैं।

योग हमारी भावनात्मक स्थिति को संतुलित करने में भी मदद करता है। यह आत्मा की गहराइयों से जुड़ने और आंतरिक शांति प्राप्त करने का एक माध्यम है। योग के नियमित अभ्यास से आत्म-संवेदनशीलता और आत्म-स्वीकृति में वृद्धि होती है, जिससे हमें अपनी भावनाओं को बेहतर तरीके से समझने और नियंत्रित करने में मदद मिलती है।

योग अभ्यास से मानसिक स्पष्टता और फोकस बढ़ता है। ध्यान और प्राणायाम के माध्यम से दिमाग की चंचलता कम होती है और एकाग्रता में सुधार होता है। इससे कार्यक्षमता और उत्पादकता में वृद्धि होती है। योग नियमित रूप से करने से शरीर में ताकत और लचीलापन आता है। इसके अलावा, यह शरीर की

समग्र स्वास्थ्य स्थिति को बेहतर बनाने में मदद करता है, जैसे कि हृदय स्वास्थ्य, पाचन प्रणालीऔरशरीर के अन्य अंगों की कार्यक्षमता। योग का नियमित अभ्यास मानसिक शांति और संतुलन लाता है, जो संबंधों में सुधार के लिए सहायक होता है। एक संतुलित और शांत मन दूसरों के साथ बेहतर संवाद और समझ स्थापित करने में मदद करता है। योग प्राणायाम और ध्यान तकनीकें तनाव और चिंता को कम करने में बेहद प्रभावशाली होती हैं। ये विधियाँ तंत्रिका तंत्र को शांत करती हैं और मन को आराम देती हैं, जिससे जीवन की समस्याओं का सामना करना आसान हो जाता है।

तेज़-रफ्तार जीवन में योग को शामिल करना कोई कठिन कार्य नहीं है, बस इसके लिए नियमितता और समर्पण की आवश्यकता होती है। अपने दिन में योग के लिए विशेष समय निर्धारित करें। सुबह उठकर कुछ मिनट योगाभ्यास करने से दिन की शुरुआत ताजगी और ऊर्जा से होती है। यदि सुबह समय नहीं मिलता, तो आप शाम को भी योग कर सकते हैं। योग के शुरुआती स्तर पर साधारण और आसान आसनों से शुरुआत करें। जैसे ताड़ासन, भुजंगासन और बालासन। ये आसन शारीरिक लचीलापन और ताकत को बढ़ाने में सहायक होते हैं। योग में प्राणायाम और ध्यान का महत्व बहुत अधिक है। प्राणायाम जैसे अनुलोम-विलोम और ध्यान तकनीकें मानसिक शांति और संतुलन को बढ़ावा देती हैं। आप इन विधियों को अपने रोजमर्रा के जीवन में शामिल कर सकते हैं। योग की सफलता का मुख्य तत्व नियमितता है। हर दिन थोड़े समय के लिए भी योगाभ्यास करने से धीरे-धीरे परिणाम दिखने लगेंगे।

दुनिया में जहां जीवन की हर गतिविधि एक चुनौती है, योग एक ऐसा साधन है जो शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक संतुलन को बनाए रखने में मदद करता है। प्राचीन भारतीय परंपरा के इस अद्भुत उपहार के माध्यम से, हम अपने जीवन को अधिक संतुलित, स्वस्थ और शांत बना सकते हैं। इसलिए इस तेज़-रफ्तार जीवन में योग को अपनाना केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि एक आवश्यकता बन गई है, जो हमें जीवन की वास्तविक खुशियों और शांति की ओर ले जाती है।

अगर आप भाग्यशाली हैं, तो एक पालतू जानवर आपके जीवन में प्रवेश करेगा!!!

श्रीमती विजयलक्ष्मी रविकुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

जानवर जीवन में बहुत कुछ नहीं मांगते हैं और अधिकांश को बस रहने के लिए एक गर्म, सुरक्षित और प्यार भरी जगह चाहिए होती है। बदले में वे आपको बिना शर्त प्यार, वफ़ादारी और साथ देंगे। एक पालतू जानवर अकेलेपन से निपटने में मदद कर सकता है, आपको साथ दे सकता है और उद्देश्य की एक बेहतरीन भावना दे सकता है।

एक बिल्ली या कुत्ते के साथ खेलना आपका ध्यान आपकी समस्याओं से हटाकर आपको "यहाँ और अभी" पर केंद्रित कर सकता है। यह बुनियादी जागरूकता है और मानसिक स्वास्थ्य के लिए अद्भुत है। वे आपको जज नहीं करते, उनकी अपेक्षा आपको खुश देखना है!! यह कहानी है कि कैसे मेरे प्यारे दोस्त मेरे जीवन और घर में आए और इसे बेहतर के लिए बदल दिया:

एक तूफ़ानी बरसात के दिन, एक गर्भवती बिल्ली मेरी खिड़की के शीशे के नीचे थकी हुई, भूखी और ठंडी दिख रही थी। शुरू में मैंने खिड़की की सिल पर गर्म दूध का एक कटोरा रखा। हालाँकि वह थकी हुई दिख रही थी, लेकिन बिल्ली सतर्क थी और बहुत सोचने के बाद उसने कटोरे से दूध पी लिया। यह कुछ दिनों तक चलता रहा और बिल्ली धीरे-धीरे हम पर भरोसा करने लगी।

एक सुबह, यह प्यारा चमत्कार हुआ - उसके बगल में नवजात बिल्ली के बच्चे लेटे हुए थे। सबसे हम कठिन दुविधा में थे - क्या उन्हें अंदर आने दें, हमारे पड़ोसी क्या कहेंगे, जिम्मेदारियों का क्या होगा। लेकिन जिस तरह से माँ बिल्ली ने हमें मुस्कुराते हुए गर्व से अपने बच्चों को दिखाने के लिए आभारी प्यार के साथ देखा, हम जानते थे कि हमें हर चीज से ऊपर प्यार को चुनना होगा।

हमने उन्हें अंदर आने दिया और यहां तक कि उन्हें फिल्म के किरदारों का नाम भी दिया (खैर, यह कुछ खास बात है!)। हमारे घर में एक नए परिवार के साथ चारों ओर खुशी थी, एक महत्वपूर्ण मोड़ आया। जन्म के सात दिनों के बाद, दूध पिलाने वाली माँ बिल्ली कभी वापस नहीं लौटी (बहुत असुरक्षित वातावरण) और बिल्ली के बच्चों को अपनी माँ की जरूरत थी।

माँ के दूध के लिए उनकी लगातार म्याऊँ की आवाज़ से प्रेरित होकर, हमारे पास दो विकल्प थे - हार मान लेना या इन बिल्ली के बच्चों के जीवित रहने को सुनिश्चित करना। इसके बारे में कोई पूर्व ज्ञान न होने के कारण, बहुत सारे गूगल रिसर्च और हमारे कार्यसमय की शिफ्ट से लेकर तड़के अलार्म तक के कई छोटे-छोटे बदलावों ने असंभव को संभव कर दिया।

समय उड़ गया, वे अद्भुत बिल्लियाँ बन गईं - टुक (हमारी लड़की बिल्ली) एक सौम्य, शांत परी बन गई, जबकि हमारा लड़का भैरू शरारती, क्षेत्रीय, जिज्ञासु बन गया। जब वे दोनों खेलते हैं तो यह हॉलीवुड के एक्शन सीक्वेंस से कम नहीं होता। जीवन तब पूर्ण चक्र में आ गया जब मेरे हाथ में फ्रैक्चर हो गया, मैं बिस्तर पर पड़ा रहा और वे मेरे बगल में स्नेहपूर्वक, देखभाल करते हुए थे, ठीक वैसे ही जैसे हम उनके लिए थे।

उन्होंने मेरे माता-पिता की अनुपस्थिति को पूरा किया और मुझे एहसास हुआ, कि हमारे जीवन में उनका होना क्या मायने रखता है। तब से, मेरा दिन उनके साथ शुरू होता है और उनके साथ समाप्त होता तब से, मेरा दिन उनके साथ ही शुरू होता है और उनके साथ ही खत्म होता है - वे मेरे जीवन में घटित होने वाली सबसे खूबसूरत चीज हैं।

अगर आप वाकई भाग्यशाली हैं तो एक पालतू जानवर आपके जीवन में आएगा और आपके दिल को प्यार से भर देगा। जब आप जीवन में रुचि खो देते हैं, तो जीवन आप में रुचि दिखाता है!!

मेरे पालतू जानवर

BHAIRU

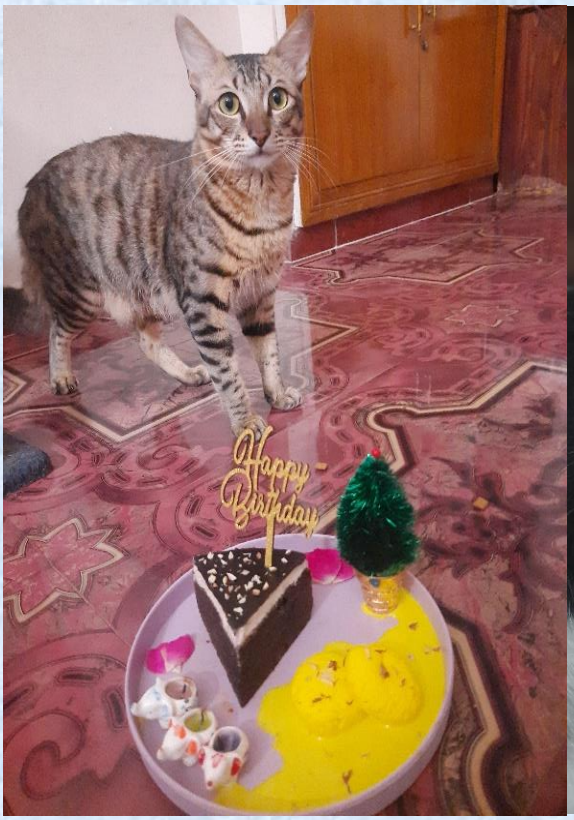

TUK

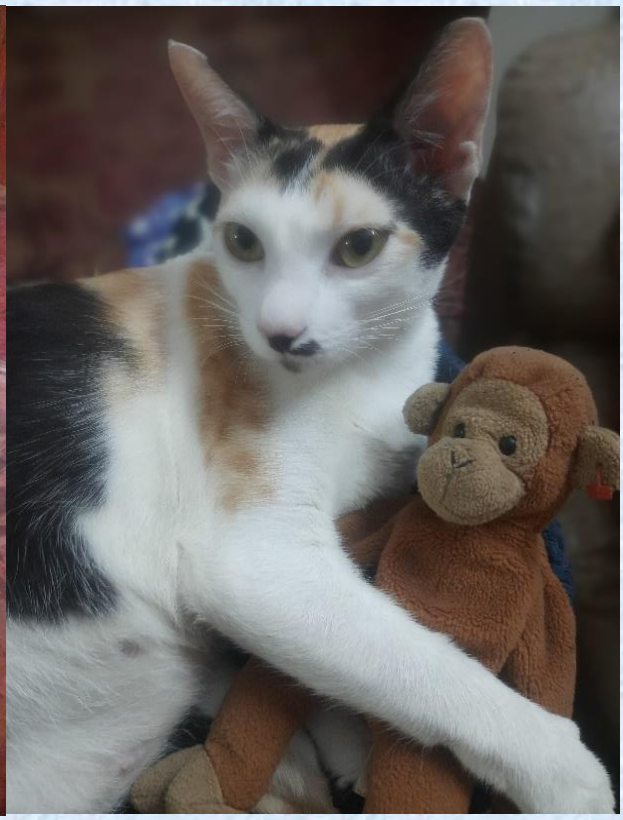

दो कुत्ते

श्री गगन कुमार तंवर
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

नौकरी छुटने के बाद विजय काफी निराश रहने लगा था और घर पे खाली रहने के कारण बहुत गुस्सा करने लगा। कभी गुस्सा बच्चो पे तो कभी बीवी पर करने लगा। एक दिन तो हद ही कर दी जब उसने अपने बीवी बच्चों को गुस्से में घर से निकाल दिया।

एक दिन,यह सब सुनकर विजय के पिताजी आए और उससे सारा हाल पूछा। विजय पूरी बात बताने लगा और गुस्से में बोला आपको भी यही लगता है ना कि मैं ही गलत हूं। सब कुछ सुनकर पिताजी ने बिना किसी गुस्से से विजय को बोला लगता है तू मेरी बताई हुई बातें भूल गया है । विजय ने पूछा कौनसी बात ?

हमारे मन में दो कुत्ते होते है - एक का नाम है गुस्सा और निराशा और दूसरे का नाम है प्यार और उम्मीद। फिर पिता जी ने पूछा बता जब दोनो की लड़ाई होगी तो कौन सा कुत्ता जीतेगा?

विजय को याद आया और हंसकर बोला जिस को ज्यादा खिलाऊंगा।

विजय को अपनी गलती समझ आ गई और बीवी से माफी मांगकर वापिस घर ले आया। फिर अपने परिवार के साथ प्यार से रहने लगा।

जिंदगी में सब तरह की परिस्थिति आती है पर हमे किस भाव को ज्यादा एहमियत देनी ये हमे स्वयं तय करना पड़ेगा - गुस्से वाले कुत्ते को या प्यार वाले कुत्ते को।

तो आप कौन से कुत्ते को ज्यादा खाना खिला रहे है?

जल संरक्षण

श्रीमती वी. एम. बिन्दु
व.लेप.अ.

पृथ्वी पर सभी जीव के जीवन के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए जल का संरक्षण करना बहुत जरूरी है, क्योंकि बिना जल के जीवन जीना संभव नहीं है। पूरे ब्रह्मांड में एक अपवाद के रूप में पृथ्वी पर जीवन चक्र को जारी रखने में पानी बहुत मदद करता है क्योंकि यह मनुष्यों द्वारा अपनी दैनिक दिनचर्या में उपयोग किया जाने वाला बहुमूल्य संसाधन है। इसलिए, प्रत्येक व्यक्ति को जल संरक्षण को प्राथमिकता देना और भावी पीढ़ियों के लिए जल की उपलब्धता सुनिश्चित करने की गारंटी देना अनिवार्य है। हमारी पृथ्वी का तीन-चौथाई भाग जल से घिरा हुआ है।

फिर भी इतना जल होते हुए भी उनमें से केवल कुछ ही प्रतिशत प्रयोग करने लायक होता है। इस तीन-चौथाई जल का 97 प्रतिशत जल खारा होता है जो मनुष्यों द्वारा प्रयोग करने लायक नहीं है। सिर्फ 3 प्रतिशत जल उपयोग में लाने लायक है। इस 3 प्रतिशत में से 2 प्रतिशत जल तो धरती पर बर्फ और ग्लेशियर के रूप में है और बाकी का बचा हुआ एक प्रतिशत जल ही पीने लायक है। यह जल भी धीरे-धीरे कम होता जा रहा है या प्रदूषित होता जा रहा है। हमें यह भी मालूम है कि देश में कई ऐसे क्षेत्र हैं जो सूखे से ग्रस्त हैं अर्थात जहाँ बारिश कम होती है या होती ही नहीं अथवा जहाँ नदियों का अभाव है और ऐसे स्थानों पर लोग पानी के लिए तरसते हैं। लोगों को कई मील दूर जाकर अपने लिए पानी का इंतजाम करना पड़ता है तथा कई स्थानों पर लोग इसकी कमी के कारण या दूषित जल के प्रयोग के कारण ही मर जाते हैं। जल के बिना तो पेड़ पौधे, पशु-पक्षी सभी प्रभावित होते है। इसलिए इन सब बातों को ध्यान में रखकर प्रत्येक व्यक्ति को पानी की कीमत को समझना चाहिए और इसे बचाने का हर संभव कोशिश करना चाहिए और साथ में जल का संरक्षण करने के लिए लोगों के बीच जागरूकता भी फैलाना चाहिए ताकि लोग पानी की एक-एक बूँद को बचाना सीख जाए।

पृथ्वी पर जीवन का आधार पानी ही है और सभी जीवों के लिए समान रूप से आवश्यक है, इसके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। लेकिन आज पूरे विश्व में पीने योग्य पानी की कमी एक गंभीर समस्या बन गई है, जिसे सुलझाने के लिए तत्काल कदम उठाने की आवश्यकता है।

हम दैनिक जीवन में पानी का उपयोग विभिन्न कार्यों जैसे पीने, खाना बनाने, साफ-सफाई, कृषि, उद्योग आदि के लिए करते हैं। परंतु, 21वीं सदी में बढ़ती जनसंख्या, शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के कारण पानी की मांग में अत्यधिक वृद्धि हुई है। पानी का अनियमित उपयोग और जल प्रदूषण ने स्थिति को और भी ज्यादा गंभीर बना दिया है।

हम सभी को, पानी बचाने के लिए पानी का सावधानीपूर्वक उपयोग करना चाहिए। अनावश्यक रूप से नल को खुला न छोड़ें और लीक होने वाले नलों को तुरंत ठीक कराना चाहिए। पानी का पुनर्चक्रण और पुन:उपयोग से हम पानी की बचत कर सकते है। घरेलू उपयोग के बाद बचे हुए पानी को बागवानी या अन्य कार्यों में पुनःउपयोग किया जा सकता है। घर की छतों, सार्वजनिक स्थानों पर और छोटे बड़े तालाब खोदकर वर्षा जल को ज्यादा से ज्यादा संग्रहित करने कोशिश करनी चाहिए, ताकि भूजल स्तर में वृद्धि हो सके। जल स्रोतों को प्रदूषित होने से बचाना अतिआवश्यक है। बड़े बड़े उद्योगों को अपने अपशिष्ट जल को शुद्ध करने के बाद ही उसे नदियों और जलाशयों में छोड़ना चाहिए।

यह सामुदायिक स्तर का अभियान है, लोगों को जागरूक होना होगा और जल संरक्षण के महत्व को समझना होगा। स्कूलों, कॉलेजों और कानूनी व गैर कानूनी संगठनों द्वारा जल संरक्षण अभियानों का आयोजन किया जाना चाहिए।कृषि में जल का प्रबंधन: ड्रिप इरीगेशन और स्प्रिंकलर इरीगेशन जैसी तकनीकों का उपयोग कर पानी की बचत की जा सकती है। पानी बचाने का प्रयास केवल सरकार और संगठनों के माध्यम से ही संभव नहीं हैं। प्रत्येक व्यक्ति का इसमें योगदान अतिआवश्यक है। हमें यह समझना होगा कि पानी का बचाव हमारे और आने वाली पीढ़ियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसलिए यदि हम सब मिलकर जल संरक्षण की दिशा में प्रयास करें, तो हम इस बहुमूल्य संसाधन को बचाकर अपने भविष्य को सुरक्षित बना सकेंगे। पानी बचाना, पृथ्वी पर जीवन को बचाना है। इसलिए हमें अभी से ही इस दिशा में ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है।

बेवजह किसी का मज़ाक ना उड़ाए

श्री पवन कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

एक बार एक बहुत बड़ा बिजनेसमैन एक छोटे से गांव में जाता है। उसका मकसद होता है कि उस गांव में एक बड़ी सी फैक्ट्री लगानी है। वह एक ऐसी जगह पर पहुंच जाता है, जहां पर उसके सामने एक नदी होती है और उस नदी के सामने गांव होता है। अब उसके सामने दो रास्ते हैं पहला यह कि वह सड़क के रास्ते घूम कर उस गांव तक पहुंचे, जिसमें लगभग 10 घंटे लगेंगे क्योंकि वहां तक पहुंचने का कोई सीधा रास्ता नहीं है। दूसरा रास्ता यह था कि वह एक नाव में बैठकर नदी के रास्ते उस गांव तक पहुंच जाए जिसमें केवल 20 मिनट ही लगते। तो अपना टाइम बचाने के लिए उसने उस नाव के जरिए गांव तक पहुंचने का फैसला किया। वह नांव बहुत छोटी सी थी, जिसमें एक तरफ वह आदमी बैठा था जो नांव चला रहा था और दूसरी तरफ वह बिजनेसमैन बैठा था। नांव मैं बैठने के थोड़ी देर बाद उस बिजनेसमैन ने नांव वाले से पूछा- "तुझे पता है तेरी नांव में कौन बैठा है?" तो नांव वाले ने बड़े भोलेपन से कहा- "नहीं साहब मैं नहीं जानता।"

तब बिजनेसमैन ने कहा - "अरे तू अखबार नहीं पढता है क्या? मेरी फोटो हर दूसरे तीसरे दिन अखबार में छपती है।" तो नांव वाले ने कहा - "अरे साहब मुझे पढ़ना लिखना नहीं आता है। मैं बहुत छोटा सा था, जब मेरे पिताजी गुज़र गए थे और अपने परिवार का ध्यान रखने के लिए मैं बचपन से ही काम में लग गया। इसलिए मेरा स्कूल बचपन में ही छूट गया था।" यह सुनकर उस बिजनेसमैन ने नांव वाले का मजाक उड़ाते हुए कहा - "तुझे पढ़ना लिखना भी नहीं आता है। ऐसी जिंदगी का क्या फायदा।" यह सुनकर उस नांव वाले को बुरा तो लगा, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा।

थोड़ी देर बाद वह बिजनेसमैन उस नांव वाले से बोला — "अभी कुछ दिन बाद, यह जो तू सामने जमीन देख रहा है ना, वहाँ मेरी एक बड़ी सी फैक्ट्री लगेगी जहां पर हम मिनरल वाटर की बॉटल्स बनाएंगे। उस नांव वाले को बात समझ नहीं आई। उसने कहा किस चीज की फैक्ट्री? तो बिजनेसमैन ने बड़े इरिटेट होकर उससे कहा कि — वहाँ पानी की बोतलें बनेंगी, जो तेरे गांव में नहीं बिकती लेकिन शहरों में बहुत बिकती है।

तब नांव वाले ने कहा — अरे साहब मुझे कहां पता होगा। मैने तो कभी इस गांव से बाहर निकला ही नहीं। फिर बिजनेसमैन ने उसके ऊपर हंसते हुए बोला — तू कभी इस गांव से बाहर तक नहीं गया। तुझे पता ही नहीं कि शहर क्या होता है। ऐसी जिंदगी का क्या फायदा।

उसकी बात सुनकर नांव वाले को सच में यह लगने लगा कि उसकी जिंदगी किसी काम की नहीं है। यह सोचते हुए उसकी नांव पर से ध्यान हटी और नांव की एक बड़े से पत्थर से टक्कर हो गई। जिसकी वजह

से नांव में पानी भरने लगा और नांव डूबने लगा। उस जगह पर पानी बहुत ही गहरा था और किनारा बहुत दूर था। नांव वाले को समझ आ गया कि अब इस नांव को बचाने का कोई तरीका नहीं है। फिर वह अपनी जान बचाने के लिए नदी में छलांग लगाने ही वाला था, तभी उसने बिजनेसमैन से पूछा — आपको तैरना तो आता है ना ?

तो बिजनेसमैन ने घबराकर पूछा — ऐसा क्यों पूछ रहे हो? मुझे तैरना नहीं आता है। उसकी यह बात सुनकर नांव वाले को हंसी आ गई और बोले — साहब आपको तैरना तक नहीं आता। ऐसी जिंदगी का क्या फायदा। यह सुनकर उस बिजनेसमैन को अपनी गलती का एहसास हुआ और हाथ जोड़कर उसने नांव वाले से कहा — तुम जो मांगोगे मैं तुम्हें वह दूंगा, बस मेरी जान बचा लो। तो उस नांव वाले ने कहा — अरे साहब घबराओ नहीं। मुझे सिर्फ तैरना ही नहीं आता है, बल्कि डूबते हुए लोगों को बचाना भी आता है।आप मुझे कसकर पकड़ लो। मैं आपको कुछ नहीं होने दूंगा और फिर उस नांव वाले ने न सिर्फ अपनी, बल्कि उस बिजनेसमैन की भी जान बचाई। तो हमें इस कहानी से एक बहुत बड़ी सीख मिलती है कि जिंदगी में कभी किसी का मजाक नहीं बनाना चाहिए या अपने से कम नहीं समझना चाहिए, क्योंकि हमें नहीं पता कि कब, कहाँ और कैसे किसकी जरूरत पड़ जाए।

एक छोटी बच्ची की कहानी

श्री पवन कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

एक बार एक छोटी सी बच्ची हाथ में मिट्टी की गुल्लक लिए भागती हुई एक दवाई की दुकान पर गई। वह काफी देर तक वहां पर खड़ी रही,लेकिन दुकानदार का ध्यान उस पर नहीं गया क्योंकि वहां पर काफी भीड़ थी। उसने दुकानदार को कई बार बुलाया लेकिन दुकानदार का ध्यान उस पर नहीं गया क्योंकि वहां पर भीड़ बहुत थी। फिर इस बच्ची को गुस्सा आया और अपने मिट्टी की गुल्लक को वहीं काउंटर पर जोर से रख दिया। इसके बाद दुकानदार और वहां पर खड़े सभी लोग उसे बच्ची की तरफ देखने लगे। दुकानदार ने उसे बच्ची से पूछा कि बेटे आपको क्या चाहिए? तो वह बड़े ही भोलेपन से बोली "मुझे एक चमत्कार चाहिए।"

यह सुनकर दुकानदार को कुछ समझ में नहीं आया और ना ही वहां पर खड़े लोगों को कुछ समझ में आया। सभी उसकी तरफ देखने लगे। फिर दुकानदार ने उससे कहा कि बेटे चमत्कार तो यहां पर नहीं मिलता है। तो बच्ची को लगा कि वह उसे झूठ बोल रहा है। उसने कहा कि मेरे गुल्लक में बहुत पैसे हैं। बताओ आपको कितने पैसे चाहिए। मैं आज यहां से चमत्कार लेकर ही जाऊंगी। तभी काउंटर पर खड़े एक आदमी ने उससे पूछा कि बेटी क्यों चाहिए तुमको चमत्कार? तब उसे बच्ची ने अपनी कहानी बताई अभी कुछ दिन पहले मेरे भाई के सर में बहुत तेज दर्द हुआ। मेरे पापा मम्मी उसको हॉस्पिटल ले गए। उसके बाद कई दिन तक मेरा भाई घर नहीं आया।

मैंने बहुत बार अपने पापा से पूछा लेकिन उन्होंने मुझे कुछ नहीं बताया। वो बार बार यही बोलते रहे कि वह कल आ जाएगा। लेकिन वह अभी तक घर नहीं आया है। तभी मैंने देखा कि मम्मी रो रही थी और पापा उनसे कह रहे थे कि हमारे बेटे के इलाज और दवाइयों के लिए जितने पैसे चाहिए उतने पैसे मेरे पास नहीं है। अब उसको कोई चमत्कार ही बचा सकता है। तब मुझे लगा कि मेरे पापा के पास अगर पैसे नहीं भी हैं तो क्या हुआ, मेरे पास तो है। इसलिए मैंने जितने भी पैसे जोड़ रखे थे वह सारे पैसे लेकर मैं इस दवाई की दुकान पर आई हूं ताकि चमत्कार खरीद सकूं। फिर उस आदमी ने बच्ची से पूछा कि कितने पैसे हैं तुम्हारे पास? यह सुनते ही बच्ची ने गुल्लक उठाई और जमीन पर पटक कर उसे फोड़ दिया और पैसे गिनने लग गई। वहां पर खड़े सभी लोग उसे देख रहे थे।

थोड़ी देर बाद उसने सारे पैसे इकट्ठे किए और बोली मेरे पास पूरे ₹19 हैं। वो जो आदमी वहां पर खड़ा था वह थोड़ा सा मुस्कुराया और बोला की "अरे तुम्हारे पास तो पूरे पैसे हैं। इतने का ही तो आता है चमत्कार।" यह सुनकर वह बच्ची बहुत खुश हो गई और बोली चलो मैं आपको अपने पापा से मिलवाती हूं।

बाद में पता लगा कि वह आदमी कोई आम आदमी नहीं था। बल्कि एक बहुत बड़ा न्यूरो सर्जन था और उसने सिर्फ 19 रुपए में उसके भाई की सर्जरी कर दी। उसका भाई कुछ दिन बाद ठीक हो करके घर वापस आ गया। फिर कुछ दिन बाद वह बच्ची, उसका भाई,उसके पापा और मम्मी चारों एक साथ बैठे हुए थे और बात कर रहे थे। तभी उसकी मम्मी ने उसके पापा से पूछा कि अब तो बता दो यह चमत्कार आपने किया कैसे। तब उन्होंने अपनी बेटी की तरफ देख कर कहा चमत्कार मैं नहीं, इसने किया है।

तो यहां पर एक बहुत बड़ी सबक है, जो हम उस छोटी सी बच्ची से सीख सकते हैं। जिंदगी में कभी कभी ऐसा होता है कि हमको कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा होता है और हम लोग हिम्मत हार जाते हैं। तब हमारे अंदर एक बच्चा होता है जो कोशिश करने से कभी पीछे नहीं हटता है। वह हार मानने को तैयार ही नहीं होता है क्योंकि उसको "ना" शब्द समझ नहीं आता है। वह बच्चा जिसके लिए कुछ भी नामुमकिन नहीं है कि क्योंकि वह हर हाल में कोशिश करता ही रहता है।

नज़र नहीं, नज़रिया बदलिए

श्रीमती वी. राधा
सहायक पर्यवेक्षक

सुनील के जीवन में एक खास दिन आया जब उन्होंने अपनी प्यारी 10 साल की बेटी संजना के लिए उसकी ड्रीम कार – "लाल रंग की किआ" खरीदी। यह कार को संजना बहुत दिनों से चाह रही थी। सुनील ने यह कार को उसके जन्मदिन में सरप्राइज गिफ्ट दी। जैसे ही संजना ने कार देखी, उसकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। उसकी आंखें चमक उठी और वह खुशी से उछल पड़ी। पत्नी गीता इस सरप्राइज गिफ्ट से बहुत खुश थी, वह भी पिछले कई दिनों से इस दिन का इंतजार कर रही थी। संजना ने अपने पिता को धन्यवाद देते हुए कहा कि "पापा, यह मेरे जीवन का सबसे अच्छा गिफ्ट है... थैंक यू पापा।"

संजना कार की सवारी के लिए उत्साहित थी। संजना तुरंत कार में बैठकर एक राइड पर जाना चाहती थी। "नहीं, नहीं संजू पहले... हमें मंदिर जाकर कार की पूजा करनी होगी और तुम्हारा जन्मदिन भी है, भगवान का आशीर्वाद लेना है। आओ बेटी हम तैयार हो जाएं..." गीता ने सुझाव दिया। सुनील और संजना ने उसकी बात मान ली और सभी तैयार होकर मंदिर जाने का निर्णय लिया। मंदिर में पूजा अर्चना के बाद, सुनील ने संजना से कहा कि उसके मामा के घर जाएंगे और उसकी कजिन रंजना को लेकर लॉन्ग ड्राइव और डिनर पर निकलेंगे।

संजना इस बात को सुनकर और भी खुश हो गई और बोली "पापा, आप बहुत अच्छे हैं। मेरे खुशी दोगुनी हो गई। मैं, रंजना के साथ मजे करूंगी। डबल धमाका के लिए थैंक यू पापा... आई लव यू पापा। वे सभी मंदिर से निकलकर कार में बैठ गए और मामा के घर की ओर चल पड़े। संजना खुशी से जोर जोर से गा रही थी, गीता अपने सेल फोन पर अपने भाई से बात कर रही थी। इन दोनों को खुश देखकर सुनील भी खुश हो गया। वह अपनी बेटी की ड्रीम कार खरीदने के लिए 2 साल से पैसे बचा रहा था। आज सुनील अपनी बेटी की इच्छा पूरी करके संतुष्ट थे। उसने अपने परिवार को हर सप्ताहांत एक नई जगह ले जाकर मौज मस्ती करने का सोचा। रास्ते में अचानक मौसम खराब होने लगा। पहले हल्की हल्की बूंदाबांदी शुरू हुई, फिर तेज बारिश और हवा का तूफान आ गया। कुछ ही मिनट में अंधेरा छा गया और सड़क पर दृश्यता बहुत कम हो गई। तभी, एक बड़ी पेड़ की शाखा टूटकर उनके कार पर आ गिरी। कार जोर से हिली और वे सभी अंदर फस गए। इस अप्रत्याशित घटना से भी सभी भयभीत हो गए। संजना ने जोर से चीख मारी और गीता ने उसे गले से लगा लिया। सुनील भी शॉक में था और स्थिति को समझने की कोशिश कर रहा था। सामने की कार में बैठा हुआ व्यक्ति यह सब देख रहा था। वह व्यक्ति तुरंत उनकी मदद के लिए दौड़ता हुआ आया। उसने बड़ी मेहनत से कार का दरवाजा खोला और सभी को सुरक्षित बाहर निकाला।

वह व्यक्ति बहुत दयालु था और उसने उन्हें घर छोड़ने की पेशकश की। उसने कहा, आप चिंता ना करें, मैकेनिक को फोन कीजिए, कल सुबह तक आपकी कार की देखभाल कर लेगा। अब मैं आपको घर छोड़ देता हूं। सुनील ने उसे व्यक्ति का धन्यवाद किया और तीनों उसके साथ उसकी कार में बैठ गए। घर पहुंचने पर, संजना रोने लगी। सुनील और गीता को बहुत दुख हुआ। गीता को यह सब एक सपना जैसा लग रहा था। अभी-अभी हम मंदिर से पूजा करके निकले थे, इतनी महंगी कार की कुछ ही घंटे में ऐसी हालत हो गई थी। उसने दुखी होकर सुनील से कहा "आज ऐसा क्यों हुआ?"

पहले ही दिन यह दुर्घटना हुई। देखिए हमारी संजू कैसे रो रही है। ये सब इस कार की वजह से हुआ। यह अपशगुन कार है और अनलकी भी। इस कार की मरम्मत न करें, जितनी जल्दी हो सके इसे बेच दें। संजना जो यह सब सुन रही थी, अचानक सुनील के हाथ पकड़ कर बोली नहीं पापा इस कर को मत बेचो। माँ, यह बहुत लकी कार है जिसने आज हमें बचाया। अगर, आज हम अपने स्कूटर पर होते तो हमें जरूर गहरी चोट लग सकती थी। मत बेचो... पापा प्लीज पापा। संजना की बात सुनकर सुनील और गीता दोनों ही हैरान रह गए। उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि एक छोटी बच्ची इस स्थिति को इतनी समझदारी से देख सकती है। सुनील को यह एहसास हुआ कि व्यक्ति जैसा सोचता है, उसे सब कुछ वैसा ही नजर आता है। सब अपने देखने के नजरिए पर ही निर्भर करता है। हर व्यक्ति को सोचने का नजरिया विभिन्न होता है और हमें स्थिति को सकारात्मकता के साथ सोचकर निर्णय लेना चाहिए।

"गीता" मुझे पता है तुम शॉक में हो, इसलिए ऐसा बोल रही हो। ठंडे दिमाग से सोचो तो पता चलेगा कि संजना सही कह रही है। यह कार हमारे लिए शुभ है। इस कार ने हमारी जान बचाई है, हमें कार को बेचना नहीं लेकिन ठीक करवाना चाहिए और इसे अपने पास रखना चाहिए", सुनील ने गीता को प्यार से समझाया। सुनील की बात सुनकर, गीता ने भी अपनी बेटी की बात मान ली। अगले दिन सुनील ने मैकेनिक को बुलाया और कार की मारम्मत करवाई। उन्होंने कुछ भी भुगतान नहीं किया, सब कुछ कार बीमा में कवर किया गया था। संजना अपनी कार को फिर से सही हालत में देखकर बहुत खुश हुई। इसके बाद, उन्होंने अपनी नई कार में नई यादगार यात्राएं की और हर बार संजना ने अपनी उस कार को देखकर खुशी और गर्व महसूस किया। इस घटना ने उनके परिवार को और भी मजबूत बना दिया और उन्होंने सीखा कि एक छोटी सी घटना बहुत बड़ा सीख दे सकती है। संजना की समझदारी और मासूमियत ने उन्हें यह सिखाया कि जीवन में हर चीज का सही परिप्रेक्ष्य समझना बहुत महत्वपूर्ण है।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति

श्रीमती जी. संगीता
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी, 2024) भारत में शिक्षा का गुणवत्ता में परिवर्तन लाने और उसे बढ़ाने के उद्देश्य से कई प्रमुख सिद्धांतों द्वारा निर्देशित है:

- प्रत्येक बच्चे की अद्वितीय क्षमताओं की खोज और पोषण पर जोर देना।
- ठोस शैक्षिक आधार बनाने के लिए प्रारंभिक साक्षरता और अंकगणित कौशल को मजबूत करना।
- विभिन्न विद्धार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अनुकूलनीय और विविध शिक्षण विधियों को बढ़ावा देना।
- सार्वजनिक शिक्षा के बुनियादी ढ़ांचे और पहुंच को मजबूत करने के लिए संसाधनों की प्रतिबद्धता।
- वैश्विक मानदंड़ो के अनुरूप सभी स्तरों पर शैक्षिक मानकों को उन्नत करना।
- छात्रों के बीच भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों और विरासत के प्रति गहरा जुड़ाव बढ़ाना।
- शिक्षा में नवाचार और उन्नति को बढ़ावा देने के लिए अनुसंधान पहलों में निवेश करना।
- प्रौद्योगिकी के उपयोग को प्रोत्साहित करना और शिक्षार्थियों के बीच डिजिटल साक्षरता कौशल को बढ़ाना।
- भाषाई क्षितिज को व्यापक बनाने के लिए अनेक भारतीय और विदेशी भाषाएँ सीखने के अवसर प्रदान करना।
- छात्रों की रचनात्मकता और तार्किक तर्क क्षमताओं का विकास करना ताकि उन्हें भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार किया जा सके।
- जबाबदेही और विश्वास के लिए शैक्षिक नीतियों और प्रक्रियाओं को पारदर्शिता सुनिश्चित करना।

इन सिद्धांतों का सामूहिक उद्देश्य एक मजबूत शैक्षिक ढांचा तैयार करना है जो छात्रों को वैश्वीकृत और ज्ञान संचालित समाज में सफल होने के लिए आवश्यक प्रासंगिक ज्ञान, कौशल और मूल्यों से लैस करे।

नई शिक्षा नीति 2024 की विशेषताएँ

- मानव संसाधन प्रबंधन मंत्रालय का नाम बदलकर शिक्षा मंत्रालय कर दिया गया।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत शिक्षा का सार्वभौमिकरण
- 5+3+3+4 का नया शिक्षा पैटर्न (12 वर्ष की स्कूली शिक्षा और 3 वर्ष की प्री स्कूलिंग)
- व्यावसायिक परीक्षण इंटर्नशिप कक्षा 6 से शुरु होगी
- कक्षा 5 तक की शिक्षा मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा में पढ़ाई जाएगी।
- कोई विज्ञान, वाणिज्य या कला स्ट्रीम नहीं – छात्र कोई भी विषय चुन सकते हैं।

- कक्षा 6 से छात्रों को कोडिंग सिखाई जाएगी।
- आभासी प्रयोगशालोओं का विकास।

मंत्रालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार एक कार्यान्वयन और समीक्षा समिति स्थापित करने की योजना बना रहा है, जिसकी निगरानी उच्च शिक्षा विभाग के अधिकारी करेंगे। समिति नीति की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने के लिए जिम्मेदार होगी। इसके अलावा, क्रेडिट बैंक प्रणाली और आई आई टी को बहुविषयक संस्थानों में बदलने के लिए एक टास्क फोर्स का गठन किया जाएगा। इस योजना के क्रियान्वयन में देरी होने की स्थिति में राज्य और जिला अधिकारियों को जबाबदेह ठहराया जाएगा।

5+3+3+4 संरचना नई शिक्षा नीति में पेश किया गया एक नया शैक्षिक ढांचा है, जिसका उद्देश्य पारंपरिक शिक्षण प्रणाली को बदलना और अनुकूलित करना है ताकि शिक्षार्थियों की उभरती जरूरतों को बेहतर ढंग से पूरा किया जा सके। यह बुनियादी शिक्षा, मिडिल स्कूलिंग, माध्यमिक शिक्षा और हाई स्कूल चरणों पर जोर देता है।

पहला खंड पाँच वर्षों का है, जिसमें बच्चे की शिक्षा की शुरूवाती वर्ष शामिल है। इसमें शामिल है

- 3 वर्ष की पूर्व – प्राथमिक शिक्षा, जिसमें खेल कूद और गतिविधि – आधारित इंटरैक्टिव शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।
- अगले दो वर्षों में कक्षा 1 और 2 शामिल हैं, जिनमें बुनियादी साक्षरता और अंक ज्ञान पर जोर दिया जाएगा।

प्रारंभिक चरण यह तीन वर्षीय चरण ग्रेड 3 से 5 तक के छात्रों को शामिल करता है। एक बहुआयामी शिक्षण दृष्टिकोण व्यापक शिक्षण अनुभव के लिए विषयों को एकीकृत करता है। इस चरण मे खोज और अन्वेषण पर अधिक जोर दिया जाता है। पाठ्यक्रम जटिल अवधारणाओं से परिचय कराता है, तथा रटने की पद्धति से हटकर समझ और अनुप्रयोग को बढ़ावा देता है।

मध्य चरण यह खंड, जिसमें कक्षा 6 से 8 तक के बच्चे शामिल हैं, विषय वस्तु पर गहराई से चर्चा करता है। विषयों के अधिक विस्तार से समझाया जाता है, जिससे छात्रों को आलोचनात्मक ढंग से सोचने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। परियोजना आधारित शिक्षा शुरू की गई है, जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि छात्रों को व्यावहारिक अनुभव प्राप्त हो।

माध्यमिक चरण अंतिम खंड जिसमें कक्षा 9 से 12 तक के छात्र शामिल हैं, छात्रों को उनके भविष्य के प्रयासों के लिए तैयार करता है, चाहे वह उच्च शिक्षा हो या व्यावसायिक मार्ग। इन चार वर्षों के दौरान छात्रों को अपनी रूचि के विषय चुनने की छूट है। वास्तविक दुनिया के कौशल और दक्षताओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए समग्र विकास पर जोर दिया जाता है।

निष्कर्ष रूप में, 5+3+3+4 संरचना शैक्षिक ढांचे के पुनर्गठन की दिशा में एक प्रगतिशील कदम है। यह सुनिश्चित करता है कि सीखना निर्बाध, एकीकृत और हर शिक्षार्थी की विविध आवश्यकताओं के अनुकूल हो।

बच्चों को अपना समय ज़रूर दें

श्री जितेन्द्र कुमार जायसवाल
क.हि.अ.

कहानी एक बालवाटिका में काम करने वाली स्कूल टीचर की है जिसके दो बच्चे हैं। टीचर साहिबा का नाम है, गीता और उनके बच्चों में बड़े बच्चे का नाम भोलू जो कक्षा 9 में पढ़ाई करता है एवं छोटे वाले लड़के का नाम है गोलू जो तीसरे कक्षा में पढ़ता है। छोटा लड़का बहुत ही प्यारा और सब का मन मोह लेने वाला था मानो उसको कोई देख ले तो उसका मन भी उस बच्चे के साथ समय बिताने का करने लगे क्योंकि वह सब का लाडला होने के साथ साथ बहुत अच्छे संस्कार और बड़े ही अदब से बातें करता था। मानो कोई बुजुर्ग के समान उसके पास अनुभव हो।

गीता के पति बैंक में मेनेज़र के पद पर कार्यरत हैं। वे अपने कामों में इतने व्यस्त रहतें हैं कि अपने बच्चों को कभी समय नहीं दे पाते थे। वे प्रतिदिन समय से उठते और अपने कार्यालय में पहुँचते और घर रात को काफी देरी से आते थे और आते ही अपने मोबाइल में व्यस्त हो जाते। अपने हाथों में मोबाइल लेकर रात का खाना खाते जिससे छोटे लड़के का मन बहुत ही दु:खी था।

गोलू स्कूल से आने के बाद रोज अपने पापा का बेसब्री से इंतजार करता था कि आज पापा उनके साथ समय बिताएंगे और कहानियाँ सुनाएंगे लेकिन उनके पापा ने मोबाइल पर अपने कामों और नित्य नए नए एप्स जैसे कि इन्स्टाग्राम, फेसबुक, ट्विटर और वाट्सअप जिनका निमार्ण ही लोगों को नजदीक लाने के लिए किया गया था में व्यस्त हो जाया करते थे। अपने पापा के इस आदत से गोलू बहुत ही परेशान हो गया था। कुछ समय बीतने के बाद मोबाईल की यही लत गीता और उनकी सास सीता जी को भी लग गई जिससे अब दोनों बच्चे सबके सामने होते हुए भी किसी को दिखाई तक नही दे रहे थे।

यह सिलसिला बहुत दिनों तक चलता रहा। एक दिन गोलू ने अपने बड़े भाई भोलू से कहा भईया ये मोबाइल में क्या होता है जो पापा, मम्मी और दादी माँ सब ने जब से मोबाइल लिया है तब से हम लोगों के साथ समय बिताना बंद कर दिया है। इस जबाब का उत्तर भोलू न दे सका पर यह सवाल भोलू के मन को झकझोर कर रख दिया। एक दिन गीता के स्कूल में लेख लिखने की प्रतियोगिता का आयोजन हो रहा था। जिसका विषय रखा गया था "My Wish" आर्थात् "मेरी मनोकामना"। स्कूल के बहुत सारे बच्चों ने इस विषय पर लेख लिखा। चूकिं गीता हिंदी की अध्यापिका थी इसलिए इन सारे लेखों को जाँचने का काम भी गीता को ही मिला। शाम को घर आकर गीता ने कुछ देर अपने मोबाइल में पहले की भांति समय बिताने के बाद कापियों को जाँचना शुरू किया। बहुत से बच्चों की मनोकामना कलेक्टर, पुलिस, डॉक्टर बनने की थी, और कुछ सेना मे जाने चाहते थे तो कोई नेता तो कोई एक्टर बनना चाहता था। पर एक बच्चे की

मनोकामना थी कि वह मोबाइल बन जाए। यह पढ़कर गीता ने बच्चे का नाम जानने के लिए उत्तर पृष्ठ के पहले पेज़ पर गई तो वह रोने लगी। रोने की आवाज़ सुनकर गीता का पति उसके पास आया और पूछा- "गीता क्या हुआ ? तुम रो क्यों रही हो?"

गीता कुछ बोलने में असमर्थ थी क्योंकि उस बच्चे की मनोकामना थी कि वह मोबाइल बन जाए ताकि उसके घर वाले उसके साथ समय बिताए। उस बच्चे ने लिखा था कि जब से घर में सभी लोगों ने मोबाइल लिया है तब से सब मेरे सामने तो होते हैं पर कोई भी मुझसे न तो बात करतें है और ना ही मेरे साथ खेलते हैं जिससे मैं बहुत ही अकेला महसूस करता हूँ इसलिए हे ईश्वर ! मुझे आप मोबाइल बना दीजिए ताकि मैं कभी अपने पापा तो कभी अपनी माँ तो कभी अपनी दादी माँ की हाथों का प्यार महसूस कर सकूँ और उनके साथ समय बिता सकूँ। यह बताने के बाद गीता और जोर जोर से रोने लगी। गीता को गले से लगाते हुए उसके पति ने कहा, अरे इसमें कहाँ इतनी बड़ी बात है वह बच्चा जैसा महसूस करता है वैसा लिख दिया। यह बात सुनकर गीता रोते हुए बोली, "अज़ी ये लेख अपना ही बच्चा गोलू ने लिखा है"। यह सुनकर गीता के पतिदेव भी बड़े भावुक हो गए और गोलू को आवाज़ लगाई और उसे अपने गले से लगा लिया।

एक बच्चे की बुद्धिमता

श्रीमती सुबश्रीबाला
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

विल्लियम् वर्डस्वर्थ ने कहा है कि "बच्चे ही मनुष्य का पिता है " ये आपको पता है क्यों?
बच्चों का स्वभाव ऐसा होता है कि उनसे हमें जीवन का सबक मिलता है। बच्चों को ध्यान से निरीक्षण करने पर हमें सांसारिक ज्ञान मिलता है।

बच्चा रो रो कर हमेशा अपनी माँ के पास ही रहना चाहता है। इससे हम यह सीख सकते हैं कि जो भी हो, हमें हमेशा जड़ो से जुड़े रहना चाहिए और हमें हमारा मूल को नहीं भूलना चाहिए।
अपने खिलौने के साथ खेलने वाला बच्चा अतीत के बारे में नहीं सोचता है, ना ही भविष्य के बारे में। वह बस अपने सामने के खिलौनें से खेलने में आनंद लेता है। इस तरह हमें उनसे वर्तमान क्षण का आनंद लेना सीखना चाहिए।

जब हम एक बच्चे को अपने पास बिठाकर रोते हैं तब वह भी बिना सोचे समझे रोने लगता है। जब हम हँसते हैं, तब वह भी हमारे साथ हँसता है। इससे हम दूसरों की भावनाओं को महसूस करना सीख सकते हैं। बच्चे अपनी उंगलियों को बिना डर के आग में डाल देते हैं। जब वह कष्ट में होता है तो रोता है । इससे हम "बहादुरी" और "खुद को व्यक्त करना" जैसे गुणों को बच्चों से सीख सकते है।
एक बच्चा हमेशा नई चीजों के बारे में सीखने के लिए तत्पर रहता है। उसकी कल्पना की कोई सीमा नहीं होती। यह गुण हमें जीवन में जिज्ञासु रहना सिखाता है। इस तरह सोचने से एक बच्चे से सीखने के लिए बहुत सारे गुण मिलता है।

क्या यह सच नहीं है कि "सीखना कभी बंद ना करें क्योंकि जिंदगी कभी भी सिखाना बंद नहीं करती।"

लोगों की पहचान

श्री राजीव कुमार
स.लेप.अ.

जीवन में जब हम कार्यक्षेत्र में उतरते हैं तो हमारी मुलाक़ात बहुत से लोगों से होती है कि कई बार हमें यह निर्णय करना कठिन हो जाता है कि कौन आदमी कैसा है? अक्सर ऐसा होता है कि हम सामने वाले के विषय में जो अनुमान लगाते हैं वह कुछ और ही निकलता है। हम यदि किसी को ईमानदार और शरीफ समझकर उससे मित्रता कर लेते हैं तो कभी कभी कोई इंसान अपनी कोई मजबूरी बताकर हमसे कुछ धन की मांग करता है, हम दे देते हैं और वह गायब हो जाता है। पैसा लौटना तो दूर वह शक्ल तक नहीं दिखाता। उसका तो काम ही लोगों को मित्र बनाकर ठगना है। कितना दुख होता है अपनी मूर्खता पर।

घर में हम नौकर रखते हैं । कुछ दिनों में वह हमारे करीब आ जाता है और हम मान लेते हैं कि वह ईमानदार है। वह हमारा धन संपत्ति लेकर भाग जाता है। आखिर ऐसा क्यों होता है? चूँकि हमें दूसरों को पहचानने का ज्ञान और अभ्यास नहीं है। कभी - कभी आपको ये महसूस होता होगा कि आपकी बातों में कोई दिलचस्पी नहीं दिखा रहा है उन्हें आपकी बातें अच्छी नहीं लग रही है। इसका कारण यह है कि आप चेहरे की पहचान नहीं कर पा रहे हैं।

व्यापार में विभिन्न प्रकार के लोगों से हमारी मुलाक़ात होती है। सच्चे भी, झूठे भी, ईमानदार और बेईमान भी। यदि आपको चेहरा पढ़ना आता है तो धोखा कम खाएगें। चेहरे और चाल ढाल देखकर किसी के चरित्र का पता बड़ी आसानी से लगा सकते हैं। बहुत सी छोटी=छोटी बातों पर हम ध्यान नहीं देते हैं जैसे किसी के चलने, खड़े होने, बैठने, बोलने, खाने के ढंग से उसके चरित्र और स्वभाव का पता लग सकता है। उदाहरण के लिए –

- खिलाड़ी प्रकृति का आदमी अपनी एड़िया फर्श पर दबा कर बैठता है। प्रतियोगिता पसंद करता है।
- जो व्यक्ति अपनी पैरों को आर पार करके खड़ा होता है, वह क्षमा माँगने की प्रकृति का होता है।
- खुशी मुस्कान वाला व्यक्ति आम तौर पर शक्ति तथा स्नेह का प्रतीक होता है।
- कम बोलने वाला भी अगर हृदय से अच्छा होता है तो उसकी मुस्कान सजीव होती है। वह अच्छी प्रकृति का है।
- जो व्यक्ति बहुत कम मुस्कुराता है, वह कठोर भी हो सकता है, किंतु उसमें सद्गुण व साधु भाव भी हो सकता है।

- आप किसी से कुछ पूछ रहे हैं, उसकी किसी विषय पर सहमति माँग रहे हैं और वह उत्तर देते समय नाक मलता है तो समझ लीजिए कि वह आपकी बात से सहमत नहीं है। मुँह से स्वीकृति देकर भी वह आपकी बात को नजर अंदाज कर रहा है।
- जो बातें करते समय लगातार सामने बैठे हुए कमीज, कोट, टाई छूता है, बाँह पकड़कर अपनी बात कहता है, उसमें विश्वास की कमी अथवा आत्मनिर्भरता नहीं है।

दूसरे को पहचानने के लिए अपने आसपास की हर चीज को ध्यान से देखिए। जो व्यक्ति आसानी से एक नजर में किसी से भी चरित्र स्वभाव और आदतों को भाँप लेते हैं, वह सफलता की सीढ़ियों पर अवश्य चढ़ता जाता है जो आदमी को देखकर भी नहीं परख सकता, ना ही पहचान कर सकता है, वह कभी भी सफल नहीं हो सकता है।

समय और सत्य का मूल्य

श्री गिरीश कुमार
लेखापरीक्षक

दुनिया में मूल्यवान वही होता है जो या तो दुर्लभ होता है या जिसका कुछ महत्त्व होता है और उसका तो मूल्य और अधिक होता है जिसका ना तो उत्पादन किया जा सकता है और ना ही उसे नियंत्रित किया जा सकता है। 'समय' उनमें से सबसे प्रमुख है दुनिया में आने वाले प्रत्येक मनुष्य के पास एक निश्चित मात्रा में समय होता है जो उसके जन्म लेने के समय से ही निरंतर एक नियमित गति से घटता जाता है और जो क्षण व्यक्ति एक बार जी लेता है वह दोबारा उस जीवन में लौटकर नहीं आता।

क्या सत्य उससे भी अधिक मूल्यवान होता है इसको जानने के लिए सबसे पहले यह जानना होगा कि वास्तव में सत्य क्या होता है? सत्य शब्द का अर्थ होता है शास्वत, वास्तविक या यथार्थ सत्य वास्तव में एक नैतिक मूल्य होता है जिस पर मानव समाज टिका होता है।

कहा जाता है कि सत्य के रास्ते पर चलने वाले की ही जीत होती है और इतिहास में इसके अनेकों उदाहरण भी हैं चाहे वह पौराणिक कथाओं में रावण के खिलाफ राम की विजय हो या महाभारत में पांडवों की या वास्तविक जीवन में महात्मा गांधी द्वारा सत्याग्रह के हथियार का प्रयोग कर भारत को आजादी दिलवाना हो सभी जगह सत्य की ही जीत हुई है लेकिन सत्य का रास्ता इतना आसान नहीं है। सत्य को एक साधन के रूप में प्रयोग करने वालों को इसके लिए अत्यधिक मूल्य चुकाना पड़ता है जैसे राम को वनवास, पांडवों को अपना राज्य व गांधीजी को अंग्रेजों का अमानवीय अत्याचार सहना पड़ा था इसी प्रकार आज भी पाखंड का विरोध करने व सत्य को उद्घाटित करने वाले बुद्धिजीवियों को सत्य की कीमत चुकानी पड़ती है। इसीलिए कहा जाता है कि "सत्य परेशान तो हो सकता है लेकिन पराजित नहीं।"इसके अलावा सत्य केवल इसीलिए ही मूल्यवान नहीं होता कि इसके लिये अत्यधिक मूल्य चुकाना पड़ता है बल्कि इसीलिए भी मूल्यवान होता है क्यों कि इस पर अन्य मूल्य टिके हैं जैसे विश्वास, ईमानदारी, संवेदनशीलता, दया, अपनत्व और जिन पर टिकी है मानव की मानवता। इस प्रकार सत्य एक तरह से मानव के अस्तित्व का आधार है। जिसका वर्णन महात्मा बुद्ध ने भी किया है कि 'तीन चीजें कभी नहीं छिपाए जा सकती हैं सत्य, ईश्वर और ज्ञान।'

अगर इनको छुपाया गया तो प्रतिकूल एवं दूरगामी परिणाम झेलने पड़ेंगे। धरती पर मनुष्य का वास्तविक लक्ष्य भौतिक सुख-सुविधाओं को प्राप्त करने से नहीं बल्कि उस परमात्मा को प्राप्त करने में है जो प्रत्येक मनुष्य का अंतिम लक्ष्य है इसलिए कहा गया है कि

सांच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप,

जाके हिरदे सांच है ताके हिरदे आप ।

हाँ यह अलग बात है कि कई बार सत्य के रास्ते पर चलने वालों को अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा वांछित लक्ष्य प्राप्त होने में देर लगती है लेकिन यह सत्य है कि विजय हमेशा सत्य की ही होती है पर यह भी सही है कि भगवान के घर देर है लेकिन अंधेर नहीं। गांधी जी ने कहा है कि 'सत्य ही ईश्वर है'। इस प्रकार हम देखते हैं कि जहाँ सत्य को प्राप्त करने के लिए अत्यधिक मूल्य चुकाना पड़ता है वहीं सत्य को प्राप्त कर लेने से हम अपने लक्ष्यों को आसानी से प्राप्त कर लेते हैं जिससे मानवता का आधार मजबूत होता है और मानवमात्र पर विश्वास टिका रहता है क्योंकि जहाँ सत्य नहीं होता वहाँ अराजकता और अन्याय अपना मुँह उठाते हैं और शायद इसलिये भारत सरकार ने अपना राष्ट्रीय आदर्श वाक्य "सत्यमेव जयते" रखा है तथा भारतीय नागरिकों को सत्य जानने के लिये सूचना का अधिकार अधिनियम पारित कर सत्य की प्राप्ति हेतु एक महत्त्वपूर्ण हथियार मुहैया करवाया है क्योंकि धरती पर समय तो प्राकृतिक रूप से सबको बराबर मिला है वही धरती पर प्राकृतिक अधिकार भी बराबर ही मिले हैं लेकिन समय के साथ ही झूठ का सहारा लेकर व्यक्ति क्यों उसके प्राकृतिक अधिकारों से वंचित किया जाता रहा है जिसे सत्य के माध्यम से ही वह दुबारा प्राप्त कर सकता है अन्यथा धरती पर उसे मिला अधिकार वह प्राप्त नहीं कर पाएगा और बिना अधिकारों के उसका जीवन निरर्थक ही रहेगा । इसलिए कहा जाता है कि जीवन लंबा नहीं महान होना चाहिए।

लेकिन क्या उपयुक्त विवेचन से यह मान लें कि सत्य समय से अधिक मूल्यवान होता है? नहीं ! समय का भी बराबर महत्त्व होता है क्योंकि जीवन में प्रत्येक क्रिया या वस्तु का एक निश्चित समय होता है। वह वस्तु या क्रिया उसी समय मूल्यवान होती है जब समय उपयुक्त होता है अगर वह चीज समय पर ना मिले तो वह कितनी भी ज़रूरी क्यों न हो हमारे लिए निरर्थक होती है जैसे कृषकों के लिए यह कहा गया है कि 'का वर्षा जब कृषि सुखाने, समय चूकि पुनि का पछिताने'।

अतः वर्षा का मूल्य उसी समय है जब वह समय पर हो, अतः यह समय ही है जो किसी का मूल्य निर्धारित करता है। इसी प्रकार उस न्याय को न्याय नहीं माना जाता जो समय पर ना मिले जिसके लिए एक महत्त्वपूर्ण कहावत प्रचलित है कि Justice delayed is justice denied.

इस प्रकार उपरोक्त विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि समय और सत्य दोनों एक दूसरे के साथ से अपना मूल्य प्राप्त करते हैं। यह ज़रूरी होता है कि समय कितना भी लगे लेकिन सत्य उद्घाटित होना ही चाहिए और सत्य का ही बोलबाला होना चाहिए। अतः समय और सत्य दोनों अत्यधिक मूल्यवान होते हैं । एक बार समय से तो समझौता किया जा सकता है, लेकिन सत्य से समझौता नहीं किया जा सकता क्योंकि समय व्यक्ति को मिला एक ऐसा कोश है जिसका समाप्त होना तो निश्चित है लेकिन यदि उसके सही मूल्य को समझकर उसे सही जगह निवेश किया जाए तो आपके जीवन में मिला यह थोड़ा सा ही समय उस पूरे युग को मूल्यवान बना देता है। जबकि सत्य ऐसा मूल्य है जो पूरी मानव जाति को वास्तविक मानवतावादी मान बनाता है।

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी का महत्व

श्री श्रीराम

स.लेप.अ

भारतीय स्वाधीनता संग्राम भारतीय इतिहास का वह महत्वपूर्ण अध्याय है, जिसने न केवल एक राष्ट्र की स्वतंत्रता की नींव रखी बल्कि भाषा, संस्कृति और सामाजिक संरचना में भी व्यापक परिवर्तन किए। इस संघर्ष में विभिन्न भाषाओं ने अपना योगदान दिया, लेकिन हिंदी का स्थान सबसे प्रमुख रहा। हिंदी ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान एक व्यापक जन भाषा के रूप में कार्य किया और भारतीयों के बीच एकता का प्रतीक बनी। हिंदी का उद्भव 19वीं सदी के मध्य से देखा जा सकता है, जब इस भाषा को औपचारिक रूप से विकसित किया गया और इसे एक राष्ट्रीय भाषा के रूप में मान्यता दी जाने लगी। हिंदी एक ऐसी भाषा है जो भारत के बड़े वर्ग द्वारा बोली और समझी जाती थी। इससे हिंदी स्वाभाविक रूप से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गई। यह वह समय था जब भारतीय समाज जागरूक हो रहा था और अपने अधिकारों की मांग करने लगा था। ऐसे में हिंदी ने जनता को एक मंच पर लाने और उन्हें एकजुट करने का कार्य किया।

1857 के स्वतंत्रता संग्राम में भी हिंदी का विशेष महत्व रहा। हालांकि इस संग्राम में मुख्य रूप से कई क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग हुआ, फिर भी हिंदी ने एक केंद्रीय भूमिका निभाई। संग्राम के बाद हिंदी पत्रकारिता का उद्भव हुआ, जिसने भारतीयों को ब्रिटिश शासन के खिलाफ एकजुट करने का कार्य किया। 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई और इसके साथ ही स्वतंत्रता संग्राम का औपचारिक आरंभ हुआ। इस संग्राम में हिंदी को मुख्य भाषा के रूप में अपनाया गया। महात्मा गांधी, बाल गंगाधर तिलक, मदन मोहन मालवीय, सुभाष चंद्र बोस और जवाहरलाल नेहरू जैसे महान नेताओं ने हिंदी भाषा का प्रयोग करते हुए जनमानस को जागरूक किया। हिंदी उनके भाषणों और लेखन का प्रमुख माध्यम बनी।

गांधी जी ने हिंदी को भारत की "राष्ट्रभाषा" के रूप में देखा। उनका मानना था कि अगर भारत को एकजुट होना है, तो उसके पास एक साझा भाषा होनी चाहिए और हिंदी यह भूमिका निभा सकती है। उनके नेतृत्व में हिंदी को भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में केंद्रीय स्थान प्राप्त हुआ। उनके द्वारा स्थापित 'नवजीवन' पत्रिका और 'यंग इंडिया' जैसे प्रकाशनों ने हिंदी भाषा के माध्यम से भारतीयों को प्रेरित किया और उन्हें स्वतंत्रता संग्राम के महत्व से अवगत कराया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हिंदी पत्रकारिता और साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान रहा। हिंदी समाचार पत्रों और पत्रिकाओं ने अंग्रेजों की नीतियों के खिलाफ आवाज उठाई और भारतीयों को स्वतंत्रता संग्राम के प्रति जागरूक किया। स्वतंत्रता संग्राम के समय प्रमुख हिंदी पत्रों में 'उदंत मार्तंड', 'भारत मित्र', 'सार्वजनिक', 'हिंदी प्रभा', 'प्रभा' और 'नवजीवन' जैसे पत्र शामिल थे। उदंत मार्तंड 1826 में प्रकाशित हुआ था और इसे पहला हिंदी समाचार पत्र माना जाता है। हालांकि यह बहुत लंबे

समय तक नहीं चला, लेकिन इसने हिंदी पत्रकारिता के विकास की नींव रखी। इसके बाद कई हिंदी पत्रिकाएं और समाचार पत्र सामने आए जिन्होंने ब्रिटिश शासन की आलोचना की और भारतीयों को स्वतंत्रता संग्राम के लिए प्रेरित किया।

हिंदी साहित्य में भी स्वतंत्रता संग्राम का गहरा प्रभाव देखा गया। भारतीय साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से स्वतंत्रता की भावना को जागृत किया। भारतेन्दु हरिश्चंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, रामचंद्र शुक्ल, प्रेमचंद, सुभद्रा कुमारी चौहान, मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद आदि साहित्यकारों ने अपनी कविताओं, कहानियों और लेखों के माध्यम से लोगों को प्रेरित किया और स्वतंत्रता आंदोलन के प्रति जागरूक किया। उदाहरण के लिए, सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता 'झांसी की रानी' आज भी भारतीयों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। यह कविता रानी लक्ष्मीबाई की वीरता और संघर्ष की गाथा है जिसने अंग्रेजों के खिलाफ अपनी बहादुरी का परिचय दिया। इस प्रकार के साहित्य ने जनमानस को प्रेरित किया और उन्हें स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया।

महात्मा गांधी ने हिंदी को स्वतंत्रता संग्राम के लिए सबसे उपयुक्त भाषा माना। उनके लिए हिंदी एक ऐसी भाषा थी, जो भारत के विभिन्न हिस्सों में समझी और बोली जाती थी और जो स्वतंत्रता संग्राम के संदेश को जन-जन तक पहुंचा सकती थी। गांधी जी ने हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए विभिन्न कदम उठाए। उन्होंने हिंदी को न केवल एक राष्ट्रीय भाषा के रूप में देखा बल्कि इसे एक एकजुट भाषा के रूप में प्रस्तुत किया जो भारतीयों को एक साझा मंच पर ला सकती थी। गांधी जी ने हिंदी साहित्य और पत्रकारिता के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके द्वारा स्थापित 'हरिजन' पत्रिका में उन्होंने हिंदी भाषा का व्यापक प्रयोग किया और इसके माध्यम से भारतीयों को स्वतंत्रता संग्राम के महत्व से अवगत कराया। गांधी जी के विचारों और उनके आंदोलनों के प्रति लोगों को हिंदी के माध्यम से ही जागरूक किया गया। उनका मानना था कि भाषा एक सशक्त माध्यम है जिसके माध्यम से जनता को संगठित किया जा सकता है। उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान जैसे हिंदी भाषी राज्यों ने स्वतंत्रता संग्राम में अग्रणी भूमिका निभाई। इन राज्यों के नेता, साहित्यकार और समाज सुधारक हिंदी भाषा का प्रयोग करके जनता को जागरूक करते थे और स्वतंत्रता संग्राम के लिए प्रेरित करते थे। उत्तर प्रदेश और बिहार के कई नेताओं ने हिंदी भाषा में जनसभाएं आयोजित की और जनता को ब्रिटिश शासन के खिलाफ संगठित किया। उदाहरण के लिए, बाल गंगाधर तिलक और लाला लाजपत राय जैसे नेता हिंदी भाषी क्षेत्रों में अपनी जनसभाओं में हिंदी का प्रयोग करते थे जिससे जनता के बीच राष्ट्रीयता की भावना जागृत होती थी।

स्वराज (स्वयं का शासन) की मांग भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण अंग था। इस आंदोलन में भी हिंदी का प्रमुख स्थान रहा। गांधी जी ने स्वराज की अवधारणा को भारतीय जनता के बीच फैलाने के लिए हिंदी का प्रयोग किया। उनके भाषण और लेखन में स्वराज की महत्ता को हिंदी के माध्यम से ही प्रस्तुत किया गया। स्वराज का विचार भारतीय जनमानस के साथ गहरे रूप से जुड़ गया और हिंदी इस विचार को फैलाने का प्रमुख माध्यम बनी। इसके अलावा, हिंदी ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान गैर सहयोग आंदोलन,

असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन आंदोलनों में हिंदी के माध्यम से जनता को संगठित किया गया और उन्हें ब्रिटिश शासन के खिलाफ खड़ा किया गया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, जब भारतीय संविधान का निर्माण हो रहा था, तब भी हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका थी। संविधान सभा में यह चर्चा का प्रमुख मुद्दा था कि भारत की राष्ट्रीय भाषा क्या होगी ? बहस के बाद हिंदी को राजभाषा के रूप में मान्यता दी गई। यह निर्णय हिंदी के व्यापक प्रयोग और उसके महत्व को देखते हुए लिया गया। संविधान सभा में डॉ. भीमराव अंबेडकर, डॉ. राजेंद्र प्रसाद, जवाहरलाल नेहरू और अन्य नेताओं ने हिंदी को राष्ट्रीय और राजभाषा बनाने के लिए समर्थन किया ताकि यह पूरे देश में एकता और अखंडता का प्रतीक बने।

हिंदी ने जनमानस को जागरूक किया, राष्ट्रीयता की भावना को प्रोत्साहित किया और भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों को एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हिंदी केवल एक भाषा नहीं थी बल्कि एक ऐसी शक्ति थी जिसने भारतीयों को एक मंच पर लाने और उन्हें स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया। हिंदी के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम के विचार और आदर्श भारतीय समाज में गहरे उतरे और इसने स्वतंत्रता प्राप्ति में एक निर्णायक भूमिका निभाई। इस प्रकार, हिंदी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की आत्मा के रूप में उभरी जिसने न केवल भारत को स्वतंत्रता दिलाई बल्कि एक सशक्त और समृद्ध भाषा के रूप में अपनी पहचान भी बनाई।

मीडिया में हिंदी: बदलते परिप्रेक्ष्य और भाषा की भूमिका

श्री वेद व्यास बादल
लेखापरीक्षक

मीडिया, चाहे वह प्रिंट हो, इलेक्ट्रॉनिक हो या डिजिटल हो, समाज में भाषा के प्रयोग और उसकी समझ को गहराई से प्रभावित करता है। भारत जैसे बहुभाषी देश में मीडिया का यह प्रभाव और भी महत्वपूर्ण हो जाता है, जहां विभिन्न भाषाएं सह अस्तित्व में हैं और हर भाषा की अपनी सांस्कृतिक पहचान है। हिंदी, जो भारत की राजभाषा है और व्यापक जनसंख्या द्वारा बोली जाती है, मीडिया के विभिन्न रूपों में विशेष स्थान रखती है। विशेषकर 2000 के बाद, हिंदी का मीडिया में प्रयोग एक नए दौर में प्रवेश कर गया है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हिंदी अखबारों ने जनमानस को जागरूक करने, राष्ट्रीयता की भावना को फैलाने और सामाजिक सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। 20वीं सदी के मध्य में हिंदी पत्रकारिता ने अपना एक अलग स्थान बनाया और यह हिंदी भाषा के प्रसार का प्रमुख माध्यम बनी रही। भारत में प्रिंट मीडिया की शुरुआत अंग्रेजी भाषा में हुई थी लेकिन जल्द ही हिंदी पत्रकारिता ने भी अपनी पहचान बनानी शुरू कर दी। 1826 में 'उदंत मार्तंड' नामक पहला हिंदी समाचार पत्र कलकत्ता (अब कोलकाता) से प्रकाशित हुआ जिसने हिंदी पत्रकारिता की नींव रखी। यह पत्र भारतीय समाज को जागरूक करने और राष्ट्रीयता की भावना को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से शुरू किया गया था। हालाँकि, आर्थिक कठिनाइयों और सीमित संसाधनों के कारण यह पत्र अधिक समय तक नहीं चल पाया। हिंदी अखबारों और पत्रिकाओं ने स्वतंत्रता संग्राम के संदेश को जन जन तक पहुंचाने का काम किया। 'हिंदुस्तान', 'सार्वजनिक', 'भारत मित्र' और 'नवजीवन' जैसे पत्रिकाओं ने न केवल राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों पर रिपोर्टिंग की बल्कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के विचारों और आदर्शों को भी जन जन तक पहुंचाया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी प्रिंट मीडिया ने और अधिक व्यापक रूप से विस्तार किया। 1950 और 1960 के दशकों में हिंदी अखबारों की संख्या में बढ़ोतरी देखी गई। इस दौरान हिंदी पत्रकारिता ने तकनीकी विकास और समाचार प्रस्तुति में बदलाव का अनुभव किया। प्रिंट मीडिया का स्वरूप अधिक व्यावसायिक और आधुनिक हो गया जिससे हिंदी पत्रकारिता में विविधता आई। 21वीं सदी की शुरुआत में हिंदी प्रिंट मीडिया ने नए युग में प्रवेश किया। इस दौरान इंटरनेट और डिजिटल मीडिया का उभार हुआ, लेकिन प्रिंट मीडिया ने अपनी प्रासंगिकता बनाए रखी। हिंदी अखबारों ने डिजिटल युग की चुनौतियों का सामना करते हुए अपनी सामग्री को ऑनलाइन भी उपलब्ध कराया। कई प्रमुख हिंदी अखबारों ने अपने डिजिटल संस्करण शुरू किए और ई पेपर के माध्यम से भी पाठकों तक पहुंच बनाई। 21वीं सदी में, हिंदी अखबारों और पत्रिकाओं की संख्या में तेज वृद्धि देखी गई। जहां अंग्रेजी अखबार शहरी व उच्च मध्यम वर्ग के पाठकों पर केंद्रित थे,

वहीं हिंदी अखबार ग्रामीण क्षेत्रों और निम्न मध्यम वर्ग के पाठकों के लिए सुलभ बने। विशेषकर 'दैनिक जागरण', 'दैनिक भास्कर', 'हिंदुस्तान' और 'राजस्थान पत्रिका' जैसे प्रमुख हिंदी अखबारों ने अपने सर्कुलेशन में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की।

1980 के दशक में भारत में टेलीविजन की शुरुआत के साथ ही हिंदी का इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में प्रवेश हुआ। दूरदर्शन जैसे राष्ट्रीय चैनल ने हिंदी भाषा को घर घर तक पहुंचाया। 'रामायण', 'महाभारत', 'हम लोग', 'बुनियाद' जैसी धारावाहिकों ने न केवल मनोरंजन प्रदान किया बल्कि हिंदी भाषा को भी सशक्त किया। 1990 के बाद, जब निजी चैनलों की शुरुआत हुई, तब हिंदी का महत्व और बढ़ गया। हिंदी में समाचार चैनल, मनोरंजन चैनल और धार्मिक चैनल की संख्या में जबरदस्त वृद्धि हुई। समाचार चैनलों में 'आजतक', 'NDTV इंडिया', 'Zee News' और 'ABP News' जैसे प्रमुख चैनलों ने हिंदी भाषा में व्यापक कवरेज दी और दर्शकों के बीच लोकप्रियता हासिल की। इन चैनलों ने जटिल राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों को हिंदी में सरल और समझने योग्य तरीके से प्रस्तुत किया जिससे हिंदी भाषी जनता के बीच सूचना का प्रसार हुआ।

21वीं सदी की शुरुआत में डिजिटल मीडिया का उभार हुआ और इंटरनेट की पहुंच बढ़ने के साथ हिंदी भाषा ने इस क्षेत्र में भी अपनी जगह बनाई। डिजिटल मीडिया ने हिंदी को एक नए रूप में प्रस्तुत किया, जहां भाषा का प्रयोग केवल साहित्यिक या औपचारिक रूप में नहीं बल्कि गैर औपचारिक, तकनीकी और तात्कालिक रूप में भी होने लगा। हिंदी भाषा में ब्लॉगिंग, सोशल मीडिया, यूट्यूब चैनल, पॉडकास्टिंग और अन्य डिजिटल प्लेटफार्म पर बहुत तेजी से सामग्री बनने लगी। हिंदी ब्लॉगिंग और वेबसाइटों ने भाषा के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विशेषकर ग्रामीण और अर्ध शहरी क्षेत्रों में इंटरनेट की पहुंच बढ़ने से हिंदी डिजिटल मीडिया का प्रयोग तेजी से बढ़ा। 'नवभारत टाइम्स', 'पत्रिका', 'दैनिक जागरण' जैसे प्रमुख हिंदी समाचार पोर्टलों ने इंटरनेट पर अपनी पकड़ मजबूत की। सोशल मीडिया प्लेटफार्म जैसे फेसबुक, ट्विटर और यूट्यूब पर भी हिंदी कंटेंट का व्यापक प्रसार हुआ। इसके साथ ही कई स्वतंत्र यूट्यूबर्स और ब्लॉगर्स ने हिंदी में सामग्री तैयार कर अपनी पहचान बनाई।

भारतीय सिनेमा, विशेषकर बॉलीवुड में हिंदी का प्रमुख स्थान है। हिंदी सिनेमा ने भाषा के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 21वीं सदी में सिनेमा की शैली में काफी बदलाव आया है लेकिन हिंदी भाषा का महत्व बरकरार है। फिल्में अब न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी देखी जा रही हैं और इसके माध्यम से हिंदी भाषा की पहुंच वैश्विक स्तर पर हुई है। 'लगान', 'तारे ज़मीन पर', 'थ्री इडियट्स', 'दंगल' जैसी फिल्मों ने हिंदी को सिर्फ मनोरंजन का माध्यम नहीं बल्कि सामाजिक संदेशों का प्रसार करने का सशक्त माध्यम बनाया है। इन फिल्मों ने हिंदी भाषी समाज की भावनाओं, समस्याओं और आशाओं को विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया। साथ ही, हिंदी फिल्मों का वैश्विक दर्शकों के बीच भी लोकप्रिय होना इस बात का प्रमाण है कि भाषा का प्रभाव सीमाओं से परे हो सकता है।

विज्ञापन उद्योग में भी हिंदी का महत्वपूर्ण स्थान है। भारत में उत्पादों और सेवाओं को बेचने के लिए कंपनियां अक्सर हिंदी का उपयोग करती हैं, विशेषकर उन क्षेत्रों में जहां हिंदी प्रमुख भाषा है। हिंदी विज्ञापन न केवल प्रभावी होते हैं बल्कि ग्राहकों के साथ एक गहरा संबंध भी बनाते हैं। विज्ञापनदाताओं ने इस बात को समझा है कि हिंदी भाषा में संदेश अधिक प्रभावशाली हो सकता है क्योंकि यह ग्राहकों की भावनाओं और समझ के साथ जुड़ा हुआ है। टेलीविजन, रेडियो और डिजिटल विज्ञापन में हिंदी का व्यापक प्रयोग हुआ है। विज्ञापनों में हिंदी के विभिन्न रूपों का प्रयोग किया जाता है, जैसे कि स्थानीय बोलियों का मिश्रण, जिससे दर्शकों के साथ गहरा संबंध बनता है।

राजनीतिक क्षेत्र में हिंदी मीडिया की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। हिंदी समाचार चैनल और अखबारों ने राष्ट्रीय और क्षेत्रीय राजनीति को व्यापक कवरेज दी है। चुनाव के दौरान हिंदी मीडिया ने मतदाताओं को जागरूक करने, चुनावी मुद्दों पर चर्चा करने और नेताओं से सवाल पूछने का काम किया है। हिंदी भाषी क्षेत्रों में राजनीतिक अभियानों के लिए हिंदी मीडिया का प्रयोग राजनीतिक दलों द्वारा जोर शोर से किया जाता है। इससे न केवल जन जागरूकता बढ़ी है बल्कि मतदाताओं की सक्रियता में भी वृद्धि हुई है। भारत में हिंदी के साथ साथ कई अन्य क्षेत्रीय भाषाएं भी हैं, जिनका मीडिया में महत्वपूर्ण स्थान है। हिंदी मीडिया का क्षेत्रीय भाषाओं के साथ तालमेल बिठाने की चुनौती हमेशा रही है। हिंदी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के बीच संतुलन स्थापित करना मीडिया के लिए एक बड़ी चुनौती है। इसके बावजूद, हिंदी मीडिया ने इस संतुलन को बनाए रखने में सफलता प्राप्त की है। विशेषकर डिजिटल मीडिया में क्षेत्रीय भाषाओं का भी बड़ा उभार हुआ है। हिंदी मीडिया ने क्षेत्रीय भाषाओं के साथ सामंजस्य बैठाते हुए अपना स्थान बरकरार रखा है। हिंदी के साथ साथ अन्य भाषाओं में सामग्री तैयार करना और उनका प्रसारण करना एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ है।

हिंदी ने न केवल भाषाई बाधाओं को तोड़ा है बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक संबंधों को मजबूत किया है। यह कहना उचित होगा कि मीडिया में हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है और आने वाले समय में इसके प्रयोग के और भी नए और रोचक रूप सामने आएंगे।

हिंदी प्रिंट मीडिया को अपनी प्रासंगिकता बनाए रखने के लिए नवीनतम तकनीकों और नवाचारों को अपनाना होगा। डिजिटल मीडिया के साथ समन्वय स्थापित करना और ऑनलाइन प्लेटफार्मों पर अपनी उपस्थिति को मजबूत करना आवश्यक होगा। साथ ही, समाचारों की गुणवत्ता और विश्वसनीयता को बनाए रखना भी महत्वपूर्ण है, ताकि पाठक प्रिंट मीडिया पर भरोसा कर सकें। अपने सामाजिक उत्तरदायित्व को भी समझना होगा और समाज के महत्वपूर्ण मुद्दों पर सार्थक चर्चा और विचार विमर्श को प्रोत्साहित करना होगा। इसके माध्यम से वह समाज में एक सकारात्मक बदलाव ला सकता है और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में अपनी भूमिका को और सशक्त बना सकता है।

बेटियों का नसीब

श्री विजय कुमार
स.लेप.अ.

बेटे भाग्य से होते हैं, मगर बेटियां सौभाग्य से होती हैं। अर्थात सौ भाग्य जब मिलते हैं, तब जाकर किसी के घर में बेटी जन्म लेती है। इसलिए बेटे के जन्म पर खुशी मनाएं या न मनाएं लेकिन बेटी के होने पर घर तथा समाज में खुशी जरूर मनाएं। उक्त बातें जामाडोबा को ऑपरेटिव कॉलोनी स्थित पंचेश्वर मंदिर में आयोजित सात दिवसीय रुद्र महायज्ञ के दौरान आयोजित प्रवचन में अयोध्या से पधारे ध्रुव जी महाराज ने कहीं। उन्होंने कहा कि हर मां बाप को चाहिए कि अपने बेटे और बेटी को सभी सुविधाओं के साथ साथ संस्कार भी दें, क्योंकि बिना संस्कार के व्यक्ति पशु सामान है।

आज देश में लड़कियां खुश नहीं हैं क्योंकि उन्हें कई प्रकार के सामाजिक जुल्म सहने पड़ रहे हैं, उदाहरण के लिए जैसे किसी परिवार में यदि इकलौती लड़की पैदा होती है तो कुछ दिनों तक घर में मिठाईयां बांटी जाती है, हर्षोल्लास का माहौल बना रहता है। लेकिन कुछ दिनों पश्चात चिन्ता होने लगती है कि बेटी है, कुल का वंश कैसे बढ़ाएगी, यह तो पराई है और दूसरों का घर ही सजायेगी यदि इसके स्थान पर बेटा होता तो कुल का वंश बढ़ता और घर में खुशियों का अवसर लाता, इस प्रकार की कई बातें बेटियों के बारे में की जाती हैं। बेटा यदि घर की शान है तो बेटियां घर की रौनक जिस घर में दोनों होते हैं दोनों को समानता मिलती है वह घर स्वर्ग बन जाता है। सुख-दुःख में काम केवल बेटी आती है बेटा तो संबल बन जाता है। यदि बेटी घर में सारा काम करे बेटा केवल हुकुम चलाता है। वर्तमान समय में जिस घर में बेटी हो जाये वहां सन्नाटा छा जाता है और बेटा होने पर खुशी होती है। शहनाई बजती है कोई मेहमान नहीं छूटता सबको दावत पर बुलाते हैं। आखिर लोग ये नहीं समझते कि हर जुल्म सहन करने के बावजूद भी बेटियां कुल की शान बढ़ाती हैं। बेटी से ही तो परिवार चलता है और रिश्ते जुड़ते हैं। हीन भावना रखने वाले जो लोग बेटी को मरवाते हैं वही लोग पत्नी पर अत्याचार करके माँ बाप को धमकाते हैं स्वर्ग नहीं वह घर श्मशान बन जाता है। जहाँ जन्म से पहले ही कन्या की भ्रूण हत्या कर दी जाती है बेटियों को संरक्षण देकर सरकार हमें समझाती है कि आरक्षण ज्यादा से ज्यादा मात्रा में देकर उन्हें अपने पैरों पर खड़े होना चाहिए। लड़की दुनिया की जहान होती है। अनगिनत रिश्तों की माला होती है और हर घर की शान होती हैं जब लड़की की शादी होती है तो वह खुश जरूर होती है लेकिन वह यह नहीं जानती कि उसकी शादी नहीं बरबादी हो रही है।

शादी के नाम पर सौदा हो रहा है क्योंकि शादी में लोग लड़की से ज्यादा दहेज की मांग करते हैं तथा लड़की के परिवार वालों का शोषण करते हैं। लड़कियों को इन सब अत्याचारों से बचाना होगा, लड़की को

पढ़ाना होगा। वर्तमान में लड़कियों को कॉलेज कराने हेतु नजदीकी विश्वविद्यालयों में भेज दिया जाता है जबकि लड़कों को बड़े शहरों के उच्चतम प्रशिक्षण संस्थानों या विश्वविद्यालयों में भेजा जाता है। अगर यही प्राथमिकता लड़कियों को दी जाए तो शायद वे प्रशिक्षित हो जाती लड़कों से ज्यादा अच्छा साबित होकर दिखाती हैं। लोग बेटियों की शक्ति को नहीं जानते आखिर वह भी दो परिवारों को साथ-साथ संभालती है। सामाजिक स्तर में भी लोग बातें बनाते हैं परन्तु वे ये नहीं जानते कि आखिर लड़कियाँ भी लड़कों की तरह मुट्ठी बांधकर पैदा होती है, दोनों एक जैसी शैतानियां करते हैं फिर भी क्यों उन्हें लड़की का दर्जा दिया जाता है। समाज के प्रति बेटियों का बलिदान अमर है और रहेगा उनकी बराबरी समाज में कोई नहीं कर सकता। आखिर इतने जुल्म सहन करने के बाद भी लड़कियां विनम्रशाली, प्रतिभाशाली और संघर्षशाली होती हैं।

बेटी बनकर आई हूँ माँ बाप के जीवन में बसेरा होगा मेरा किसी और के आँगन में
क्यों ये रीति ईश्वर ने बनाई होगी आज नही तो कल पराई होगी
देकर जन्म पाल-पोसकर जिन हाथों से बड़ा किया और वक्त आये तो उन्हीं हाथों ने हमें विदा किया
टूटकर बिखर जाती है हमारी जिन्दगी वही पर फिर भी उस बंधन से प्यार मिले ये जरूरी नही
रिश्ता हमारा इतना अजीब होता है क्या बस यही बेटियों का नसीब होता है।

जीवन बदलने वाली बातें

सुश्री वी. रूक्मणी
सहायक पर्यवेक्षक

* भावनाएँ आगंतुको की तरह हैं, ये आती-जाती रहती है।
* जो करना है अभी करें, कभी-कभी “बाद में” “कभी-नहीं” हो जाता है।
* कुछ भी स्थायी नहीं है, अपने आप पर बहुत अधिक दबाव न डाले, क्योंकि स्थिति चाहे कितनी भी खराब क्यों न हो, वह बदल जाएगी।
* आप नकारात्मक लोगों को जितना कम जबाब देंगें, आप उतने ही अधिक शांतिपूर्ण बनेंगे।
* आंके नहीं, आप खुश रहेंगे, क्षमा करें, आप ज्यादा खुश रहेंगे
  सभी को प्यार दें, आप सबसे ज्यादा खुश रहेंगें
* जब आप गुस्से में हो, जबाब न दें, जब आप खुश हो, वादा न करें, जब आप उदास हों, निर्णय न करें।
* लोगों या स्थिति से परेशान न हों, आपकी प्रतिक्रिया के बिना दोनों शक्तिहीन हैं।
* अच्छी बातें सोचें, अच्छी बाते कहें, लोगों के लिए अच्छा करें, सबकुछ वापस आ जाएगा।
* मोह कष्ट का कारण है।
* बोलने के पहले खुद से पुछें “ क्या यह आवश्यक है? ”

गौर से सुना जाए

श्री संजीव गिरी
डीईओ

जमीं से जब भी आसमान तक दुआ जाए
मेरे सरकार उस पे मशवरा किया जाए
मौत की भीख मांगते हुए इन शायरों को
दीदार ए यार से बर्खास्त कर दिया जाए

हम ऐसे आशिकों को रास्तों से क्या मतलब
उधर ही चल पड़ेंगे जिस तरफ हवा जाए
कोई तो आए इन आंखों की दराजें खोले
कोई चुपके से मेरे अश्कों को बहा जाए

आपके बाद मेरी एक ही तो ख्वाहिश है
आप के बाद मुझे गौर से सुना जाए
मैं चाहता ही नहीं खुद को किसी के दिल में
मैं चाहता ही नहीं कोई यहां आ जाए

दूर बढ़ती ही जा रही है मंजिलें बिंदास
आओ टूटे हुए ख्वाबों को ही छुआ जाए।

लाडली बिटिया

श्री अविनाश कुंदन
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

झूले में सजी, नन्ही एक परी,
घर में आई जैसे चाँदनी झरी।
आँखों में सपने, दिल में प्यार,
हमारी लाड़ली बिटिया, जीवन का उपहार।

छोटे-छोटे हाथों से थामा उसने आस,
उसकी हंसी में छिपा है पूरा आकाश।
नृत्य करती है जीवन के रंगों में,
हमारी लाड़ली बिटिया, खुशियों के संगों में।

साहस की वो मिसाल है, उम्मीदों की किरण,
उसकी हर बात में बसी है सजीव उमंग।
हर कदम पर वो बढ़ती है आगे,
हमारी लाड़ली बिटिया, सदा रहे भाग्यविधाता।

उसकी मुस्कान में बसा है कल,
उसके साहस में छिपा है हर पल।
सूरज है वो, चाँदनी की तरह,
हमारी लाड़ली बिटिया, चमकेगी सदा।

ना कोई बंधन उसे रोक सके, ना कोई तूफान डिगा सके,
सोने के पंखों से उड़ान भरेगी,
हमारी लाड़ली बिटिया, नई राहें चुनेगी।

मंजिल दूर नहीं

श्री अविनाश कुंदन,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

सपनों की उड़ान हो आसमान तक,
हिम्मत हो रह मुश्किल को पार करने की,
मन में हो दृढ़ संकल्प अडिग,
सपनों को सच करने की।

जीवन की राह में हों चाहे कांटे,
हर दर्द को सहने का दम रखते हैं,
हार से ना डर, चल तू आगे,
तेरे अंदर अनंत शक्ति है।

अंधेरी रात भी उजाले में बदलेगी,
सूरज की पहली किरण जो मुक्कुराएगी,
हर कदम पर सफलता तेरी राह देखेगी,
तेरे भीतर एक नए सवेरा जगाएगी।

चल उठ, अब थाम ले अपनी कमान,
खुद पर रख विश्वास, मंजिल दूर नहीं,
जीत का जश्न तेरे कदम चूमेगा,
सपनों की दुनिया अब दूर नहीं।

मुझे संभालना

श्रीमती आर. श्रीविद्या
व.लेप.अ

हे भगवान, प्रार्थना है !
जब भी मैं अपने कर्तव्य को पूरा ना कर पाऊँ
मुझे संभालना !
रोज रोज की जिन्दगी में कभी थक कर गिर ना जाऊँ
मुझे संभालना !
क्रोध,लोभ,आलस्य के जीवन में फस ना जाऊँ
मुझे संभालना !
अपने बुरे वक्त की समस्याओं से अटक ना जाऊँ
मुझे संभालना !
दूसरों पर जलन द्वेष कभी ना कर जाऊँ
मुझे संभालना !
सेवा मदद करने से कभी इनकार ना कर जाऊँ
मुझे संभालना !
अपने जीवन की समस्या में उलझ कर प्रयत्न करने में हिचक ना जाऊँ
मुझे संभालना !

विचार कीजिए

श्रीमती आर. श्रीविद्या
व.लेप.अ

मनुष्य कर्म से महान होता है जन्म से नहीं

सादगी से बढ़कर कोई श्रृंगार नहीं होता

और विनम्रता से बढ़कर कोई व्यवहार नहीं होता

पानी की तरह बनो जो अपना रास्ता खुद बनाता है

आपकी सफलता आपकी सोच पर निर्भर करती है

कभी भी अपने आपको कमजोर मत समझो

कोशिश कामयाबी की पहली सीढी है

माना कि औरों के मुकाबले कुछ ज्यादा पाया नहीं मैंने

पर खुद गिरता संभालता रहा किसी को गिराया नहीं मैंने

जीवन में दर्द मिलना तो स्वाभाविक है लेकिन दुखी होना या ना होना आपके हाथ में है

उम्मीद रब से रखो सब से नहीं

शांत रहना सीखिए आपका गुस्सा किसी और की जीत है

सिर्फ अपनी नहीं दूसरों की गलतियों से भी सीखो

क्योंकि लक्ष्य बड़ा है और समय कम है

खुद की तरक्की में इतना वक्त लगा दो कि किसी दूसरे की बुराई करने का समय ना मिले

खुश रहने का मतलब ये नहीं है कि सब कुछ ठीक है, इसका मतलब ये है कि आपने अपने दुखों से उबर कर जीना सीख लिया है ।

दफ्तर का समय

श्री देवेन्द्र कुमार
स.लेप.अ.

सुबह हुई काम पर जाने का समय आया,
घड़ी ने कहा नमस्ते,
चाय की चुस्की के साथ
शुरू हुआ दिन की व्यस्तता के रस्ते।

कागजों की फाइलें में गोते लगाए,
टक टकी लगाए देखें कंप्यूटर की स्क्रीन,
धड़कते दिल के साथ, काम में लगे सब,
बिना किसी छेड़छाड़ के होके एक दम मीन।

लगता है जैसे समय के मेले में आकर हर कोई खो गया,
काम के जंगल में कहीं सब अपना रास्ता भटक गया।
रिपोर्ट्स की लंबी लिस्ट, मीटिंग्स की धुन,
सपनों की उड़ान में, ये समय नहीं सकता रुक।

हर घंटे की बेल, हर मिनट की चाल,
समय की इस दौड़ में सब खोते हैं अपने सवाल।

फाइलों की धूल, कलम की स्याही की खनक,
दफ्तर का समय, एक अजीब सा हंगामा,
कभी हँसी, कभी रुदन की झंकार।

शाम होते ही जैसे राहत की सास,
दफ्तर के समय की ये यात्रा,
ममता की मूरत में छिपी खास।

काम की इस दुनिया से कुछ पल की मुक्ति,
दफ्तर का समय भी, हर रोज लाता है नई राहत की संजीवनी।

फिर कल सुबह जल्दी, घड़ी में बजी घंटी,
दफ्तर का समय शुरू होगा, एक नए दिन की खुमारी।
काम के इस सफर में, हर दिन एक नया अध्याय,
दफ्तर का समय, जीवन का हिस्सा, सदा रहेगा साथ, न कोई फरियाद।

मानवता की राह

श्रीमती. वी. राधा
सहायक पर्यवेक्षक

उदार और कृपाशील बनो,
दया और सहानुभूति दिखाओ।
मानव का मूरत बनो,
सच्चाई का मार्ग अपनाओ।

बेघरों का साथ दो,
बीमारों की देखभाल करो।
भूखे को अन्न दो,
सच्चे दिल से सहायता करो।

निरक्षरों को शिक्षा दो,
बेटियों की सुरक्षा रखो।
भ्रष्टाचार को जड़ से मिटाओ,
समाज को समर्थ बनाओ।

वीरता और देशभक्ति से भरो,
प्रेरणा और मिसाल बनो।
आगामी पीढ़ी को सशक्त बनाओ,
सपनो को पंख लगाकर उड़ाओ।

मानवता का दीप जलाओ,
इंसानियत का धर्म निभाओ।
हर दिल में प्रेम बसाओ,
मानवता का परचम लहराओ।

पहेलियाँ

श्रीमती. वी. राधा
सहायक पर्यवेक्षक

1. काले वन की रानी है,
   लाल पानी पीती है।

2. काला है पर कौआ नहीं,
   लम्बा है पर साँप नहीं,
   तेल चढ़ता है पर हनुमान नहीं,
   फूल चढ़ता है पर भगवान नहीं।

3. वह कौन सी चीज़ है,
   जो फ्रिज़ में रखने के
   बाद भी गरम रहती है?

4. ऐसी कौन सी चीज़ है
   जिसे साल में एक बार खरीदतें है, पूरा साल इस्तेमाल
   करते हैं और साल के अंत में फैंक देते हैं?

5. ऊपर से नीचे बहता हूँ,
   हर बर्तन को अपनाता हूँ,
   देखो मुझको गिरने न देना वरना,
   कठिन हो जाएगा भरना।

6. कमर बाँध कोने में पड़ी,
   बड़ी सबेरे अब है खड़ी।

उत्तरः 1.खटमल 2.चोटी 3.गरम मसाला 4.कैलेंडर 5.द्रव्य 6.झाड़ू

दोस्ती

श्रीमती मंगलांबिगै
स.लेप.अ.

दोस्ती, बादलों जैसे बिखरनेवाली नहीं है,

माँ की ममता के आँचल जैसे गर्माहट देगा ।

प्रेरणा देने वाले दोस्त मिले तो हमारी

सारी वेदनाएं भी साधनाओं में बदल सकती है।

दोस्तों को पाने में

बस एक मुस्कान ही काफी है।

इस धरती में, ढँह जाने तक दोस्ती

भगवान का वरदान है।

यह खूबसूरत वरदान जब तक है

इस धरती में कोई भी अनाथ नहीं है ।

"सीख अपनों की"

सुश्री रजनी कुमारी
स.लेप.अ.

वे कहते हैं

अरे ऐसे दाँत क्यों दिखाती हो?

लड़कियों की तरह हँसा करो ,

थोड़ा सलीके से चला करो,

मर्यादित बोला करो ,

और संस्कारित जिया करो |

और सुनो

नज़रे झुकाकर नमस्कार करो,

कभी अज़नबी से ना बात करो,

अपने केशों को बाँधकर रखो ,

कभी दरवाज़े पर ना किसी की राह तको |

कभी ऊंची आवाज़ में ना किसी से बात करना,

इस निष्ठुर दुनिया से थोड़ा डरना |

अरे, यह चुन्नी नीचे ख़िसक रही , इसमें पिन क्यों नहीं लगाती हो?

ये कमीज की बाजुएँ इतनी ऊपर कैसे, यह शरीर किसको दिखाती हो ?

अगर ये बेढंग तरीके लेकर ससुराल जाओगी,

तो वहां हमारी क्या इज़्ज़त बढ़ाओगी ?

भूलना मत,

तुम इस घर की मर्यादा और ससुराल का मान हो ,

तुम सिर्फ एक नारी नहीं पूरी संस्कृति का सम्मान हो |

तुम में जो सामर्थ्य है, वो किसी पुरुष में नहीं,

भला माँ बनने से उत्कृष्ट है कोई कर्म कहीं ?

तुम्हारे जीवन का मूल्य केवल हम ही समझते हैं,

इसीलिए हीरे की तरह तुम्हे तिज़ोरी में रखते हैं |

केवल तुम ही सृष्टि के संचार का आधार हो |

बस तुम खुद कभी यह ना सोचना की अपने जीवन को एक भिन्न सार दो |

स्त्री, पुरुष और समाज

सुश्री गीतांजली शर्मा
लेखापरीक्षक

सृष्टि का आरम्भ था, विश्राम का क्षण था
आनंद की लहरों में मग्न विधाता का मन था
निष्काम स्थिर हृदय में, कामना प्रस्फुटित हुई
और विधाता की सर्वश्रेष्ठ कृति उत्पन्न हुई।।
रचना के दो भाग थे, स्त्री पुरुष समान थे
विशेषताएँ भिन्न, किंतु ईश्वर का भाग थे
जहाँ रचा पुरुष के परिश्रम से, महत्वाकांक्षा के बल से
वहाँ रची स्त्री सरल सागर से, प्रेम दया के आंचल से।।
समान सम्मान व अधिकार था, प्रकृति में न भेदभाव था
सृष्टीक्रम में समाज सभ्यता का विकास अविराम था
विकास क्रम आगे बढ़ा, प्रकृति का शोषण हुआ
अधिक अतिक्रमण की चाह में, संसाधनों का अधिशोषण हुआ।।
धनमान साम्राज्य की होड़ थी, समाज गति मूढ़तावश उस ओर थी
स्त्री की महत्वकांक्षाए न अपार थी, नर की संघर्ष संगिनी रूप में साथ थी।
सुख उपभोग ही एक लक्ष्य था, वृध बाल अक्षम असहाय था
स्वार्थ अंध ना किसी को ध्यान था, तब स्त्री का ही स्वेच्छा त्याग था।।
प्रेम दया भरण पोषण स्वभाव है, स्त्री को त्याग सहर्ष स्वीकार है।
अधिकार, निर्णय, भोग पुरूष के, स्त्री के आंचल बस दायित्व का भार है
श्रम विभाजन की नींव रखी गई, नूतन रीति शुरू हुई

पुरूष कार्य पुरस्कृत व प्रतिष्ठित हुए, शेष स्त्री धर्म हुए।।

समाज के मूल्यांकन में खोट है, स्त्री श्रम का क्या मोल है?

दायित्व निर्वाह तो स्त्री धर्म है, कभी पत्नी तो कभी ममत्व है।

उसमें अपना न कोई रंग है।

सिमट गई स्त्री की पहचान , संसार में उसका निशान

परिवार में उसका स्थान, समाज में उसका स्वाभिमान

फिर स्वर भी धीमा होने लगा, स्त्रीभाग्य पुरूष लिखने लगा

अपना न कोई रंग रहा, अभिलाष पंख अभिशप्त होने लगा

तुम पुत्री और बस माँ रहो पुरूष समकक्ष नहीं अधीनस्थ रहो

तथाकथित परम्पराओं की ओर रहे, तुम भेदभाव सहती रहो।।

यहाँ स्त्री सहम गयी, पक्षपात हिंसा की शर्तें मान गयी

सब नीति नियम की गणित हुई और नर नभ नापने की स्वच्छंदता रखी गयी

अधिकार से लेकर परिधान तक, दर पर कदम से स्वपन उड़ान तक

नारी ही प्रतिबंधित हुई, मनोभावों से लेकर चलन चाल तक

जब कहीं अबला पीड़ित हुई तब दोष उसी पर मढ़ा गया

नर का तो स्वभाव है, दो टूक कह समाज आगे बढ़ गया।।

आँचल में दूध, अँखियों में पानी, क्या यही रहेगी स्त्री की कहानी?

क्या होंगे कभी त्याग ममता समर्पण सम्माने की भागी?

क्या बदलेगी भविष्य में कहानी?

मैं हूँ हिंदी

श्रीमती खुशबू कुमारी
लेखापरीक्षक

मैं हूँ हिंदी, भाषाओं की रानी,

चलो सुनाऊं, मैं अपनी कहानी,

मैं भारतीय संस्कृति की पहचान,

मैं हर भारतवासियों की शान....

14 सितंबर को शुरु हुई,

हिन्दी दिवस को मनाने की शुरुआत,

मैंने पिरोया भारत को एकता की माला में...

मन से दुर करुँ मैं भेदभाव की हर दीवार,

स्थानीय भाषाओं के साथ,

जगह बनाती और कभी कभी

मैं उन्हीं में अपना अंश पाती,

हाँ, मैं भारत माँ के माथे पर

एक चमकीली बिंदी हूँ,

मैं भाषाओं की रानी हिन्दी हूँ,

मैं भाषाओं की रानी हिन्दी हूँ.....

माँ का हाथ

श्री श्रीनिवास प्रभु
व.लेप.अ.

एक हज़ार हाथ से
उत्साहपूर्वक गले लगाया तब भी
और प्यार से हाथ मिलाया तब भी
माँ के हाथों के बराबर कभी नहीं हो सकती।

हाथ फैलाकर चलना सिखाया था
और पिता की ओर
इशारा कर के पहचान करवाया था
इन्हीं माँ के हाथों ने।
पढ़ाई के खर्चे में
कमी नहीं आना चाहिए
इसलिए अपनी सोने का कंगन को भी
कांच में बदल दिया
इन्हीं माँ के हाथों ने।

जीवन में एक नेता के रूप में
सिर ऊँचा करके और
छाती सीधी कर के चलने के लिए
मुझमें आत्मविश्वास भर दिया
इन्हीं माँ के हाथों ने।

बच्चे के रूप में थामने के बज़ाय
उनके हाथों से प्रतिदान कर पाएंगे।

पहेलियाँ

श्रीमती आर. श्रीविद्या
व.लेप.अ

1. ऐसी कौन सी चीज है,
   जिसे आगे से तो भगवान ने बनाया है और पीछे से इंसान ने ?
2. जन्म के बाद आता है, मरने के बाद जाता है,
   क्रोध से रगड़ा जाता है, भोजन खूब चबाता है ।
3. ऐसी कौन सी मिठाई है जिसमे फूल और फल दोनों का नाम आता है ।
4. कला घोडा, सफेद सवारी, एक के बाद एक की बारी।
5. दो अक्षर का मेरा नाम
   आता हूँ खाने के काम
   उल्टा लिखकर नाच दिखाऊँ,
   फिर क्यूँ अपना नाम छिपाऊँ ।
6. नाक पर चढ़कर पकड़े कान, बताओ कौन सा शैतान ।
7. एक लाठी कि सुनो कहानी, भरा इसमें मीठा पानी।
8. मैं कटी तो तू क्यूँ रोई ।
9. बोल नहीं पाती हूँ मैं और सुन नहीं पाती
   बिना आँखों के मैं हूँ अंधी, पर सबको राह दिखाती।
10. करती नहीं यात्रा दो गज
    फिर भी दिन भर चलती है,
    रसवंती है, नाजुक भी,लेकिन गुफा मे रहती है।
11. एक हाथ है लकड़ी की डंडी, बनी हुए है इसमें आठ घर।
    ज्यों ज्यों हवा जाए उस भवन में, त्यों त्यों निकले है मीठे स्वर।
12. ना ही मैं खाता हूँ ना ही मैं पीता हूँ
    फिर भी मैं सबके घरों की रखवाली करता हूँ ।

उत्तर: 1 बैलगाड़ी, 2 दांत, 3. गुलाब जामुन, 4 तवा और रोटी, 5 चना,6 चश्मा, 7 गन्ना, 8 प्याज, 9 पुस्तक, 10 जीभ, 11. बाँसुरी , 12 ताला

जिन्दगी जी के तो देखो

श्री विजय कुमार
स.लेप.अ.

किसी अजनबी से बात करके तो देखो,

अपनी झिझक से आगे बढ़कर तो देखो।

किसी अन्जान को मुस्कुराहट देके तो देखो,

कुछ रूठों को चाहत देके तो देखो

रोते आए थे पर रोते जाऐंगे ऐसा जरूरी तो नहीं है।

ये दुनिया इतनी बुरी भी नहीं है । ।

कुछ पुराने पन्नों को हिला के तो देखो,

अचानक उनको फोन मिलाके तो देखो

कुछ ज़ख्म ऐसे साफ करके तो देखो

उनको और खुद को माफ करके तो देखो।

रास्ते अलग हैं अब, पर दिलों में दूरी नहीं है

ये दुनिया इतनी बुरी भी नहीं है।

दोस्ती के हाथ बढा कर तो देखो

अपनों को प्यार जता के तो देखो

बिना कारण के खुशियाँ मनाकर तो देखो

खुद से ही गीत गुनगुना कर तो देखो

हर श्वास में जिन्दगी है, कोई मजबूरी तो नहीं है।

ये दुनिया इतनी बुरी भी नहीं है।

गृहपत्रिका कुरिंजि को वर्ष 2023-24 के लिए नराकास चेन्नई द्वारा प्रेरणा पुरस्कार

राजभाषा कर्मियों के लिए नराकास चेन्नई द्वारा आयोजित अंत्याक्षरी प्रतियोग्ता में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए इस कार्यालय के कनिष्ठ अनुवादक